सायर तरंगिणी

प्राचीन ढालो का संग्रह

संग्रहकर्त्री

प्रवर्तिनी महासतीजी

श्री सायरकुँवरजी महाराज

संपादक एवं प्रकाशक

जे. एम. कोठारी

अंडरसन पेट K. G. F.

प्रथमावृत्ति २००० | मूल्य लागतमात्र
सं २०१८ | १ रु. ५० न. पै.

जे. एम. कोठारी
अडरसन पेट K.G.F.

इस पुस्तक के लिये जिन पुस्तकों से सहायता ली गई हैं उनके संपादकों और लेखकों का सादर आभार मानते हैं।

—प्रकाशक

मुद्रकः—
बसंतीलाल नलवाया
जैनोदय प्रि. प्रेस, रतलाम.

इस पुस्तक के विषय में

हर पुस्तक की एक जीवनी होती है, भले ही वह छोटी ही क्यों न हो। इस पुस्तक की भी एक जीवनी है। स० २०१६ के रावर्टसनपेट के चातुर्मास में प्रवर्तिनी महासती श्री सायरकुंवरजी महाराज के मन में बहनों के लिये सामायिक आदि के समय पढने के लिये पुरानी ढालों का एक सग्रह प्रकाशित करवाने की बात आई। उपाध्याय मुनि श्री आनदऋषिजी महाराज, पंडित मुनि श्री कल्याणऋषिजी महाराज, पंडित मुनिश्री मतानऋषिजी महाराज महासती श्री हुलासकुंवरजी, पारसकुंवरजी, इन्दुकुंवरजी, शीतलकुंवरजी आदि साधु साध्वियों के सहयोग से इन ढालों का सग्रह किया गया। चूंकि ये ढालें बहुत पुरानी पुस्तकें और हस्तलिखित पृष्ठों पर थीं, इनको सुधार कर सपादित करना जरूरी था। महासतीजी श्री सायरकुंवरजी महाराज ने जब मुझ से इन ढालों को सुधार कर सपादित करने के लिये कहा तो मैं कुछ घबरा गया। आज तक किसी भी प्रकार का संपादन कार्य मैंने नहीं किया था। न कभी मुझे कोई ढाल आदि पढने का मौका ही मिला था। अत यह कार्य मुझे भारी जान पडा, फिर भी महासतीजी के प्रोत्साहन और सहयोग से इस कार्य को मैंने हाथ में लिया। परन्तु दुर्भाग्यवश आधा सपादन होने के पूर्व ही मेरी तबियत बिगड गई और कार्य ठप रह गया। पुस्तक की छपाई के लिये जैनोदय प्रेस, रतलाम से बातचीत चल रही थी, और कुछ मैटर भेज भी दिया गया था। आगे के सपादन की समस्या पुस्तक के प्रकाशन में विलम्ब कर रही थी। इसी समय जैनोदय प्रेस के प्रबन्धक श्री बसतीलालजी नलवाया ने शेष संपादन अपने हाथ में सभाल कर जो सहयोग दिया वह भुलाया नही जा सकता। आभार

प्रदर्शन कर देनें मात्र से अपना फर्ज अदा हो जायगा ऐसा मैं नहीं मानता । समय पर पुस्तक को सपादित करके सुन्दर ढग मे छाप कर प्रकाश में लाने का श्रेय श्री बसतीलालजी नलवाया को ही है।

विना आर्थिक सहयोग के कोई भी पुस्तक छप नहीं सकती इसी प्रकार यह पुस्तक भी प्रकाश में नहीं आती यदि बार्टन कपनी बेंगलोर के अधिपति श्री मधुकर भाई मेहता और उनकी धर्म परायण पत्नी श्रीमती मंजुला बहन ने ५००) की सहायता न दी होती । साथ ही राबर्टसनपेट के श्री घीसुलालजी छाजेड ने ३०१) और आम्बुर के श्री जवंतराजजी सिंघी ने २५०) देकर इस पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग दिया । साथ ही अन्य दाताओं ने भी जो सहयोग दिया उसके लिये धन्यवाद देता हूं ।

इस पुस्तक के प्रकाशन में जो विलम्ब हुवा उसकी सारी जिम्मेदारी मुझ पर ही है न कि अन्य पर जिसके लिये क्षमा चाहता हूँ ।

अन्डरसनपेट
दीपावली २०१८

विनीत
जे एम. कोठारी

प्रवर्तिनी महासतीजी श्री सायरकुंवरजी महाराज का जीवन परिचय

जन्म:—स० १९५९ कातिक कृष्णा १३ बुधवार को जेतारण (राजस्थान) में।

पिता:—श्री कुंदनमलजी, डोडेचा बोहरा।

माता:—श्रीमती सिरेकुंवर बाई।

विवाह:—स० १९७२ मिगसर कृष्ण २ को अनतपुर (आंध्र) में।

दीक्षा:—स० १९८१ फाल्गुन कृष्णा १३ बुधवार को शास्त्रोद्धारक बाल ब्रह्मचारी पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म. द्वारा, तपस्विनी महासती श्री नन्दूजी महाराज के सानिध्य में बम्बई प्रान्त के मोरी ग्राम में।

चातुर्मासो की सूची:-

स० १९८२-१९८३	अहमदनगर		
स० १९८४	पूना	१९८५	चिचवड
१९८६	मालेगाव	१९८७	बोरकुंड
१९८८	बागली	१९८९	सिरूर
१९९०	हरताला	१९९१	चिंचवड
१९९२	बडगांव	१९९३	आवलेकारी
१९९४	पीपलगाव	१९९५	बोरकुंड

१९९६	मुंढी	१९९७	धूलिया
१९९८	होलनाया	१९९९	खेतिया
२०००	पूना	२००१	सिकन्द्राबाद
२००२	हैद्राबाद	२००३	यादगिरी
२००४	बेंगलोर	२००५	बेंगलोर
२००६	मद्रास साहुकार पेठ	२००७	मद्रास साहुकार पेठ
२००८	मैलापुर मद्रास	२००९	फरमकुंडा मद्रास
२०१०	साहुकार पेठ मद्रास	२०११	रावर्टसनपेठ
२०१२	बेंगलोर सिटी	२०१३	मैसूर
२०१४	ढलाकपली बेंगलोर	२०१५	बेंगलोर सिटी
२०१६	रावर्टसनपेठ	२०१७	वेलूर
२०१८	वानियम वाडी		

महासतीजी द्वारा दी गई दीक्षाएं

(१) स १९८३ माघ महीने में घोडनदी में सोहन कुँवरजी।
(२) स. १९८४ फागण महीने में पूना में, सुमति कुँवरजी।
(३) सं. १९९५ माघ महीने में धूलिया में पद्म कुँवरजी।
(४) सं. १९९६ बोरकुड में पारस कुँवरजी।
(५) सं. १९९७ बोदवड में इन्दुकुँवरजी।
(६) सं. १९९९ हिवडा में दर्शन कुँवरजी।
(७) सं. २०१३ मैसूर म शीतल कुँवरजी।

महासती श्री सायर कुँवरजी महाराज के उपदेशों द्वारा संस्थापित संस्थाओं का विवरण

(१) सं. १९८१ कडा (अहमदनगर) में विद्यालय।
(२) ,, १९९० हरताला-स्थानक।

(३) ,, १९९५ बोरकुड–स्थानक ।
(४) ,, १९९७ धूलिया–कन्या पाठशाला ।
(५) ,, ,, ,, अमोल जैन ज्ञानालय ।
(६) ,, २००४ यादगिरी स्थानक ।
(७) ,, २००५ बेंगलोर जैन हिन्दी स्कूल ।
(८) ,, २००७ मद्रास की संस्थाये

(१) अे. जी जैन कालेज ।
(२) जैन कन्या हाई स्कूल ।
(३) मेटरनिटी हास्पीटल ।
(४) विविध जगहो में दवाखाने

(९) स २००९ अचरापाकम हाई स्कूल; तिडीवनम लाइब्रेरी
(१०) ,, २०११ वेलूर स्थानक
(११) ,, २०१२ रावर्टसनपेठ सुमति जैन हाई स्कूल
(१२) ,, २०१३ मैसूर स्थानक
(१३) ,, २०१५ बेंगलोर में

(१) जैन बोडिंग
(२) सुमति जैन छात्रालय

(१४) ,, २०१६ राबर्टनपेट कन्या विद्यालय
(१५) ,, २०१६ वानियम वाडी स्थानक
(१६) ,, ,, गुडियातम स्थानक

इसके अलावा दक्षिण के मैसूर और मद्रास प्रान्तो में सब जगह महासतीजी के सदुपदेशों द्वारा तपस्या धर्म ध्यान आदि का बाहुल्य रहा ।

प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशन के लिये प्राप्त आर्थिक सहायता के दानदाताओं की नामावली

५०१) श्री	मंजुला बहन धर्मपत्नी	मधुकर भाई मेहता		बेंगलोर
२०१) "	लक्ष्मीबाई एवं हुलासीबाई धर्मपत्नी	घीसुलालजी छाजेड़,		रावर्टसनपेट
२५०) "	झकार बाई ध. प.	जवंतराजजी सिंघी		आंबुर
१५०) "	मैनाबाई "	जवतराजजी बोहरा		रावर्टसनपेट
१००) "	धापीबाई "	विरदीचन्दजी		बेंगलोर
१००) "	कोयलबाई "	दलोचन्दजी बोहरा		रायचूर
५१) "	मिश्रीबाई "	मिश्रीलालजी कात्रेला		बेंगलोर
५१) "	धापीबाई "	मिश्रीलालजी डागा		रावर्टसनपेट
५१) "	सायरबाई "	अमोलकचदजी चिनायकिया		मद्रास
५०) "	अमरावबाई "	जुगराजजी गादिया		बेंगलोर
४१) "	मैनाबाई "	मूलचदजी मूथा		बेंगलोर
३१) "	मेहताबबाई "	अमोलकचदजी सिसोदिया		वानियम वाड़ी
३०) "	भँवरीबाई "	संपतराजजी बोहरा		रावर्टसन पेट
२९) "	सुगालीबाई "	सूरजमलजी धारीवाल		"
२७) "	माडीबाई "	मगराजजी तालेडा		वानियमवाड़ी
२५) "	सोहनीबाई "	पारसमलजी सुराणा		मैसूर
२५) "	सज्जनबाई "	लालचंदजी बोहरा		रावर्टसन पेट
२५) "	सिरियाबाई "	मागीलालजी		अहमदनगर

७५)	श्री सायरवाई ध प	जवानमलजी चोपड़ा	रावर्टसनपेट
२५)	" मिश्रीवाई "	मिश्रीलालजी गुलेछा	मद्रास
७५)	" पिस्तावाई "	टेकचदजी	"
२५)	" पानीवाई "	वक्तावरमलजी साखला	बेंगलोर
२५)	" कमलावाई "	लालचदजी पिपाड़ा	नीलगिरी
२५)	" अमरावबाई "	मोतीलालजी सुराणा	कुभकोनम
२५)	" पतासीवाई "	मुल्तानमलजी धारीवाल	रावर्टसन पेट
२५)	" चम्पावाई "	घीसुलालजी सेठिया	विल्लीपुरम
२५)	" रूपीवाई "	केसरीमलजी सिघी	अडरसनपेट
२५)	" भूरीवाई "	छोगमलजी सुराणा	वानियमवाडी
२५)	" कौशल्यावाई "	नेमीचदजी सुराणा	"
२५)	" कुसुवीवाई "	सौभाग्यमलजी मुथा	पारवाला
७५)	" दुलासीवाई "	शकरलालजी	पेरनाम्बेट
२५)	" गुणवन्तीवाई "	सोहनलालजी	"
७१)	" उगमवाई "	धवरचदजी मुथा	रावर्टसनपेट
२१)	" वादलवाई "	कन्हैयालालजी बोहरा	"
२१)	" सिणगारबाई "	माणकचदजी छाजेड	"
२१)	" गुलाबबाई "	भंवरलालजी कोचेटा	"
२१)	" सुगनीवाई "	रतनचदजी सुराणा	वानियमवाडी
२१)	" माणकवाई "	शातिलालजी सुराणा	"
२१)	" उमरावबाई "	मिश्रीलालजी पोरवाल	"
२१)	" नोजीवाई "	जवरीलालजी सिसोदिया	"
१५)	" कमलावाई "	भवरलालजी छाजेड	रावर्टसनपेट
१५)	" मैनाबाई "	चैनरामजी मुथा	"
१५)	" मोहनीवाई "	भंवरलालजी तातेड	"
१५)	" रभाबाई "	सूरजमलजी बोहरा	"
१५)	" अमरावबाई "	चपालालजी छल्लाणी	"

११)	श्री हगामीबाई	ध प	रेखचन्दजी लोढा	रावर्टसनपेट
११)	" सीताबाई	"	जवतराजजी घारीवाल	"
११)	" अमरावबाई	"	हरकचन्दजी बोहरा	"
११)	" रतनबाई	"	सुगनचन्दजी लुणावत	"
११)	" देवीबाई	"	समीरमलजी सिसोदिया	बेंगलोर
११)	" दाकुबाई	"	मूलचन्दजी देसरला	"
११)	" सायरबाई	"	जवतराजजी मुणोत	रावर्टसनपेठ
११)	" सायरबाई	"	जवतराजजी बोहरा	"
११)	" गजराबाई	"	रतनचन्दजी बोहरा	"
११)	" फाऊबाई	"	केवलचन्दजी बोहरा	बेंगलोर
११)	" मागीबाई	"	छगनमलजी कोठारी	तिरुनामलै
११)	" मैनाबाई	"	जबरचन्दजी छाजेड	रावर्टसनपेठ
११)	" जतनीबाई	"	घेवरचन्दजी लुणावत	"
११)	" कौशल्याबाई	"	मोहनलालजी छल्लाणी	"
११)	" गेरीबाई	"	फूलचन्दजी बाठिया	रावर्टसनपेट
११)	" उमरावबाई	"	मोहनलालजी पिलगर	गुडियात्तम
११)	" सेणीबाई	"	रगलालजी बोहरा	रावर्टसनपेठ
११)	" लक्ष्मीबाई	"	राजमलजी बोहरा	"
११)	" सोहनीबाई	"	दीपचन्दजी दुगड	"
११)	" चुकीबाई	"	कन्हैयालालजी डागा	"
११)	" मल्लीबाई	"	सुखराजजी बोहरा	मद्रास
११)	" घीसीबाई	"	वस्तीमलजी बाठिया	"
११)	" सिरियाबाई	"	सुगनचन्दजी घारीवाल	रावर्टसनपेठ
११)	" उगमबाई	"	नेमिचन्दजी घारीवाल	"
११)	" सिरेकवरबाई	"	केवलचन्दजी सुराणा	तिरमसी
११)	" सायरबाई			बेंगलोर

११) श्री दाकीबाई ध प कन्हैयालालजी छल्लाणी रावर्टसनपेट
११) " सरदारबाई " हीराचन्दजी बोहरा "
११) " सरदारबाई " पन्नालालजी बोहरा "
११) " सज्जनबाई ,, चपालालजी बोहरा "
११) ,, अणचीबाई ,, हेमराजजी कटारिया "
११) ,, जियाबाई , सिवराजजी बोहरा अडरमनपेट
११ ,, भीखीबाई , पारसमलजी नाहटा "
११) ,, सोहनीबाई ,, प्रेमराजजी साखला "
११) , जतनीबाई ,, पन्नालालजी छल्लाणी रावर्टसनपेट
११) ,, सुन्दरबाई ,, पुखराजजी बाठिया "
११) ,, शांतिबाई सुपुत्री सुरजमलजी धारीवाल "
११) ,, पानीबाई ध प भीखमचन्दजी नाहर "
११) ,, घेवरबाई ,, अनोपचदजी डरला अडरसनपेट
११) , सीताबाई ,, किशनलालजी छल्लाणी रावर्टसनपेट
११) ,, इन्द्राबाई ,, कनकमलजी बोहरा "
११) ,, कस्तूरबाई ,, पुखराजजी छाजेड बेंगलोर
११) ,, पतासीबाई ,, घेवरचन्दजी सकलेचा तिंडीवानम
११) ,, भवरीबाई ,, मोहनलालजी भटेवडा वेलूर
११) ,, शाताबाई ,, फूलचन्दजी सुराणा वानियमवाडी
११) ,, सुवाबाई ,, मिश्रीलालजी सोलकी "
११) ,, जतनीबाई , पारसमलजी सुराणा "
११) ,, कमलाबाई सुपुत्री मगराजजी तालेडा "
११) ,, पिस्ताबाई सुपुत्री जवरीलालजी सिसोदिया "
२८) " १०) रुपयों से कम रकम प्रदान करने वालों से प्राप्त ।

अनुक्रमणिका :—

१ भगवान श्री महावीर के श्लोक

अरिहन्त सिद्धां रे पांव नित लागूं, गुरु ज्ञानी पासे विद्याजी मांगूं। महावीर स्वामी रो कहस्यूं सीलोको, एक चित करने सुणजो सब लोको ॥१॥ मरीचि भव में तपस्या कर भारी, वाचा आदेसर हुंडी सिकारी। मारे सिरखो होसी छेलो अवतारी, इतनी सुण मन मे फूल्यो अपारी ॥२॥ मारो कुल मोटो अहंकारी, फाले दे कूदयो ऊंचा कुल हारी। कर्म निकाचित बॉन्या तिण वारी, तेनो फल केस्यूं सुणजो अगाडी ॥३॥ कालन्तर तिहां समकित पाई, गिणती मे लीना भव सताई। थानक वीसूंई पहले भव मांही, सेव्या तीर्थङ्कर गोत उपाई ॥४॥ दसमां स्वर्ग मां उपना जाई, वीसे सागर नी पूरण थिति पाई। सुर सुख विलसी चविया जिनराया, मान प्रभावे मांगण कुल आया ॥५॥ देवानंदारी कूंखे उपना,

मातोजी देख्या चवदे सपना । अवधि प्रभूजी इया को दीनो, निश्चे करीने सांसो मन कीनो ॥६॥ त्रिभुवन स्वामी तीरथ नाथो, ब्राह्मण कुल आया अचरज वातो । उपजे कदापि जनम न थावे, देव शक्ति सूं सारन करावे ॥७॥ हिरणगमेशी लेकर आयो, बदलो करी ने मातोजी पायो । क्षत्रिय कुल सिद्धारथ राजा, राणी त्रिशला रे कूंखे पधार्या ॥८॥ हाथ जोडी ने शीस नमायो सारो फेरो कर स्वर्ग सिधायो । देवानन्द मन आरत आवे, सुपना हमारा कुण ले जावे ॥६॥ माता त्रिसला रो भाग सवायो, बिन मांग्यो पुत्र सहज ही आयो । महल झरोखा मोत्यां री लाली, लटके लूमां ने सेजे सुंवाली ॥१०॥ पोढया त्रिसलादे ढलती सी रेणी, थोड़ी सी निद्रा जागे मृगनयनी । चवदेई सपना उत्तम देखे, जबके सी जागी हर्ष विषेसे ॥११॥ याद करीने हिरदा में धारे, देव गुरु ने धर्म चितारे । उठ सेजां थी धीमा पग ढाले, गज गति चाले जाणे मराले ॥१२॥ घणी उमाई पति पासे आई, पोढ्या जाणी ने पगाथे जाई । झीणा स्वरसुं राग सुणावे, नींद में सुता कन्त जगावे ॥१३॥ हाथ जोड़ी ने ऊभी निज मंदिर, पूछे महाराजा किम आई सुन्दर । बैठो सिंहासन विश्रामो खावो, खेद टाली ने कारज फरमावो ॥१४॥ आदर पामी निज आसन बैठी, विनय करी ने बोले मुख मीठी । अचरज कारी सपना में दीठा

सुणता स्वामीजी लागे अति मीठा ॥१५॥ बोले महा-
राजा विधिसेति भापो, सर्व सुणाओ शंका मत राखो।
भलकंतो गज अंबाडी माथे, दूजो वृषभ ने सिह साक्षाते
चोथे लक्षमीजी जाकजमाला, पांच वरण री पुष्पां री
माला। छटे उगंतो ससीहर दीवे, सहस किरण तणो सूरज
सोहे ॥१७॥ आठमे धजा आकासा लेखे, नवे सम्पूर्ण कलस
विपेसे। पद्म सरोवर कमल कर छायो, क्षीर समुद्र हिलोलो
खायो ॥१८॥ देव विमान देव विराजे, रतनांरी रास
तेरमी छाजे। निर्धूम अगनी चउदमे देखे, जलहरती
ज्वाला चउदिस लेखे ॥१६॥ इणविध स्वामीजी सुपना
में पाया, हरपी ने बोले सिद्धारथ राया, तीर्थंकर के
चक्रेसर जाणी, कोख मे आयो है उत्तम प्राणी ॥२०॥
तहत कही ने सीस चढावे, सीख लेई निज मंदिर जावे।
उगंते सूरज सिद्धारथ राया, मंजन करी ने सभा मे
आया ॥२१॥ आज्ञाकारी ने हुक्म दिरावे, आठ भद्रा-
सन आगे रचावे। पसवाडे एक पेच खिंचावे, नववो राणी
नो आसन बिछावे ॥२२॥ मर्यादा सेती महाराणी आवे,
श्रीफल सुपारी हाथां मे लावे। वेगा जावो ने पंडित ले
आवो, चवदे सपनां रो अर्थ करावो ॥२३॥ हुक्म पाई ने
नगरी में जावे, सपना पाठक ने तत्क्षण लावे। निरखी
हरखी ने राय वुलावे, आदर करीने आगे बैठावे। २४॥
अनुक्रमे सपना सर्व सुणावे, शास्त्री देखीने अर्थ करावे।

त्रिलोकी नाथो तिलक सरीखो, आय उपन्यो महाराणी कूंखो ॥२५॥ दोय कुल तारक सूरज समानो, अन धन लक्ष्मी सूं भरसी खजानो, भरत क्षेत्र मे उद्योत करसी, संजम लेई ने शिवरमणी वरसी ॥२६॥ सलाह करीने बोले छे जोसी, उत्तम सपना रो ये फल होसी। राजा राणी सुन आनंद पाया, दान देईने घरे पहुँचाया ॥२७॥ श्रीफल सुपारी पानां का बीड़ा, बांटे सभा में करता बहु क्रीड़ा। जीमण की वेला भोजन कीना, लोंग सुपारी मुखरण लीना ॥२८॥ नित नवला पहरे वस्त्र आभूषण, गर्भ प्रतिपाले टाले सब दूषण। पुन्य प्रभावे उपजे शुभ डोला, पूरे महाराजा करती रंग रोला। २९। ज्ञान प्रभावे गर्भ आलोचे, विनो करीने अङ्ग सकोचे। माता दुख पावे करती विचारो, हाले न चाले गर्भ हमारो ॥३०। राजा राणीजी भुरता बेहू, जीवे जठालग संजम नही लेऊं, बिल बिल करती आंसूडा नाखे, पग फुरकायो हष विशेशे। ३१। बांटे बधाई हुवो आनंदो, दिन दिन बाधे क्रम दूज नो चन्दो, चैत सुदी ने आधी सी रातो, तेरस ने जनम्या श्री जगनाथो ॥३२। छपन कुंवारी मंगल गावे, चौसठ इन्द्र मिल मेरू पर लावे। तीर्थ मेली ने पाणी मंगावे, भर भर कलसा ऊपर पधरावे ॥३३। इन्द्र सगलाई अनुकम्पा लावे, बालकवय प्रभूजी असाता पावे, तिण वेला ततखिण परचो दिखलावे, चटी

चाम्पी ने मेरु कम्पावे ॥३४॥ ज्ञान प्रजुञ्जी सुरपत विचारी, जाणी प्रभूजी शक्ति तुम्हारी। अनंत बली ने शासन धीरो, शक्र इन्द्र नाम दियो महावीरो ॥३५॥ उछव करीने निज मंदिर लावे, सुंपी माता ने शीश नमावे। देवी देव मिल देवलोक जावे, विच मे अठाई उच्छव करावे ॥३६। दिन उगे दासी दोडी ने आई, पुत्र जनम्यारी दीधी वधाई। सोना री झारी सुं माथो न्हवावे, दासीपणाने दूर करावे।३७। मुकट वरजी ने आभरण सारा, वरसे महाराजा कञ्चन धारा, पुत्र जनम रो हर्ष करावे, चन्द्रमा देखी आंचल खुलावे ॥३८॥ छठे दिन उगा सूरज पुजावे, दसमें दिन सूतक दूर करावे। भाई बेटा ने न्याति बुलावे, दसोटण करस्यां दुवो दरावे। ३९। चामण विचक्षण कन्दोई ल्यानो, विविध भाँतिरा भोजन रंधावो। कुटम्ब कवीलो शहर का सारा, जीमण बैठा न्यारा जी न्यारा। ४०। आदर करीने चौकी विछावै, सोना रूपा रा थाल दिरावै। पहली मिठाई पछे पकवानो, पुरसे सगलाने दे दे सनमानो ॥४१॥ लाडू पेडा ने घेवर ताजा, झीणा फीणा ने खांडरा खाजा, वरफी कलाकन्द मिश्री रो मावो, पछे दूजा ने पेली या खावो ॥४२॥ दईलाड़ा ने जलेबी फीनी, गहरी गलेफी खांडज चीणी। पेठा डोठा ने तुंगतियां दांणा, पुरसे मांडानी भरिया छे माणा ॥४३॥ गुंजा इमरती शक्कर

पेडा, कर कर मनवारां पुरसे छे गेरा, चन्द्रकला ने चूरमो चगचगतो, सगला सरावे जीमण जुगतो ॥४४॥ मालपुआ ने खीर बणावे, मिश्री ने मेवा मांय रलावे। सीरो साबूनी झर झरती लपसी, दूध राबडी पीवेला तपसी ।४५॥ लुची पूरी ने सोंट सुवाली, छाबा ले उबी पुरसन वाली। फीणा बटिया ने पतली सी पोली, पूरण पोली घृत झबोली ॥४६॥ दाल साल ने केसरिया भातो विणज बडियांरो जीमे सब सातो। सुतक तोली मीजी मकाणा, लोई तिल्ली ने खसखस का दाणा ॥४७॥ दाख बीजोरा खारक खजूर, काची गिरी ने केला अंगूर, किसमिस चारोली बादाम, पिस्ता नुकले पंचरंगी खावे सब हंसता। पूवा वड़ा ने कचोरी ताजी, पापड़ फलियां से सब कोई राजी। दाल सेवां ने मोगर मंगावे, भुज्या पकोड़ी सबने ही भावे ॥४९॥ चीणा चवला ने अम्बोल मेथी, और तरकारियां परोसे केती। केर काचरिया खीच्यां खारोड़ी, पापड़ की गोल्यां ने तिलवा राबोड़ी ॥५०॥ घोल बड़ा ने राईता ल्यावै, ज्यू २ मिठाई दूणी जिमावै। आवे अथाणो केरीजी पाको, मांगे सगलाई पुरसण तो थाको ॥५१॥ कढ़ी चावल ने पतली पैले, मीठा पर खाटी सब कोई लेवे। ओला पतासा मिश्री रा पाणी, झारी भरलावे गंधोदक छाणी ॥५२॥ जीमि चूटी ने चलूजी कीना, विविध प्रकारना मूळण लीना। बैन सुवा-

सण भुवाजी आवे, कुरता टोपी ने सांतिया लावे ॥५३॥ गावे मंगल वाजे वाजा, नाम दिरावे सिद्धारथ राजा। नाला री जागा प्रकट्यो, निधाना, गुण निष्पन्न नाम दियो वधमाना ॥५४॥ वस्त्र भूषण ने रुपिया रोको, देई विदाया सरव संतो को। पाँचे धाया मिल पाले नान-डियो, पोढे पालणिये गावे हालरियो ॥५५॥ छठे महिने खावो सिखावे, चोटी पटारा केश रखावे। हसे खेले ने गोडाल्यां चाले, थाड़ी करावे आँगल्याँ झाले ॥५६॥ कड़ा मोती ने चाँदल्यो छाजे, कण्ठी डोरा ने हार विराजे। कडिया कन्दोरी गुगरिया घमके, पाये झाजरिया चाले छे ठमके ॥५७॥ जांग्या टोपी ने सुतण सोवे, वेठ गाडोले सगलाई जोवे। ताती जलेबी मिश्री ने मेवा, दई माखण सु माँगे कलेवा ॥५८॥ आडो माँडी ने रूसनो लेवे, माता मनावे माँगे जो देवे। चक्री भँवरा ने ख्याल तमासा, देखी माताजी पूरे मन आसा ॥५९॥ लाड़ लडावे बैनड़ भुवा, आठे बरस रा झाझेरा हुवा। वेला शुभ देखी भणवा वैठावे, हर्से करीने जोसीजी आवे ॥६०॥ चाँदी री पाटी सोना रो वरतो, लिख लिख पहाड़ा मुख आगे धरतो, खोट जाणी ने कोप चढावे, खोसी पाटी ने सामा डरावे ॥६१॥ ॐकारनो अर्थ करावे, सुण ने जोसीड़ा अचरज पावे। या की बुद्धि रो पार न पावे, ऐसी तो विद्या हमने नहीं आवे ॥६२॥ थर थर धूजतो

उठी ने भाग्यो, पोथी लेईने मारग लाग्यो, जोग जाणी ने कीनी सगाई, पुत्र परणायो बहू घर आई ॥६३॥ दास दासी ने डायजो लाई, पंचेद्री ना भोग विलसे सादई। प्रिय दर्शन नामे बेटी एक जाई, परणी जमालि जोगे जमाई ॥६४॥ मात पिताजी बारे व्रत धारी, लीनो अण-सन दोषण सब टाली, काले करीने ऊंची गत पाई, स्वर्ग बारमा उपन्या जाई ॥६५॥ उठासु चवसी अनुक्रमें दोई, क्षेत्र विदेह में शिवगत होई। पछे प्रभुजी संजम लेवे, बड़ा भाईजी आज्ञा न देवे ॥६६॥ माता पिता रो पडियो विजोगो, तु कांई भाई लेवे छे जोगो। धीरज राखी ने ठेरो रे भय्या, वर्ण दोय लग निर्लेप रय्या ॥६७॥ लोकांतिक देवा तिण वेला आवे, हाथ जोड़ी ने अर्ज करावे। अवसर छे आयो संजम लीजे, भरत क्षेत्र मे उद्योत कीजे ॥६८॥ इंद्र आज्ञाकारी वेश्रमण आवे, भरीया भण्डारा दान दिरावे। सोला मासा रो सोनैयो कीजे, एक क्रोड आठ लाख दान दिन प्रति दीजे। इसड़ी क्रोडा रो छमछर दान ज दीनो, एकाएकी जिनवर संजम लीणो ॥६९॥ दीक्षा कल्याण उत्सव करावे, नर नारी पाछा नगरी मे जावे ॥७०॥ कुटम्ब सहू ने पूछज दीनी, देसे अनारज इच्छा जी कीनी। शस्त्र ले शक्रेन्द्र उभाछे आगे, कष्ट घणो छे उर में सागे ॥७१॥ हुई न होवे भगवन्त भाखे, कर्म दूजासु टूटे नही लाखे। लाड देश में पधारया

आया, जीत्या परीसा कर्म खपाया ॥७२॥ बारे समसर ने साडा षट मासो, छद्‌मस्थ रहा वर्ष तीस घर वासो तपस्या करीने केवल पायो, तीर्थ थापी ने शासन वर्तायो ॥७३॥ गौतम आदि ने चवदे हजारो, सहस छतीसे महासतियां लारो । एक लाख ने गुणसठ हजारो, श्रावक हुवा बारे व्रत धारो ॥७४॥ तीन लाख ने सहस अठारो, श्राविका हुई इतलो परिवारो । म्हाण कुंडलपुर प्रभुजी आवे, देव देवी मिल त्रिगडो रचावे ॥७५॥ सोनारा कोट ने रतनारा छाजा, गाजे अमर ने बाजे छै बाजा । आकासे देव दुंदभी वाजे, देखी पाखण्डी दूरा सु लाजे ॥७६॥ स्फटिक सिंहासन वीर बिराजे, चवर वीजे ने छत्रजी छाजे । रिखवदत्त ने देवाजी नन्दा, दरसण पामी ने हुवा आनंदा ॥७७॥ काया फूल छूटी दूधनी धारा, देखी ने पाया अचरज सारा । हाथे जोडी ने गौतम पूछे, बाई सु सगपण प्रभुजी सुं छे ॥७८॥ भगवंत भाखे मारी ए माता, समणे सुणी ने पाई सुख साता ऐसा पुत्र नो पड्यो विजोगो, अब तो दोनोंइ लेसां मे जोगो ॥७९॥ संजम लेई ने कर्म खपाया, केवल पामी ने मुगते सिधाया । ऐसा तो बेटा जनम्यां परमाणो, मात पिता ने मेल्या निर्वाणो ॥८०॥ गाँव नगर ने अनारज देसो, पावापुरी में चरमे चोमासो । राजा प्रजा ने देवीजी देवा, निस दिन सारे प्रभुजी री सेवा ॥८१॥

देस अठारा राजाजी आवे, चवदस पखीरा पोसाजी ठावै । बेठ विमान शक्रेन्द्र आवे, प्रदक्षिणा देई ने शीश नमावे ॥८२॥ इतनी प्रभुजी किरपा करावो, थोडी सी उमर और वधावो । भसम गिरह रो जोर हट जावे, दया धर्म रो उद्योत थावे ॥८३॥ हुई न होवे ये बात जी झूठी टूटी उमर के लागे नहीं बूंटी । होण पदारथ निश्चय होई, टाल सके नहीं सुरनर कोई ॥८४॥ कातीवद अमावस आधी सी रातो, मुगति पधार्या छे श्री जगनाथो । संघ चारो में हुओ छे सोगो, मोटा पुरषा रो पडियो विजोगो ॥८५॥ पछे झुरंता गोतमजी आया, मोहणी जीत्या केवल पाया । सुधर्मा स्वामी पाटे विराजे, तीरथ चारों में सिंह ज्यूं गाजे ॥८६॥ सात से साधु एक हजारो, चारसे ऊपर महासतियां लारो । करणी करीने कारण सारया, केवल पामी ने मुगते पधारया ॥८७॥ वर्ष चोसठ लग केवली रया, पाटोधर तीणुं मुगती में गया । वरत्यो केई वरते वरतणहारो, शासन चाल्यो बरस इकीस हजारो । ८८॥ केई कथा ने सुत्र में धारी, शिलोको कियो ओछी बुध मारी । अधिको ओछो ने अकसर हीनो, लीजो सुधारी पंडित प्रवीणो ॥८९॥ ज्ञानी भाख्यो सो तहत करीजे, झूठारो मिछामि दुकड़ दीजे । समत उगणीसे साठ रो सालो, श्रावण वद तेरस जैपुर वरसालो ॥९०॥ रतन मुनिजी री सम्प्रदाय छाजे, पूज विनेचन्दजी पाट

बिराजे। बे कर जोड़ी जड़ावजी वन्दे, महर राखीजे वीर जिनन्दे । ६१॥

इति श्री महावीरजी रो शिलोको सपूर्ण

भगवान श्री पारसनाथजी रो सिलोको

प्रणमूं परमात्म अविचल अवतारूं, अरिहन्त सिधा रा नाम उचारूं। समरूं आचार्य मोटा उपाध्याय साधु आत्मा रो कारज साध्या ।।१।। नगरी अलकापुर वाणारसी सोहे, देख्यां गणारा मनड़ाजी मोहे, देश देशां में काशी वड़ देशो, आकरा दण्ड नो नहीं लव-लेसो ।।२।। राजा महाराजा अश्वसेन राजा, सदा तो आगल बाजे नित बाजा, काशी राज रो केसूं परमाणो, देस सगला मे वरते छे आंणो ।।३।। मणि माणक मोती भरिया भंडारो, अष्ट सिद्धि नव निधि अपारो अतिघणूं सुन्दर ओपे ठकुराणी, साहु वामादे माता पटराणी ।।४।। जिणरी तो कूखे जगनाथ जायो, पारस कुंवर जग में नाम कहायो। तीन भवनरो नायक नाथो, मुगत रमणी में माली छे बातो ।।५।। चौसठ इन्द्रा रो पुजनीक देवो, निस दिन तो आगल सारे जी सेवो। दस भवांरो बेरी गेरी सवायो, कमठ सन्यासी तापस आयो ।।६।। चहुँ-दिस अगनी धुकंती ज्वाला, सिर पर तो सोहे सूरज

बडाजा । इसडी पचागन तपस्या तपंतो, माला रुद्राचनी जाप जपंतो ॥७॥ गंगा तट पर जी आसन कीनो, जोगी तप जप में अती गणो भीनो । सीस जटा ने मुगट संजुटी भांग धतूरा भखिया अतिबूंटी ॥८॥ आसन पद्मासन पूरण छायो, लेपी भसमी सुं धसमस कायो । पहरण पावडियां आगल पडिया, वज्र कछोटो कसियो छेकडीयां ॥९॥ चक्षु चलावे जलके छे डोला, सीग री सेली ने भभुत रा गोला । तीखो त्रिसूल अधिको विराजै, भालो चन्दणारी खोलज छाजे ॥१०॥ सोहे बावम्बर का खंवर सोहे, देख्या अवधुत ने गणो मन मोहे । अवधुत इसडो कोई नहीं आयो जस तपसी रो घणो सवायो ॥११॥ छोडी दुनियां सहु दरसण ने आवे, जल ज्युं तो जोगी ज्वाला में नावे । इसड़ी वातां अब आई दरबारो, कहे वामा सुण पारस कुमारो ॥१२॥ जहां जोगीसर जाप जपन्तो, दरसण री मन से गणी छे खन्तो, चढ़िया वामादे माता चकडोले, चाकर सहेल्या चमर ढोले ॥१३॥ हुकम माता रो पारस कुमारो, गयवर ऊपर हुवा असवारो । सरण आया रो साहिब स्वामी, जीव सगलारा अंतरजामी ॥१४॥ हसती के हौदे गंगा तट आया, कपटी कमठ री देखी सहु माया । जितरे तो जिनवर ज्ञानकर जोवे, हीवे तापस रो मानज खोवे ॥१५॥ सुण हो तपसी एक माहरी वायो, इसड़ो तो तप महारे

दाय न आयो, इण विधि पंचाग्नी मति जी तापो जीव हिंसारो मोटो सतापो ॥१६॥ इणमे लगेगो वहुत पापो, जाणी परिहर, राखो आपो। छोडो सद माया दया चित धारो सीधा सुमरण सु होसी निस्तारो ॥१७॥ इतनो सुणी ने कमठजी बोले, आतुर उफलतो आंखज खोले। गुसो भरीयो ने धड़ धड़ धुजतो, किड किड़ दाता ने गड़ २ गुंज्यो ॥१८॥ बोले वड़ वड़ने वके वदनुरो, कड़ कड़ ती आंख्या ने दीसे करूरो। राजकंवर तु दीसे अवतारो, अव तो लेवेगा अंत हमारो ॥१६॥ कुडीतो करतो हम सेती सेखी, ऐसी तपस्या में हिसा तुम देखी। कुडा सो कंवर काम नही कीजे, जंगल जोग्यां ने आल न दीजे ॥२०॥ बरजे वामा दे उवा परचावे, रखे तपसी कोई हुनर चलावे। इतरे लकड़ा रा टुकड़ा कर डाला, वलता आफलता नाग नीकाला। २१॥ अंतर मोरत जीवन काया, प्रभु पारस तिहा नाम सुणाया। तड़पड़ता पडिया वाहर फणन्दो, पाया अमर पद हुए धरणिन्दो ॥२२॥ हवे तो तपसी हुवो हैरानो, भरी सभा में पडीयो खीसाणो। धुकन्ती धूणी जटा बिखेरी, अव तो खबर है पारस तेरी ॥२३॥ जल जलतो वलतो आफ-लतो उठ्यो, प्रभु पारस पर गणोइज रूठयो। मारी तपस्या रो अपजस थायो, पारस कुंवर ने होय दुखदायो ॥२४॥ काया कष्ट रो पीड़ परमाणो, चुकूं तो नही कुंवर

सुंटाणो । कालमासे करकीना छे काला, उपनो कमठासुर मेघजमाला ॥२५॥ ये तो जिनवरजी मोटा उपगारी, लेसी दीक्षा ने उतरसी भवपारी । नाग नागीणी रो कियो निस्तारो, जस हुवो है सगले संसारो ॥२६॥ लोग नगरी रा सारा सुखपाया, हिवे कंवरजी मेहला मे आया । इम करता उतरियो बरस गुणतीसो, आप आलोचे मन मे जगदीसो॥२७॥ पहली तो वरसी दान ज दीधो, पछे तो अवसर दीक्षा जो लीधो । सोले मासा रो इक कनक कहीजे, कनक सोले रो सोनइयो लीजे ॥२८॥ आठ लाख सोनइया एकज क्रोड़ो, नित प्रति देवे इतरांरी जोड़ो । इसडा छमसरी वरसी दानज दीधा, जिनवर तेईसमां संजम लीधा ॥२६॥ तीन सौ मुनिवर हुवा जिणवारो, लारे जुडे छे उणरो परिवारो । इक दिन प्रभुजी शिवदग वन मे, ध्यान धरीयो छे अविचल मन में ॥३०॥ अब तो कमठासुर ज्ञान कर जोये, कठे हमारो दुश्मन होवे । रूठो कमठासुर वायु चलावे, अधर पहाड़ा रा सिखर उठावे ॥३१॥ बादल चड़िया ने छायो आकाशो, जाने भाद्रवो वरसेजी मासो । बीजल बादल ने अतिघणा गाजे । पानी पहाड़ा सु पड़तोजी वाजे ॥३२॥ पड़े पानी रा पावस परनाला, धसमसिया डूंगर धारा धक चाला । काले अकाले मचीया बरसाला, वाला खाला ने चलिया वंचाला ॥३३॥ जिनवर तो जल में नासालग कलीया,

ध्यान अचलाचल नहीं चलिया । इतरे आतुरता धरणीन्द्र आया, पाये लागी ने अधर उठाया ॥३४॥ फण हजारां ऊपर किया, लुल लुल प्रभूजी रा वारणां लिया । अब तो मन मांहे आयो विचारो, ओतो दुष्टी दीसे मेघ जमालो ॥३५॥ दस भवांरो वेरी कमठासुर दीसे, संभाल्यो वज्र आणि अतिरीसे, धूजो कमठासुर घणो पछतायो, मैं तो जिनवरजी ने घणो संतायो ॥३६॥ ये तो प्रभू छे मुक्ति रा प्यारा, राग द्वेष सुं होय खेवा न्यारा । इसड़ो जाणी ने लागो छे पावो, प्रभूजी हमारा पाप खमावो ॥३७॥ तब तो कमठासुर इन्द्र देवो, सारे प्रभूजी री घणी घणी सेवो । आपरे थाणक पहुंचा तिण-वारो, हीवे जिनवरजी कियो विहारो ॥३८॥ दिन त्रियासी छद्‌मस्थ रहिया,बाईस परीसा करड़ाजी सहिया । आठुं करमारो कियो विनासो, पाछे तो केवल हुवा प्रकासो ॥३९॥ वाणी पैंतीसे अतिसे चोतीसो, इणविध बिचरे जिनवर तेवीसो, जिहां जिनवर पगल्या पधरावे, असाता आगासु अलगी हो जावे ॥४०॥सौ सौ कोसां मे न पड़े दुरभिक्षा, मोटा रोगां सु होवे सबरी रक्षा । कोई सरावक घरे पारणो पावे, देवता सोनइया क्रोड़ बरसावे ॥४१॥ सुरपति भगवंतरी सारे नित सेवा, लाभ अनंत एक क्रोड़ देवा । देवीदेव मिल दर्शन को आवे, रतन कंचन रो तिगड़ो रचावे ॥४२॥ वाणी धुंकारे उठे अति

भारी, पर्षदा सारी ही समझी तिणवारी। गाँव नगर पुर सोहे विचरता, भाग्य भवि जीवां रा मिलिया भगवंता ॥४३॥ गुण ना आगर ने सागर गंभीरा, लडिया करमा सुं भारी रणधीरा। अनेक जीवांरा कारज सार्या, भव-सागर सुं पार उतार्या ॥४४॥ एक सौ बरसां री पाई छे उमर, जाय तो चढ्या सम्मेदगिरि शिखर। तिथि आठम ने श्रावण सुद मासो, प्रभूजी सीधां में कीदो छे वासो ॥४५॥ उण सिधांरो केसु वखाणो, केइक सूत्रा रो मत पिण जाणो। सिध सीलारो इसडो उनमानो, उठे जिनवर रो अविचल स्थनो ॥४६॥ लांबी पोहली लाख पैंतालीस, जोयण कथियो गुणवंता ईस। मोटी बीच में तो आठ जोजनसगली, छेड़े माखी री पांख सी पतली ॥४७॥ सोहे सिधां री अनंत श्रेणी, संख्या सिधपुर की नही आवे कहणी। पाणी पवन रो नहीं लवलेसो, नहीं अंधारो ना रविरेसो ॥४८॥ नहीं उन्हालो नहीं बरसालो, नहीं सियालो नहीं ऋतु कालो। न कोई आवे ने न कोई जावे, खावे न पीवे नहीं किणी ने भावे ॥४९॥ सुता बैठा नहीं उभाजी आड़ा, भारी हलका नहीं पतला न जाड़ा। हांसा सांसा नहीं न हो उबासा, खटद्रव जीवा रां जोवे तमासा ॥५०॥ चाकर ठाकर तो नहीं उण ठोडो, बडे बडेरो नहीं कोई लोडो। बरते सीधारा समचे समभावो, जिनवर मुनिवर रो नहीं कोई दावो ॥५१॥ जठे

तो प्रभूजी पारस विराजे, तीन लोक में नामज राजे, सवरी तो सेवा देवता सारे, पृथ्वी ऊपर नो माने अवधारे ॥५२॥ देवल देवरा शिखर मंडावे, प्रतिमा थापी ने मंदिर पधरावे। मोटा मुनिवर तो जिनमत हाले, श्रावक कितगाइक तिमहीज चाले ॥५३॥ कोइक तो प्रतिमा पोथी में राखे, कोई भगवंत रा भाव गुण भाखे। केइक तो देवल देहरा जावे, केई अचलाचल ध्यान जिय लावे ॥५४॥ पारस प्रभूरी महिमा अपारो, इण में है आयो थोड़ो विस्तारो। पछे तो भगवंत हुवा वीर वर्द्धमानो, इण विध मुदरा ने ओइज थाणो ॥५५॥ भणीयो भगवन्त रो सिलोको भलो, प्रणमूं पंचोली जोरावर भलो। पल पल में हो जो वंदणा हमारी, मेहर राखीजो मोपर थारी ॥५६॥ व्हाला लागो प्रभुजी अतिवणासारा, दिल सुं कीजे नहीं घड़ी एक न्यारा। समत अठारह वरस इकावनो, पोहवदी दसमी मोटो छे दीनो ॥५७॥ भणे वचने सुणे सदाई, ज्यारे उणायत नहीं रये कोई। सुख संपत दायक लायक स्वामी, तीन भवनरा अन्तर जामी ॥५८॥

इति श्री पार्श्वनाथजी रो शिलोको सपूर्ण

श्री नेमिनाथ भगवान नो सीलोको

सिद्धि बुद्धि दाता ब्रह्मा नी बेटी, बाल कुंवारी विद्या नी पेटी। हंसवाहिनी जगमां विख्याता, अक्षर

आपो नी सरस्वती माता ॥१॥ नेमजी केरो केसुं शिलोको, एक मन थी सांभल जो लोको। जंबु द्वीपना भरत मां जाणो, नगर सौरीपुर स्वर्ग समानो ॥२॥ चहुँटा चौरासी बारे दरवाजा, राज करे तिहाँ यदुवंशी राजा। समुद्र विजय घर शिवा देवी राणी, शीले सीता ने रूपे इन्द्राणी ॥३॥ तेह तणी जे कूंखे अवतरिया, सहस अठोत्तर लक्षण भरिया। खारो खाटो ने मीठो आहार गर्भ ने हेतु कीधो परिहार ॥४॥ घोर घटा ने जलधर गाजे, सजल नीलांबर पुहवी विराजे। बादल दल मां विजली झबूके, क्षण क्षण अंतर मेह ठहूके ॥५॥ पूरण नदिये आव्या छे पूर, पूरण पुहवी पसरया अंकुर। ऋतु मनोहर दादुर डहके, भरया सरोवर लहरे ते लहके ॥६॥ छवी हरीयांली अजब छबीली, नाले आभरणे धरती रंगीली। राग मल्हारनी ऋतु भलेरी आज आवी पांचम श्रावण केरी ॥७॥ पूरण पसर्यो पावस काल, पूरण पुहवी पसर्यो सुकाल। मध्य रात ने पूरण मासे, नेमजी जनम्या राज आवासे ॥८॥ चौसठ इन्द्र ने छप्पन कुंवारी, उत्सव करी ने गया निज ठारी। थयो परभात रात विदाई, दासी जाई ने दीधी वधाई ॥९॥ दूर कीधों दासी आचरण, अनेक आप्या वस्त्र आभरण। सोवन थाल मांहे रुपैया, सवा लाख ते आपे सोनइया ॥१०॥ अति आनंद पाम्यो नरेश, राजसभा में कीधो प्रवेश। पुत्र

जन्मया नी नौबत बाजी, नाद सुं रह्यो अंबर गाजी ॥११॥ बत्रीश बद्ध तिहां नाटक थाय, घर घर कुंकुम हाथ देवाय । दान याचक ने दीधा अछेह, जाणे के वूठा उत्तर मेह ॥१२॥ तोरण बांध्या घर घरबार, घर घर गाये मंगलाचार । बारे दिनां तक उत्सव कीधो, लक्ष्मी तणो तिहाँ ल्हावो लीधो ॥१३॥ अरथ गरथ ना खरच्या भंडार, नाम तिहां राख्युं नेम कुमार । दिन दिन वाढे चन्द्र जिम ये तो, केडने लेके केशरी जीत्यो ॥१४॥ त्रिवली देखी ने त्रिभुवन मोहे, गंगा जमुना ने सरस्वती सोहे । नासा निरुपम दीपशिखा सी, नयन पंकज पत्र प्रकाशी ॥१५॥ मुंह थी बोले अमीरस वाणी, मन मांही हरखे शिवा देवी राणी । बाल लीला मां बुद्धि भंडार, देखी ने मोहे सुर नर नार ॥१६॥ एक दिन नेमजी बजार मांही, नगरी ना ख्याल जोवे उच्छाही । कृष्ण तणी जिहां आयुधशाला तिहां कणे पहुंचा दीनदयाला ॥१७॥ शंख चक्र ने धनुप उदार धनुप खींच ने कीधो टंकार । वलता सेवक इणी पर बोले, गोविंद विना ए चक्र न डोले ॥१८॥टची आंगुलीए चक्र उपाडियुं चाक उणी पर भमु भमाडियुं । अर्चक उभा इणी पर भाखे, शंख ने वाजे कृष्णजी पाखे ॥१९॥ हलवेसुं लई शंख वजाव्यो, साते पाताले सरगे सुणायो । शेप सल-सलिया धरां तहां धमकी, झरोखे बैठी कामिनि झबकी॥२०॥

हबक लागी ने हार तिहां तूट्या, कंचुक तणा बंध विछुट्या । समुद्र जलहलीया चढिया कल्लोले, कायर कंपे ने डुंगरा डोले ॥२१॥ हाथी हबक्या ने उत्रक्या उंजार, तेजी त्राठा ने डर्या दिक्‌पाल । पवण थंभ्यो ने धरती घेराई, कृष्णजी ने सुणो बलभद्र भाई ॥२२॥ कोईक नवो ते वेरी अवतरियो, मोटो बलवंत मत्सर भरियो । नादे अणहद अंबर गाजे, एहवो तो शंख किणसुं इ न बाजे ॥२३॥ त्रिभुवन मांहे कोई न सुजे, चक्री बारे ने इन्द्र अलुजे । यदुनाथ ने थई ते जाण, बात सुनी ने हुवा हेरान ॥२४॥ धूजे भूधर चिंते मन मांय, राज काज ते मेल्यां केहवाय । सुगुण सोभांगी साहसिक शूरो, एक बाते ए नहीं अधूरो ॥२५॥ मुझ थी बली ओ महा-बलधारी, मोटे सोचे ते पडियो मुरारी । वली वली मनमां चिंते बनमाली, राज हमारुं लेशे उलाली ॥२६॥ इण अवसर नेमकुमार, मलकता आव्या सभा मझार । आगा आवोजी आदर दीधो, सभा सब कोई प्रणाम कीधो ॥२७॥ पाणी पसारी शारंगपाणी, मुंह थी बोल्या ते एहवी वाणी । आज पारखिए बल तुम्हारो, नेम नमावो हाथ हमारो ॥२८॥ काची कांब जिम कणयर केरी, कमल तणी पर वाल्यो कर फेरी । नेमजी रह्या बांह पसारी जाणे हिंडोले हिंडे गिरधारी ॥२९॥ विठल मनमा जोवे विचारी, एह कुंवारो बाल ब्रह्मचारी, इम

चिंती ने नारी हकारी, छांटे नेम ने ग्रांह पमारी ॥३०॥ भरी खंडोखली केशर कुंकुमे, गोपी दीयर सुं रमत रमे। सत्यभामा ने रुक्मणी राणी, कहे नेम ने एहवी ते वाणी ॥३१॥ परणो राजुल रूपे रढियाली, नारी विना ते नर कहिये हाली। नारी नो रस ते म्होटो संसार, नारी तो छे नर नो आधार ॥३२॥ पुरुष नी पासे जो होय न नारी, वस्तु न धीरे कोई व्यापारी। नारी ते छे रतन नी खाण, धरणी वडे ने धरनु मंडाण ॥३३॥ मुश्किल सुं बोले गोविंद राणी, बत्रीस हजार छे वडी जेठाणी। पाये पडनुं ने दोहेलो जाणी, ते माटे तमे नाणी देराणी ॥३४॥ जेहसुं अपूर्व प्रीत बंधाणी, आज्ञ ने हवे क्रम रहीए ताणी। फरी उत्तर नेमे न दीधो, मान्यो मान्यो जो सहु कोये कीधो ॥३५॥ बोल बोल्या ने कीधी सगाई, लीधां लग्न ने करी सजाई। छप्पन कुल कोडी जादव मिलिया, तूर ने नादे समुद्र जल हलिया ॥३६॥ चढी जान ने वाजे छे वाजा, जाणे असाढे जलधर गाज्या। जुगत करीने जादव चढिया, प्रथम घाव नगारे पडिया ॥३७॥ मयगल माता ने पर-वत काला, लाख बैंयालीस बल सुढाला। छाके छक्या ने मदे झरंता, मूके सारसी चाले मलकता ॥३८॥ लाख बेतालीस तेजी पाखरीया, उपर असवार सोहे केशरिया। अच्छी अच्छी ने पंच कल्याणा, पूठे पोढा ने पुरुष

सुवाणा ॥३९॥ समगते चाले ने चक्र रहंता, चंचल चपल चरणे नाचंता। साज सोने री सोहे केकाण, लाख बेतालीस बाजे निशाण ॥४०॥ लाख बेतालीस रथ जोतरिया, कोडी अडतालीस पाला छे चलिया। नेजा पंचरंगी पांच क्रोड जाणो, अढाई लाख तो दिवीधर लखानो ॥४१॥ सोहे राजेन्द्र सोले हजार, एक सौ अस्सी साथे साहूकार। साथे सेजवाला पंच लाख वारु, मांहे सु दरी बेठी देदारु ॥४२॥ शेठ सेनापति साथे परधाण, भली भांत सु चाली छे जाण। बंदूक नो धु आसु सूरज छिपायो, रजडंबरे अंबर छायो ॥४३॥ धवल मंगल गाये जा नरडी, जागे सरसतीनी वीणा रणजणी। वागे केशरीया वरगोडे चढिया, काने कु डल हीरां सु जडिया ॥४४॥ छत्र चमर ने मुकट विराजे रूप देख ने रतिपति लाजे। जान लेई ने जादव सिधाव्या, उग्रसेन रे तोरण आव्या ॥४५॥ देखी राजुल मन मां उल्लसे, चंद्र देख जिम समुद्र उधसे। घणा दिन नी राजुल तरसी सजे सिणगार जोए छे अरसी ॥४६॥ अंजन आंजिने आंखो अणिआली, वेणी सरजी ने सांप ज्यूं काली। शीश फल ने सोहे सिंदूर, मयण राजानुं पसयुं छे पूर ॥४७॥ गाले गोरी ने झाल झबूके, मद भरमाती ने नजर न चूके। नासा निर्मल अधर परवाली। केडे थोड़ी ने घणुं सुकमाली ॥४८॥ भूषण भूषित सुंदर रुप, मुख पूनम

चंद्र अनूप । रूडा रूपाला कुच उत्तंग, कंचुकीये कसी ने कीधा छे तंग ।।४९।। हिरदे लाखीणो नवसर हार, चरणे झांझर रण झणकार । सजी सिणगार उभी झरोखे, निरखी नेम ने मन मांही हरखे ।।५०।। मोटा मंडप नी रचना अति रूडी, गाजे वाजित्र उछले छे गूडि । भुंगल भेरी ने वाजे नफेरी, जोए छे राजुल नेम ने हेरी ।।५१।। गोखे चढी ने राजुल भाखे, दिवस दोहिला गया तुम पाखे। कंत थे काई कामण कीधो,मन माहरो उलाली लीधो ।।५२।। आज फरके छे जीमणो अंग, सही यहाँ होसे रंग मां भंग । कहे राजुल सुणो सहेली, रखे यादव जाये मुझ मेली ।।५३। पशु पेखी ने पायो वैराग, मुगति रमणी सुं कीधो छे राग । नेमजी पूरव नी प्रीत पालीजे, एम छटकी ने छेह न दीजे ।।५४।। मुगति मंदिर मां आवजो मलशुं,सदा सरवदा रमत रमशुं । दान सवच्छरी जिनवरे दीधुं, नेम राजुले सजम लीधुं ।।५५।। पूरव नी प्रीत अविचल पाली, पहुंचा मुगति मां करम प्रजाली । वेग विरहनी वेदना टाली, शिवमदिर मां जाजो संभाली ।।५६।। शील पाले जो चतुर सुजाण, नामे तेहने क्रोड कल्याण । उदयरत्न कवि इणी पर बोले, कोई न आवे नेमनाथ ने तोले ।।५७।।

।। इति श्री नेमिनाथजी नो श्लोको सपूर्ण ।।

अथ श्री भरतबाहुबलजी को शिलोको

प्रथम प्रणमुं माता ब्रह्माणी, तुहीं आपे छे अविरल वाणी। भरत बाहुवल भाई सजोड़े, कहसु शिलोको मन ने कोडे ॥१॥ नाभि राजा ने कुल नगीनो, प्रथम तीर्थंकर ऋषभ उपनो। सौ पुत्र तेहना समरथ जाणो, भरत बाहुबल भला बखाणो ॥२॥ आयुधशाला में चक्र उपनुं, मन ते हरिषयो, भरत भूप नो। चक्र पूजी ने करी चढाई, दीधा छे डेरा जंगल मां जाई ॥३॥ सैन्या लेई ने सबल दीवाजै, विविध भांतिना रणतुर बाजे। चक्र अतुल बल आकाशे चाले, भरत सेना सुं पुठे छे चाले ॥४॥ पूरब आदि ने उत्तर अंते, आण मनावी चक्री बलवंते। साध्या षट्खंड कमल अपार, वरष ते बोल्यां साठ हजार ॥५॥ गंगा सिधु ने साधी सरिता, पछे म्लेच्छ ना देश ते जीता। सेना लई ने भरत सिधाव्या, साधी षट्खड अयोध्या आव्या ॥६॥ नगरीना लोक सामां ते आवे, मोतियांरो थाल भरने वधावे। वाजे वाजा ने भुगल भेरी, शेरीए फुलड़ां नाखे छे वेरी ॥७॥ याचक जन तो कीरति बोले, कोई न आवे श्री भरत ने तोले। दिन दिन दोलत वधे सवाई बीजानीं नहीं तेवी अधिकाई ॥८॥ अनुक्रमे कीधो नगर प्रवेश, चक्रनो उच्छव मांड्यो नरेश। चक्र ते रहयुं आकाशे भमे, आयुधशालामें आवे नहीं किमे ॥९॥ सहु मलीने

मनमां विमासे, शामाटे चक्र रह्युं आकाशे । सुणो साहिब कहे सेनानी, भाई तुमारो एक गुमानी ॥१०॥ बाहुबल नामे महाबल धारी. तेह न माने आण तुम्हारी । हठ मांडी ने रह्यो हठीलो, छत्रपति छोगालो छेल छबीलो ॥११॥ अचलो ने ए महाअभिमानी, सेवा कीधी छे पहेला साधुनी । अजित अतुल बल तेणे ते बलियो जालम जोधो संग्रामे कलियो ॥१२॥ अनमी ते केहणी आण न माने, पराक्रमे पूरो प्रजा ने पाले । एहवी ते सुणी बात अद्भुत, लेख लखीने मोकल्यो दूत ॥१३॥ दूत तेहवे भरत आदेशे, वेग सु पहुँच्यो बाहुबल देशे । कागद देई ने कहे कर जोड़ी, वेगे तेड्या छे चालो तुम दोडी ॥१४॥ कागद वांची ने चढयो क्रोध, दूत प्रत्ये कहे वचन विरोध । कुण भरत तेडे छे हमने, नहीं ओलखतो पुछूं छूं तुमने ॥१५॥ दूत कहे छे भाई तुम्हारो, भरत चक्रवर्ती साहेब हमारो । आयुध शालाए चक्र न आवे, तेणे करीने तमने बुलावे ॥१६॥ करी असवारी वेगे सधावो, तिहाँ आवी ने शीश नमावो । नावो तो करो युद्ध सजाई, मांहो मांही मली समझो ने भाई ॥१७॥ भरत चक्रवती षट् खंड भोगी, अभिमान महुना रयो आरोगी । ते आगल शुं गजुं तमारुं, ते माटे कह्युं मानो अमारुं ॥१८॥ इम सुनी बाहुबल जंपे, मुझ आगे तो त्रिभुवन कंपे । चढ्यो क्रोध ने दंतज करडे, होठ

करडे ने मूछज मरडे ॥१६॥ एहवो ते कुण भूल्यो छे भारी, जेह तडोवडी करे हमारी। कहे बाहुबल चढावी रीस, करुं युद्ध पण न नामुं शीश ॥२०॥ वेगे खीजी ने दूत ने वलीयो, अनुक्रमे भरत ने आवी ते मलियो। भरत ने जई दूत ते भाखे, आण न माने कटकाई पाखे ॥२१॥ सुणी वात ने मानी ते साची, चढाई करवा भेरी ते वाजी, हाथी घोड़ा ने रथ निशाण, लाख चोराशी तेहनुं परिमाण ॥२२॥ रथ लइने शस्त्र ते भरीया, धवला धोरीडा धिंग जोतरीया। साथे छन्नुं कोड पाला पर-वरिया, नेजा पचरंगी दशकोड धरिया ॥२३॥ पूरा पाँच लाख दीवी धरनार, महीपति मुगटाला बत्रीश हजार। शेष तुरंगम क्रोड अठार, साथे व्यापारी संख न पार ॥२४॥ सवा क्रोड ते साथे परधान महोटी नालनुं तेर लाख मान। साथे रसोइया सहस बत्रीश, लश्कर लईने भरत चक्रीश ॥२५॥ लश्कर लईने चक्रवर्ती चढ्यो, सामो आईने बाहुबल अडीयो। तेना कटक नो पार न जाणो, यमरूपी ते योधा वखाणो ॥२६॥ निशाणे घावा दई परवरियो, सेना लइने सामो उतरयो। कहे बाहुबल भरत ने जाई, ताहरी तो सुध शा माटे गई ॥२७॥ सगा भाई सुं एम न कीजे, रिद्धि पामी ने छेह न दीजे। जाते दहाड़े जो ने विमासी, पर पोता ने न होवे सहवासी ॥२८॥ अंग विना ते ढांग न वाजे, भाडुते राखी भीड़ न भांजे।

घर न वसे पुत्र पीयारे, सुख न लहिये भृत हियारे ॥२९॥ ते तो अवगण्या भाई अठाणु, यति थया तजी ते आणु । ताते लोभियो तुज ने विचारी, तेणे ने लीधु संजम भारी ॥३०॥ ताहरे पापे ते नासी ने छूटा, घणु अघटतु कीधु ते झूठा । करतब ताहरा कहतु हुं लाजु, मुझ वडे तु षट्खंड गाजु ॥३१॥ तुजने जोऊं नजरे जो फेरी, वार न लागे नाखतां वेरी । फूल दडो लई कोमल हाथे, वढवु सोहेलु चुडालु साथे ॥३२॥ टची आंगलिये मेरु ने तोडु, तारो कटक लई समुद्र मां बोडु । पण राखु छुं लाज पितानी, वात वली कहुं बालपणानी ॥३३॥ गगने उछाल्यो गिदुक रीते, पाछो पडतो तु धरयो में प्रीते । चरणे जाली ने फेरव्यो तुझने पवने जिम फरे देउले ध्वजनी ॥३४॥ ए नहीं एहवा छाकम छोला, चाहे चित थी भृत मे भोला, हाक मारु तो पर्वत फाटे, लाज राखु छुं बंधव माटे ॥३५॥ वली फेरव्यो पावक वन में, जिम नल राज ने कूबटे जग में । बालपणा ने रूडां संभारी, गर्व ते करजो पछी विचारी ॥३६॥ भरत सांभलजे साचु हुँ भाखु, हवे केहनी लाज न राखु । बालपणानी रमत नाठी, हवे बाँधी छे बाकरी काठी ॥३७॥ एम कहीने रणवट रसीयो, धनुष लई ने सामो ते धसीयो । उबट्यो धुंआडो प्रगटी जाल, बाहुबले तिहाँ, झाली करवाल ॥३८॥ बाँधी हथियार सामो ते

आवियो, प्रथम तुंकारे भरत बोलव्यो, कांई हणावे सुभटनी घाटा, आपण कीजे युद्ध बे काटा ॥३९॥ कोई बीजानुं इहां नही काम, फोगट बीजां ने मारो कां काम। चढीए आपने अवध ज राखी, सुरनर कोडि करयां तिहां साखी ॥४०॥ बेहुने शरीरे रह्या बेहु पासा, तिहां सुर नर जोवे तमासा। भरत बाहुबल अधिक दीवाजे, बेहुने शिर छत्र मुकट बिराजे ॥४१॥ भरत बाहुबल सामा बे भाई, शशि रवि सरीखा रहे थिर ताई निरखी सुरनर रहे सहु अलगा, दृष्टि युद्ध मां प्रथमज वलगा ॥४२॥ नैनां सु नैना मेली ने जोवे, भरत री आंखा सु आंसु चूवे, जिम भादरवे जलधर धारा, जाणे के टूटा मोती ना हारा ॥४३॥ हारयो भरत ने बाहुबल जीत्यो, त्रिभुवन मांहे थयो वदित्तो। बोले बाहुबल बंधव प्रीति, बीजुं युद्ध कीजे शास्त्रनी रीति ॥४४॥ नरहरि नाद भरत तिहां कीधो, शब्द ते सबले थयो प्रसिद्धो। रण नी भूमि लगे रह्यो ते गाजी, गयवर गहगह्या हण-हण्या बाजी ॥४५॥ गडगड गाजे बाहुबल बेगे, हरिनाद कीधो तिहां तेगे। दशोदिश पूरी नाद ने छंदे त्रिभुवन कंपे तेहने छंदे ॥४६॥ समुद्र जलहल कल्लोले चढ्या, जाणे त्रिभुवन एकट्ठा मिलिया। हाथी हलहलीया हयवर हणहणिया, नाद सुणी ने सुर नर रणझणिया ॥४७॥ भीम भुवन थयु ते जिहारे, भरत मनमांही विचारे

निहार । एह अतुली बल महाबल पूरो, एह समो वड बीजो नहीं शूरो ॥४८॥ जाते दहाडे देशनटो देशे, रिद्धि हमारी उन्नाली लेशे । भरत ने सांढे हसी तिहां शाही, बोले बाहुबल सांभलो भाई ॥४९॥ भुजा युद्ध कीजे हवे भारी, अमो नमाऊ बांह तुमारी । एम सुणी ने भरत भूनाथ, वेगे पसार्यो पोता नो हाथ ॥५०॥ बाहु बलवंतो भुजबल बांह, पटखंड पृथ्वी झाले उच्छाह । कमल तणी परे बाहुबल वाले, तस भुज नव वल्यो भरत भूपाले ॥५१॥ और हिया मांहि मत राखो वाकी, चौथु मुष्टि युद्ध कीजे ताकी, महोक्रम मूठी भरते उपाडी, बाहुबल माथे दीए पछाडी ॥५२॥ मूठीनी मारे शिथिल थयु अंग, भरत नां मन मां वाध्यु उछरंग । बाहुबल मन साथे विचारी मुठी उपाड़ी हैयां मां मारी ॥५३॥ मुठो नी मारे भरत लडखडियो, भंवरी खाई ने भूमि पर पड़ियो । चढी रीस ने मूठ चमचमे, जेम दुहाणो विषधर धमधमे ॥५४॥ ठामे थई भरते हाथ उपाड्यो, मारी मूठ ने भू पर ते पाड्यो । ढींचण लागे घाल्यो धरती मांही, जाणे रोप्यो खीलो जग मांही ॥५५॥ सुरते उठ्यो आप संभाली, भरत ने रीसे मारयो दंड उलाली । घाल्यो धरती मां कंठ प्रमाण, कायर कंपे ने पड्यु भंगाण ॥५६॥ चक्री नु सैन्य थयु ते झांकु, भरत विमासे भाग्य छे बांकु । बाहुबल कटके वाजित्र बाजे, वीतशोका थई सुभट विराजे

॥५७॥ उछ्यो ते आप धरा धंधोली, क्रोधे ते रह्यो चक्र ने तोली। भरत चक्र ने आज्ञा आपी, बाहुबल माथुं लावजे कापी ॥५८॥ बाहुबल मनमां एम विमासे, धिग बोलीने पछी विमासे। शुं कुखे आव्यो भरत पापी न्याय नी रीत नाखी उथापी ॥५९॥ मूठी तोली ने रह्यो ते जेवे, जलहल चक्र आव्युं ते तेहवे। वेगे वल्युं ते वांदी ने पाय, गोत्र में चक्र न चाले क्यांय ॥६॥ चढयुं कलंक चिंते ते चक्री, मुजथी नानो पण मोटो ए चक्री। भरत रहया हवे हाथ खंखेरी, एहनी मुठी नी गत अनेरी ॥६१॥ दीन हीणो भरत ने जाणी, बाहुबल बोले ते एहवी वाणी। भरत नुं मारुं भाई सलूणो, मानव माथु कोई मत धूणो ॥६२॥ मुठी नुं मन मां आणी आलोच, मस्तके लई कीधो ते लोच। बाहुबल थयो ते साध वैरागी, सुर नर पूजे पाय ते लागी ॥६३॥ देव दुंदुभी वाजे आकाशो, फूलनी वृष्ठि थई चिहु पासे। मन थी मेली विषय विकार, धन धन जपे सुर नर नार ॥६४॥ कर्म खपावी केवल पामुं, लघु भाई ने शीश न नामुं काउसग्ग करी कर्म निकंदु, पछी जाई ने जिनवर वंदु ॥६५॥ इम धारी वन मां काउसग्ग रहे, वर्ष काले ते कर्म ने यहे। कुंजर चढी केवल किम लहिये, बेन ने वचने बूझो ते हैये ॥६६॥ पग उपाड्यो केवल पाम्युं, जई ने जिनवर मस्तक नाम्युं, भाई नवाणुं एकठा मिलीया,

मनना मनोरथ सघला फलिया ॥६७॥ एक वर्ष काउसग्ग रह्या, वाचा पाली ने मुगते ते गया । उदयरतन कहे वचन विलास, बाहुबल नामे लील विलास ॥६८॥

॥ इति भरत बाहुबल नो श्लोको समाप्त ॥

अथ श्री शालिभद्र शाह नो श्लोको प्रारम्भ

सरसती माता करी ने पसाउ, पासजी केरा प्रणमुं हुं पाउं । शालिभद्र शाह नो कहुँ शलोको, लाभ जाणी ने सांभलजो लोको ॥१॥ नगर राजगृहे श्रेणिक राजा, मगध देशनो एक महाराजा । रूडी तेहने छे चेलना राणी, जगमां जेहनी कीरति जाणी ॥२॥ तेह नगरी मां दामे छे ताजो, शेठ गौभद्र मोटो मलाजो । भद्रा नामे छे भार्या तेहने जोतां शीले को जीते न जेहने ॥३॥ देई मुनिवर ने खीर नुं दान, संगम गोवालो भाग्य निधान । आवी भद्रानी कुखे अवतरियो, जाणे मुक्ताफल सीपे संचरियो ॥४॥ पूर्ण मासे प्रसव्यो ते पुत्र, सघलुं शोभाव्युं घरनुं सूत्र । अनेक घरनां अल्याणा आवे, वारु मोतीए सहु वधावे ॥५॥ थोके थोके तिहां नाटक थाय, मां ना हिया मां हरष न माय । पिता आपे तिहॉं लाख पसाय, याचक जन नां दारिद्र जाय ॥६॥ करि उच्छव शालि कुमार, जनके नाम तिहाँ धर्युं जयकार । दिन दिन चढते वेशे ते दीपे, रूपे जे रतिना नाथ ने छीपे ॥७॥

बापे परणावी बत्रीश बाला, आपे संयम लई उजमाला।
पहुँचो स्वर्ग मां पुण्य पसाये,अवधि प्रयुंजी जोतां उछाहे। ८॥
पेखी पुत्र ने प्रेमे भरायो,स्नेह पूर्व नो वध्यो न गमायो।
मोहनो बाँध्यो ते मानने मेटी, पिता पठावी त्रेत्रीस
पेटी ॥९॥ जोइये जैसा भोग सजावी, ते तो मोकले सुर
ते सदाई। मेवा मिठाई माणक मोती, एक एक सु
अधिक उद्योती ॥१०॥ नित नित नवला नेह ते पूरे, हेते
करीने रहे हजूरे। उंचे मंदिर कुंभी परवाले, खिलमां
कस्तुरी बहे जिहां खाले ॥११॥ भूषण निर्माल्ये भरावे
कुवो, युगती वैभवनी नवली ए जुओ। भोगी शालिभद्र
सरीखो भूपृष्ठे, नर जोतां शुं नावे को दृष्टे ॥१२॥
ताजी ठकुराई जाणीने तेहवे, रत्नकंबल ना वेपारी एहवे।
श्रेणिक राजाने दरबारे आव्या, फेरी पड्यों ने कांई ना
काव्या ॥१३॥ सारा शहर मां घर घर फिरिया, कंबल
कोई पण हाथ न धरिया। रत्न कंबल सोले ते लीए,
भद्रा बहुओं ने व्हेंच ने दीए ॥१४॥ बीस लाख तिहां
सो नैया वारु, दीधा गणी ने तेहने दीदारु। लेई सोनैया
वेपारी वलिया, मनना मनोरथ तेहना फलिया ॥१५।
चेलणा राणीनी चिंता जाणी ने, तेडी व्यापारी कहे ताणी
ने। करी सपाडा कंबल काजे, श्रेणिक राजा भरी सभाजे
॥१६॥ नृप ने व्यापारी कहे शिर नामी, शाने सपाडा
करो छो स्वामी। कंबल सोले भद्राए लीधा, वेगे बीस

लाख दीनार दीधा ॥१७॥ मनमां विचारयुं श्रेणिक महाराजे, वाणिये लीधां व्यापार काजे। एम चिंती ने एक मंगावे, खाले नाख्यो ते खबर पावे ॥१८॥ वात महल मां तेह वंचाणी, कहे राजा ने चेलणा राणी। इहां नेडीए वणिक अनूप, जोइए केवुं छे तेहनो स्वरूप ॥१९॥ तुरंत महाराज तेहने तेडावे, भेट लइने भद्रा तिहां आवे। भद्रा आवी ने भूप ने भाखे, स्वामी सांभलो राणी नी साखे २०॥ घणुं सुहालुं शालि कुमार, हर्म्य थाये ए कोश हजार। न लहे रात ने दिवस नूर, किहां उगे किहाँ आथमे सूर ॥२१॥ निपट नाजुक छे ते न्हानडियुं, क्यारे केहनी नजरे न पडियो। ते माटे तमो लाज वधारो, प्रभुजी अमारे मंदिर पधारो ॥२२॥ पूरं मावित्र छोरूं ना लाड, स्वामी तेमां शुं पाड सपाड। इम सुणी ने श्रेणिक राय, प्रधान सामुं जोयुं ते ठाय ॥२३॥ अभय-कुमार तब कहे एम, प्रभु तुम घरे आवशे प्रेम। भद्रा भूपने पाय जी लागी, सात दिवसनी अवधि मांगी ॥२४॥ सीख लई ने भद्रा सिधावी, रूडी महलनी रचना रचावी। परिकर लेई ने नृप बिंबसार, पहुंचा शालिभद्र सेठ ने द्वार ॥२५॥ वेगे आगल थी चाल्या वधाऊ, खरी भाखे जई खबर अगाऊ। जोमे जमाडी हरख उपाई, वारु तेहने दीधी छे वधाई ॥२६॥ महल नी रचनां जोतां महाराज, अचरज पाय ने मन मां हरपाय। अहो! मैं हूं अलकापुर

राजो, भ्रान्ति ए भूल्यो ने भेद न पाम्यौ ॥२७॥ जिम तिम करी ने बीजी भुंइ जाय, तीजे माले तो दिग्मूढ थाय। जोये ऊंचो ते नयन ने जोड़ी, जाण्यो के उग्या सूरज कोडी ॥२८॥ सहु साथ ने वेसाडी तिहां, भद्रा जई भाखे पुत्र छे जिहाँ। श्रेणिक आव्या छे महल मझारी, वेगे तिहाँ आवो तजी ने नारी ॥२९॥ गेले गुमानी कहे ते गाजी, मुझ ने तमो शुं पूंछो छो माजी। श्रेणिक लई ने वखारे भरो, लाभे लोभे वली दीयो ने वरो ॥३०॥ तिहांरे माता कहे न लहे तुं टाणुं, सुतजी श्रेणिक नहीं करियाणुं। मगध देश नो मोटो छे रायो, आण एहनी लोपी न जायो ॥३१॥ एहवुं सुणी ने कुमार आलोचे, सांसे पड्यो ते मन मांही सोचे। म्हारे माथे पर जो छे महाराजा, तज शुं तो सही भोग ए ताजा ॥३२॥ एम चिंती ने मुजरो ते आयो, नृपने नमीने महलां सिधायो। भोजन करी ने श्रेणिक भूप, कोडे घरेणांनो जोइने रूप ॥३३॥ मान गाली ने मंदिर गयो, शेठ संयम नो रागी ते थयो। नित्ये एकेकी परिहरी नारी, प्रेमदा सासु ने जाई पुकारी ॥३४॥ मानी महिला ना सुणी विलाप, जोरे तेणे त्यां दीधो जबाब। रागे रमणी ने रेख न खलीयो, जो जो धन्नो हवे केह पर मलियो ॥३५॥ नामे सुभद्रा धन्ना घरे जाणुं, शालिभद्रजी बहिन बखाणुं। वेणी स्वामीनी समारे साही, तेणे अवसरे सांभर्या भाई

॥३६॥ आंखें आंसुड़ा आव्या ते सांसे, पड्यां विखूटी पीऊ ने पांसे। धन्नो देखी ने पूछे ते धीर, नयणां सु छूटो कहोकेम नीर ॥३७॥ दीसे आज तु' घणु दिलगीर, शालिभद्र सरखो तारे छे वीर। वनिता आठ मां मुज ने तु' वाली, चोफेर आंसुनी धारो किउ चाली ॥३८॥ चलती बोली ते मेहली निसासो, तुमे सांभलो एक तमासो। आव्यो श्रेणिक तिहांथी निरधारी, वंधव तजे छे एकेकी नारी ॥३९॥ बत्तीस दिवस मां बत्तीस तजशे, पछे साधु नां पंथने भजशे। लोज करशे ते सांभरी चेण, आंखु भराणी आंसुए तेण ॥४०॥ धन्नो बोले नव साहस धीर, ताहरे शालिभद्र एकज वीर। नेणे खरखरो ए नहीं खोटो, पण तुझ बांधव कायर म्होटो ॥४१॥ भैरव जाप तो स्वसती सीं भरवी, लेवी दीक्षा तो ढील न करवी। एम सुणी ने अवला ते जंपे, स्वामी कायर ते वाणियां कंपे ॥४२॥ पण तुमे तो शूरा पूरा छो, पग रखे हवे मांडोजी पाछो। कामिनी तजवा नो कहो जो ठाठ, एक वार तो तजो जे आठ ॥४३॥ स्वामी संयमनी वात्त छे सहेली, दुष्कर आदरतां खरी छे दोहली। सीख देवा ने सहु सज्ज थाय, तुमने वंदु जो त्रिया तजाय ॥४४॥ भारे भाई नु' ताणे ते पासु', हलवो पाडवा कीधु' जो हांसु'। तो में आठे ने मेली उलाली, वचन में कहशो कामनी चाली ॥४५॥ पिउजी हंमी में एहवु' मैं भारव्युं, तुमें

हिया मां गांठी ने राख्युं । दिल खेंची ने छेह न दीजे, अबला जाति नो अंत न लीजे ॥४६॥ तरुणी हंसी में तमे जो कह्युं, पण हमें तो सांचसु लह्युं । साची वेन तुं शालिभद्र केरी, फोकट वचन ने अब मत फेरी ॥४७॥ संजम लेवा नी ते सज्ज थई, धन्ने शालिभद्र बोलाव्यो जई । उठ आलसुं हुँ थयो आगे, महावीर पासे जई महाव्रत मांगे ॥४८॥ धन्नो शालिभद्र सयमधारी, थया विषयनी वासना वारी । भद्रा पुत्र ने बोलावी रलीयां, बहुयर लेइने मंदिर वलीयां ॥४९॥ वीर साथे ते देश विदेशे, विचरे वैरागी साधु सुवेशे । तप करी ने दुर्बल तने, बारे वरष ने अंते ते बन्ने ॥५०॥ आव्या राजगृही नगरी उद्याने, मास उपवासी बधते ते वाने । आहार ने काजे वीर आदेशे, पहोता भद्रा ने तेह निवेशे ॥५१॥ आंगन आव्या पण उलख्यां नांही, तत्क्षण पाछा वलीने उछाही । बीजी वारना पहोता ते बारे, तो पण केने न उलख्या नारे ॥५२॥ पाछा वली ने वहे छे वाटे, मली महियारी माथे लई ने माटे । दही बहरी ने तेहने हाथे, मुनिवर विचारे ते मन साथे ॥५३॥ वचन वीर नुं अलिक न थाय, जो आ जगती फेरी मंझाय । मारी माता ने वांझणी जाणो, आज मले छे एह उर वाणो ॥५४॥ जिन नी पासे जइ पूछे ते जेहवे, वीरे आगल थी बोलाव्या तेहवे । सुणो शालिभद्र साधु तमारी, मात पूरव नी एह

महयारी ॥५५॥ एवु सांभलतां आव्यों वैराग, अणसण लेवा नो थयो तिहां राग । गिरि वैभारे गुरु ने आदेशे, लई अणसन पाले विपेशे ॥५६॥ आवी भद्रा तिहां आंसुडा जरती, विधविध भांति विलाप करती । साथे लीधी छे वहुयर सगली, दुःखे टली छे तेहनी डगली ॥५७॥ शिला ऊपरे देखी सथारो, नयनां सु छूटी नीर नी धारो । भद्रा वोले छे पुत्र हुं भूंडी, हैये शूली ने दुःख नी छुदुडी ॥५८॥ सुत नुं पेटनु पापणीए सही, आंगण आव्यो पण उलख्यो नहीं । हा हा मुझने ए पड्यो वरांसो, सारो अवतार रहसे ए सांसो ॥५६॥ हा हा हाथे में आहार न दीधो, आव्यो अवसर अफलज कीधो । भद्रा पुत्र ने एकं तिहां भाखे, कांइ विसार्या अवगुण पाखे ॥६०॥ तुज विना तो सूना आवास अमने थाय छे घडी छः मास । हंमी वोले जो वचन विचार, अमने सही तो थाये करार ॥६१॥ माता जाणी ने जोऊं जो सामु, पुत्र तिहांरे हुं सतोष पामु । शालिभद्र ने धन्नो वारे छे, ए तो आपण ने पापे भरे छे ॥६२॥ साहमु जोशो तो अवतार करशो, पडशो फंद मां पाछा जो फरशो । दिलसु माता ने दिलगीर देखी, साधु धन्ना नी सीख उवेखी ॥६३॥ जोयु शालिभद्रे आँख उगाडी, त्यारे रलियात थई ने माडी । अंशुक वडे ते आंसुडा लहोती, वंदी वहुयरसु मंदिर पहुँची ॥६४॥ धन्ना पाधरो मुगते गयो, एक अव-

तारी शालिभद्र थयो । पहुँचो सर्वार्थ सिद्ध विमाने, सेवक स्वामी पणु नथी जे थाने ॥६५॥ संवत सतरैसे सित्तर वरशे, मिगसर सुदी तेरस हरपे । उदयरत्न कहे आद्रज मांहे, एह शलोको गायो उच्छाहे ॥६६॥

॥ इति श्री शालिभद्र नो श्लोको सपूर्ण ॥



॥ भगवान श्री महावीर स्वामी की ढालें ॥

सिद्धारथ कुले थें उपन्या, त्रिशला दे थांरी मातजी ।
वरसी दान देई करी, संजम लीनो जगन्नाथजी ॥१॥
थे मन मोह्यो महावीरजी ॥टेर॥
कंचन वरणी छे काय जी, नयन धापे जी निरखतां ।
हिवड़े आवे दायजी, थे मन मोह्यो महावीरजी ॥२॥
आप अकेला संयम आदर्यो, उपन्यो चोथो रे ज्ञानजी ।
उत्कृष्ट तप थे आदर्यो, धरता निर्मल ध्यानजी ॥३॥थे.॥
उग्र विहार थें आदर्यो, केई वरस रह्या वनवासजी ।
कई वासा वस्तीये रह्या, न रह्या एक ठामे चौमासजी ।४।थे.।
प्रभु पहेलो चोमासो थे कीयो, अष्ठि गॉव मंझारजी ।
दूजो वाणीज गॉव में, पंच चंपा सुखकारजी ॥५॥थे॥
पंच पुष्ट चंपा कर्या, विशाला नगरी में तीन जी ।
राजगृही में चवदे किया नालंदी पाड़े नय लीन जी ।६।थे।
छे चौमासा मिथिला कर्या, भद्रिका नगरी में दोय जी।
एक कर्यो रे आलंभिया, सावस्ती नगरी एक होय जी ।७।थे.।

एक अनारज देश मां, अपाप नगरी एक जाणजी ।
एक कियो पावा पुरी, जठे पहोच्यां निर्वाण जी ॥८। थे.॥
हस्तीपाल राजा इम विनवे, हुँ चरणारो दास जी ।
एक शाला मारे सूझती, आप करोनी चौमास जी ।९।थे ।
चालीस चौमासा शहर में, दाख्या देश नगर ना नामजी ।
एक अनारज देश मां, एक चौमासो वली गांमजी ।१०।थे.।
प्रभु गाम नगर पुर विचरिया, भव्य जीवांरा भागजी ।
मारग बतायो मोक्ष को, कियो उपकार अथाग जी ।११।थे.।
साढ़ा बारह बरसां लगे, ऊपर आधो रे मास जी ।
छद्मस्थ रह्या प्रभु एटलु, पछे केवल ज्ञान प्रकाशजी ।१२।थे ।
वर्ष बयालीस पाल्यो, सयम साहस धीर जी ।
तीस बरस घर मां रहया, मोक्ष दायक महावीर जी ।१३।थे.।
पावापुरी में पधारया, नरनारी हुवा उल्लास जी ।
ऋषि रायचंदजी इम विनवे,आयो प्रभुजी ने पासजी ।१४।थे
सवत अठारा गुण चालीस में, नागौर शहर चौमासजी ।
पुज्य जैमलजी रे प्रसाद थी, मैं ए करी अरदासजी ।१५।थे

॥ ढाल पहली समाप्त ॥

॥ ढाल दूसरी ॥

शासन नायक वीर जिनंद, तीरथनाथ जाणे पूनमचन्द ।
चरणे लागे ज्यारे चौसठ इन्द्र, सेवा करे जांरी सुरनर
वृन्द ॥१॥ थे अब चौमासो स्वामी अठे करोजी ॥आं॥

हस्तिपाल राजा वीनवे कर जोड, पूरो प्रभूजी मारा मन रा कोड । शीश नमायो ऊभो जोडी हाथ, करुणा सागर वाजो कृपा नाथ ॥२॥थे.॥ रायनी राणी विनवे राज लोक, पुन्य जोगे मिल्यो सेवा नो जोग। । मनवांछित सहु मिल्याजी काज, कृपा कर सामों जोवो जिनराज ।३।थे। श्रावक श्राविका कई नरनार, मिलि विनंती करे वारंवार । पावापुरी मे पधार्या वीतराग, प्रगटी पुण्याई मारा मोटाजी भाग ॥४॥थे ॥ वलि हस्तीपाल राजा विनवे भूपाल, प्रभूजी थें छो दीनदयाल । सूझती म्हारे मोटी छे शाल, हवे लागो वरषाजी काल ॥५॥थे.। मानी विनती प्रभु रह्याजी चौमास, पावापुरी मे हुओ हर्ष उल्लास । गौतम गणधर गुरांजी पास, निशदिन ज्ञान को करे अभ्यास ॥६॥थे.॥ साधु अनेक रह्या कर जोड़, सेवा करे सदा होड़ा जी होड । चवदे हजार चेला रत्नां री माल, दीक्षा लीधी छोड़ माय जंजाल ॥७॥थे॥ बड़ी चेली चन्दन बालाजी जाण, हुई कुंवारी महासती चतुर सुजाण । मोती नी माला छत्तीस सार, सहु में वड़ी साध्वी सरदार ॥८॥थे.॥ चारों ही संघ सेवा नित करे, प्रभुजी ने देखी आंख्यां ठरे । नव मल्ली ने नव लिछी जी राय, ज्यारा दर्शन नी चित्त मे चाय ॥६॥थे॥ संघ सघला री हुई मन रंगरली, पुण्य जोगे प्रभुजी री सेवा मिली । ऋषि रायचद विनवे जोड़ी हाथ, करुणा सागर

बाजो जी कृपा नाथ ॥१०॥थे.॥ शहर नागौर में कियो चौमास, प्रभुजी दीजो मने मुगति रो वास । हुं सेवक तुम साहिब स्वाम, मारे और देवां सु नही काम ।११।थे०।

॥ इति ढाल दूजी समाप्त ॥

॥ ढाल तीसरी ॥

शासन नायक श्री महावीर तीरथनाथ त्रिभुवन धणी । पावापुरी में कियो चरम चौमास हुई मोक्ष दायक री महिमा घणी ॥ गौतम ने मेल दियो महावीर देवशर्मा ने प्रतिबोधवा ॥१॥ आंकड़ी ॥ उतराध्ययन नो अध्याय छत्तीस कार्तिक वदी अमावस्ये कह्यां । एक सौने वली दस अध्ययन सूत्र विपाक तणा लह्यां ॥ गोतम ॥२। पोसा कीधा श्री वीरजी रे पास देश अढार ना राजीया नव मल्ली ने नव लिच्छवीजी राय वीर ना भगत वाजिया ॥ गौतम ने ॥ ३ ॥ प्रभु शासन ना सिरदार, सर्व संघ ने संतोष में । सोले पहर लग देसना दी पछे वीर विराज्या मोक्ष में ॥ गौतम ने ॥ ४ ॥ तीन बरस ने साढा आठ मास, चौथा आरा का बाकी रह्या । दिन दोय तणो संथार मौन रही मुगते गया ॥ गौतम ने ॥ ५ ॥ इन्द्र आविया जो वृत्ति उदास, देव देवी नी साथ में । जाणे जगमग लग रही जोत, अमावस्या नी रात में ॥ गौतम ने ॥ ६ ॥ मुगति पहोंच्या एकाएक, सात सौ हुआ ज्यारे

केवली । चवदह सौ साध्वियां हुई सिद्ध, हुं सहू ने वंदू मनरली ॥ गौतम ने ॥ ७ ॥ रह्या तीस वरस घर मांय, वर्ष वयालीस संयम पालियो । प्रभु जगतारण जगदीश दया मार्ग अजुवालियो ॥ गौतम ने ॥ ८ ॥ होजी देव देवी ने वली इन्द्र, निर्वाण तणो मोच्छव कियो । अरिहंत नो पडियो वियोग, सुरनर भरयो हियो ॥ गौतम ने ॥९॥ साधु साध्वी करता शोक, श्रावक श्राविका पण घणो । भरत क्षेत्र मां पडियो वियोग, आज पछी अरिहंत तणो ॥ गौतम ने ॥ १० ॥ पछे बेठा सुधर्मा स्वामी पाट, चारों ही संघ सेवता । ज्यारी पालता अखंडित आण, सेवा करे देवी ने देवता ॥ ११ ॥ मुगते पहुंच्या श्री महावीर, प्रभु सुख पाम्यां छे शाश्वतां । ऋषि रामचंद्रजी कहे एम म्हारे अरिहंत वचनां री आसता ॥ गौतम ने ॥ १२ ॥

॥ इति तीजी ढाल सपूर्ण ॥

चौथी ढाल प्रारम्भ

श्री महावीर पहोच्या निर्वाण, गौतम स्वामी ए बात जाणी । ॥ गुरांजी थे मने गोडे न राख्यो ॥टेर॥१॥ मुगती जावण रो नाम न दाख्यो ॥ गु. ॥ २ ॥ हुं सगला पहेला हुवो थांरो चेलो इण अवसर आगे किंऊ मेल्यो ॥ गु ॥ ३ ॥ प्रभु तुम चरणो मारो चित लाग्यो पण मने मेल दियो आगो ॥ गु ॥ ४ ॥ मने दर्शन

लागतो प्यारो, पहुँचता निर्वाण मने मेल दियो न्यारो ॥ गु ॥ ५ ॥ आप तो मुझसुं अंतर राख्यो, पिण मे मारा मन रो दरद न दाख्यो ॥ गु ॥ ६ ॥ हुं आडो मांडी ने न झालतो पल्लो, पण साहिब काम कियो नही भलो ॥ गु ॥ ७ ॥ हुॅं तुम ने अंतराय न देतो, मुगती में जगा व्हेंची नही लेतो ॥ गु ॥८॥ हुं सकड़ाई न करतो कांई, आप साथे हुं मोत्त में आई ॥ गु ॥ ६ ॥ अब हुॅं पुच्छा करशु किण आगे, प्रभु मारो मनड् क थां सुज लागे ॥ गु ॥ १० ॥ म्हारो सांसो कहो कुण टाले, आप विन आंकड़ी कुण गाले ।गु ।११। हुं तो चउदे पूरवनो चौनाणी, पिण मोहनी कर्मे लपेट्यो आणी ॥गु॥१२॥ ऐसो गौतम स्वामी कियो विलपात, मोहनी कर्म नी अचरज बात ॥गु॥१३॥ हवे मोहनी कर्म दूर टाली, गौतम स्वामी ए सुरत संभाली । वीतराग राग द्वेष सु जीत्या ॥आं ॥१४॥ म्हारा चित्त मां आइ गई चिंता ॥वी ॥१५॥ तिण वेला निर्मल ध्यानज ध्यायो, केवल ज्ञान गौतम स्वामी पायो ॥वी.॥१६॥ बारह बरस रहया केवल ज्ञानी, बात जां सु कोई नही रहे छानी ॥वी ॥१७॥ जेणी राते मुगति गया वर्द्धमान, इन्द्र भूति ने उपन्यो केवल ज्ञान ॥वी.॥१८॥ गौतम पण कियो मुगति में वासो, संसार नो सर्व देखी तमासो ॥वी.॥१६॥ तिण दिन तो ए वाजी दीवाली, मोटा दिन ए मगल माली ॥वी.॥२०॥ रात दिवाली ने

शील थे पालो, वली रात्री भोजन करनो टालो ।वी.।२१। ऋषि रायचंद कहे सुणो ज्ञानी, दया रूप दिवाली थें ले जो मानी ॥वी ॥२२॥

॥ इति महावीरं स्वामी की ढाले सम्पूर्ण ॥

॥कलशः॥ श्री शासन नायक सुगति दायक दया मारग अजुवालियो । श्री गौतम स्वामी सुगति गामी, कियो चित्त वल्लभ चौढालियो ॥ संवत अठारे गुणचालीस नागौर चौमासो निर्मल मने । पूज्य जैमलजी प्रसादे पूर्ण कियो दिवाली दिने ॥

॥ अथ: श्री विजयकुंवरजी की ढालें प्रारम्भ ॥

दोहा:-आदिनाथ आदीश्वरो, सकल विदारण कर्म । पर उपकारी भव तणो कह्यो चार प्रकारे धर्म ॥१॥ दान शील तप भावना, इन बिन मुक्ति न होय । तो पिण सहु व्रत देख लो, शील समो नहीं कोय ॥२॥ विजयकुंवर विजया वली, शील पाल्यो खड्ग धार । तेय तणा गुण वरणवूं, इम सूतर रे अनुसार ॥३॥ सुन कर कीजै सारी सभा, पर नारी रा पच्छखाण । पांच तिथि दिन आखड़ी करो यथा शक्ति परमाण ॥४॥ जोबन वय थका जोब में, जो रेवे नारी रे पास । बाल ब्रह्मचारी तेहने, कियो दुक्कर प्रणाम ॥५॥

॥ ढाल पहली ॥

जम्बुद्वीप रा भरत में, दक्षिण कच्छ देशोजी । नगर कोसंबी नेयनी इन्द्रपुरी नव लेसोजी ॥शील तणी महिमा सुनो ॥टेर॥१॥ धन्नो सेठ तिहां वसे, तेना विजय-कुमारोजी । रूप कला गुण आगला जोबन में हुसि-यारोजी ॥शील॥२॥ तिण अवसर मुनि पधारिया, समिती गुपति अगोपीजी । आप तरिया सहु ने तारिया लोक कहे सुन धन्नोजी ॥शील॥३॥ लोक गया मुनि वंदवा, जिण में विजयकुमारोजी । धर्म कथा मुनिवर कहे चेतो सहु नर नारीजी ॥शील॥४॥ जन्म जरा दुख मरण रा, कहतां न आवे पारोजी । नर भव पामणो है दोहलो, चेतो सहु नर नारीजी ॥शील॥५॥ कष्ट घणो कर्म बंध रो विषय विष विकारोजी । नव लाख सन्नी मनुष्य ना श्री जिनेश्वर भाखोजी ॥शी॥६॥ दुख देख्या अग्नि जोग से, पर नारी दुःख री खानोजी । फल किंपाक री ओपमा, भाख गया भगवानो जी ॥शी.॥७॥ जाव जीव परनार रा, मुनि मुझ ने पच्छखाणोजी । स्व दारा का जाव जीव कृष्ण पक्ष का त्यागो जी ॥शी.॥८॥ एम सुणी ने सहु थरहरिया, विजय कुमार जोड्या हाथो जी । प्रभु मुझ संयम लेवारी, सामर्थ नहीं कृपा नाथोजी ॥शी.॥९॥ दुष्कर काम कुंवर किया, मुनिवर कर गया विहारो जी । राम कहे धन

शील ने, पालो सहु नर नारो जी शी.॥१०॥

॥ इति पहली ढाल समाप्त ॥

दोहा:-तिणज नगरी में वसे अपर सेठ धन सार।
तेनी विजया सुन्दरी, अद्भुत रूप रसाल ॥१॥
सेणी चतुराई बोलता, चौसठ कलानी भंडार।
भर जोबन आई कदा, साधे विजय कुमार ॥२॥
आरण कारण सांचव्यो, विवाह मंडयो तिणवार।
जैसी विजया सुन्दरी तैसा विजय कुमार ॥३॥

॥ ढाल दूसरी ॥

सोलह शृंगार सजीजी बाला, जाय ऊबा हो रंग महल मंभार। नेण वेण त्रिया मोहता इम बोले हो श्री विजय कुमार ॥ सुणजोजी शील सुहामनो ॥ टेर ॥१॥ कंथा कहे भल आवियाजी दिन तीन नहीं आवण जोग। शुं कारण कहे सुन्दरी वरजो इण अवसर मोय ॥सु.॥२॥ कृष्ण पक्ष में व्रत लियो जी, इम सुन कर हुवो जी उदास। शुक्ल पक्ष मे व्रत लियो, दूजी परणो हो मांडो घर बार ॥सु.॥३॥ विजय कुंवर कहे सुण त्रियाजी सहज ही टलियो अनरथ को मूल। जाव जीव व्रत पालसां, नर मूरख हो रह्या भूल ॥सु.॥४॥ काम भोग बहु भोगव्याजी, एम रुल्या हो अनंती बार। तृप्त नहीं हुओ जीवड़ो, एम बोले हो विजयकुमार ॥सु.॥५॥ कहे

प्रीतम प्यारी सुणोजी, केम ऐसी हो या छानी वात। प्रगट हुवा संयम लेसां पछे लड़सा ओ करमां रे साथ ।।सु.।।६।। करे समायां पोसा भेलाजी, एक सेज मंझार। ज्यूं रहे भगिणी भ्रात सुं जी, शील पाले खांडा री धार ।।सु.।।७।। मन वचन काया करी जी नही जागे हो काम विकार। सार धर्म जाण्यो जिन तणो दूजा जाण्यो सहु संसार ।।सु.।।८।। नहीं रुचि पुद्गल ऊपरे जी वांरे लेखे हो लेखे अवतार। राम कहे ढाल दूसरी, संयम पालो नर नार ।।सुणोजी शील सुहामणो।।९।।

दोहाः-चरम शरीरी महा उत्तम ज्ञानी किया गुण ग्राम।
एम सुण्या विस्मय थया, सब कोई करो प्रणाम ।१।
लच्मी भाग न राखती, के दाता के सूर स्वभाव।
इत्यादिक मोय छाना रया, विमल देख्यो कविसर प्रकाश ।।२।।

।। ढाल तीसरी ।।

तिण अवसर तिण काल, दच्चिण दिशमाय ओ सुखकारी मुनिराज। विमल केवली नामे मुनिवर सोवे हो जिणंद ।।१।। चम्पापुरी का बाग में उतरया ओ सुखकारी मुनिराज। बहु नर नारी मुनि वंदन परवरिया हो जिणंद ।।२।। ओ संसार असार मुनि दिखलायो ओ सुखकारी मुनिराज। तन धन यौवन जाता वार न लागे हो

जिणंद ॥३॥ माता पिता सुत भगिणी संग नहीं चले ओ सुखकारी मुनिराज । सुख सब छांडी ने चेतन, पर भव जासी हो जिणंद ॥४॥ इत्यादिक मुनि धर्म देसना, दीधी हो सुखकारी मुनिराज । सुण कर सुरपति अमृत रस कर पीधा हो जिणंद ॥५॥ विषय विकार परमाद नर भव हारिया, ओ सुखकारी मुनिराज । मूरख चेतन रत्न चिंतामणि, डाले हो जिणंद ॥६॥ जिनदास श्रावक मुनि ने शीश नमावे ओ सुखकारी मुनिराज । ए प्रभु मुझने रेण सपनो दीठो हो जिणंद ॥७॥ लाख चौरासी मास खमण मुनि राया हो सुखकारी मुनिराज । मैं प्रतिलाभ्या प्रभु, निरदोपस हो जिणंद ॥८॥ ते नो सहु फल दाखो कृपा करने ओ सुखकारी मुनिराज । भाखे मुनिवर सेठ सुणो चित्त धरने हो जिणंद ॥९॥ नगर कोसंबी विजय कुंवर गुण धारी, ओ सुखकारी मुनिराज । ते कर्म जोगे धर्म पति बाल ब्रह्मचारी हो जिणंद ॥१०॥ रास कहे धन्य शील पाले नर नारी ओ सुखकारी मुनिराज । वारी वारी जाऊं हुं ज्यांरी बलिहारी हो जिणंद ॥११॥

॥ इति तीजी ढाल सपूर्ण ॥

ढाल चौथी प्रारम्भ

जिनदास श्रावक मुनि वंदवे, हो भवियण, नगर कोशंबी मांय । बहु परिवारो परवरिया, हो भवियण,

दरशन की मन मांय ॥ धन्य २ नेमने, हो भवियण, जो पाले ब्रह्मचार ॥टेर॥१॥ नगर कोशंवी का बाग में, हो भवियण, सेठजी डेरा दिराय । विजय कुंवरजी का तात ने, हो भवियण, मिलवा हर्ष अपार ॥धन्न॥२॥ सेठ कहे किम पधारिया, हो भवियण, दाखो मुझ ने वात । धरम सगपण हम आविया, हो भवियण, तुम सुत दर्शन काज ॥धन्न॥३॥ विमल केवली गुण किया, हो भवियण, बाल ब्रह्मचारी तेय । तुम दर्शन की मन मांय वसे, हो भवियण, चित में होवे चाव ॥धन्न॥४॥ सेठ सुणी रीस में थया, हो भवियण, लिया कुंवर बुलाय । कैसी भांत का सोगन लिया, कुंवरजी, कांई थांरा मन मॉय ॥धन्न॥५॥ कर जोड़ी कुंवर कहे, हो तातजी, लीनो अभिग्रह धार । आज्ञा दीजो मुझ भणी, हो तातजी, लेसां संजम भार ॥धन॥६॥ सेठ कहे कुंवर भणी, हो कुंवरजी, कठिन मुनि आचार । पड़िया घर का किम रेवे, हो कुंवरजी, मेरु जितना भार ॥धन॥७॥ लाख प्रकारे नही रहॉ, हो तातजी, संजम लेसां भार । वैरागी पण नही रहे ओ तातजी, संयम सुख दातार ॥धन॥८॥ विजया कुंवर पण लीधो हो भवियन, शुद्ध पाले आचार । जप तप करणी खूब करी, हो भवियन, दोनुं पाम्या केवल ज्ञान ॥धन॥९॥ ब्राह्मी ने सुन्दरी दोनुं बेनड़ी हो भवियन शुद्ध पाले आचार । जप तप करणी खूब करी, हो भवियन, दोनुं

पाम्या केवल ज्ञान ॥धन॥१०॥ समत अठारे दश में, हो भवियन, नागोर शेखे काल। फागण सुदी पूनम दिने, हो भवियण, जोड़ी जुगत से ढाल ॥धन॥११॥ स्वामी वृद्धिचंदजी का प्रसाद से, हो भवियन, राम किया गुण ग्राम। ओछो अधिको जे कह्यो, हो भवियन, मिच्छामि दुक्कड़ो मोय ॥धन॥१२॥

॥ इति श्री विजयकुवरजी की ढालें सम्पूर्ण ॥

अथ विनय आराधना नुं चौढालियो प्रारम्भ।

दोहा—श्री जिनराज प्ररुपियो, विनयमूल जिनधर्म। यूं जाणी भवि आदरो टूटे आठों कर्म ॥१॥ विनय बिना शोभा नहीं नाक बिना जिम नूर। जीव बिना जिम देहड़ी शस्त्र बिना जिम शूर ॥२॥ नमसी सो सुख आपने इण में शंका न कोय। डाल तराजू तोलिये नमें सो भारी होय ॥३॥ आंब आंवली जम्बुदिक उत्तम वृक्ष नमंत। तिम सुगुणी जन जाणिये मध्यम तरु अकड़ंत ॥४॥ मात पिता सु अधिक ही, गुरु उपकार अपार। टाले अशातना सर्व थें जो तरणो संसार ॥५॥ धर्म गुरु मत वीसरो, पल पल गुण करो याद। सुगुणा जन सुणजो तुमें गुरु गुण अगम अनाद ॥६॥

॥ ढाल पहली ॥

गुरु गुण समरो रे भावे, मोक्ष मार्ग गुरु बिन नहीं

देवण की मनवारो। गुरु ने बिन पूछां पर सोंपे सोलमी ए अवधारो ॥जा.॥४॥लूखो सूखो निरसो,विरसो गुरु ने दीनो चहावे। सरस आहार मन गमतो देखी आप लेई हरखावे ॥जा.॥५॥ रात्रे सूतो गुरुजी पूछे कुण सूतो कुण जागे। सुण कर उत्तर दे नहिं जाणे कामज करणो लागे ॥जा ॥६॥ गुरु बतलावे कारण पड़िया उत्तर दे आसण बेठो। उठण केरो आलस अंगे काम करण में ढीठो ॥जा.॥७॥ गुरु बतलायो कोईक कारण सुणी करे अण-सुणियो। जाणे कोई काम बतासी राखे मन अनमणियो ॥जा.॥८॥ गुरु बतलायो बेठो बेठो, शुं कहो शुं कहो। बोले। तहत वाणि मथेण वंदामि, सो तो कहे ना भोले ॥जा ॥९॥ गुरु गरढा तपसी नी वयावच्च करता निर्जरा भारी। एम सुणी सो कहे अपुठो तुमने शुं नहिं प्यारी ॥जा.॥१०॥ गुरु देवे हितशिक्षा आणी ज्ञान दीपक उज-वालो। कहे अपुठो गुरु सुं मूरख पोते किम ना पालो ॥जा.॥११॥ तुं तुकारो देवे गुरु ने, ऐसो मूरख प्राणी। गुरु उपदेश देवे भविजन ने, आणे चित्त अकुलानी ॥जा.॥१२॥ गोचरी वेला हुई झाझेरी, दिन चढ्यो नहीं दीसे। वखाण थोभे नहीं भूख ज लागी, बोले भरियो रीसे ॥जा ॥१३॥ गुरुजी अर्थ कहे भविजन ने बीचे बीचे बोले। कहे थांने शुद्ध अर्थ न आवे वर्ष निकाल्या भोले ॥जा.॥१४॥ गुरुजी कहतां शिष्य पजंपे याद पूरी नहीं

थाने । मैं कहुँ सावत बात बनाई गुरु कथा छेदी वखाणे ॥जा ॥१५॥ गुरु वखाण करे तिन मांही कोइक काम बताई । पपंदां मांही भेदज पाड़े, मूरख समझे नांही ॥जा ॥१६॥ गुरु वखाण करीने उठे तिणहीज सभा मझारे । सोहीज शात्र सोहीज गाथा करे अरथ विस्तारो ॥जा ॥१७॥ हीणता जतावे निज गुरु केरी पंडितपणो बतावे । लोकसरावण सुण कर मूरख, मनमे अति अकड़ावे ॥जा ॥१८॥ गुरु नां आसण ओघो पूंजणी पगसुं ठोकर देवे । गुरु ने आसणे स्वे वेसे ऊंचो आसण ठेवे ।जा.।१९। गुरु नी प्रशंसा करे न पोते, सुण कर अति मुरझावे । तेतीस अशातना सूल कही सो, जड़ा मूल सूं ढावे ॥जा ॥ ॥२०॥ गुरु ने आगे वस्तर केरी पालठी मारी वेसे । कर बांधे किरसाण जु भोलो, टेके वैठे विपेशे ॥जा.॥२१॥ पाय पसारी आलस मोड़े पग पर पग चढावे । विकथा मांडे कड़का मोडे गुरु ने नही मनावे ॥जा ॥२२॥ हड़बड़ हंसे शरम नही राखे, जिम तिम बोले वाणी । काम करे गुरू ने विन पूछियां विच विच बात ले ताणी ॥जा.॥२३॥ गुरूजी कोईक चीज मंगावे, जावण को मन नाही । उत्तर टाले चोज लगाई ते सुणजो चित्त लाई ॥जा ॥२४॥ हाल वखत नही गोचरी केरी, अथवा नर नहिं घर में । दिया होसी किवाड़ बारणे, मिले न इण अवसर में ॥जा.॥२५॥ वहरावण रा भाव न दीसे, अथवा जिण रे नांई । असूजता

के सुता होसी वस्तु न मिलसी ठाई ॥जा.॥२६॥ अबार तो हुँ आखर सीखुं लिखसुं पानो पूरो । पलेवणो तथा थंडिल जानो, अथवा घर छे दूरो ॥जा.॥२७॥ सो तो कंजूस तथा मिथ्यात्वी मुझ ने नहीं पिछाणे । शरम आवे मुझ भीख मांगता, जाऊं केम अजाणे ॥जा ॥२८॥ मुझने ठंड वाय न सोसे, तड़को चढियां जासुं । कहे उन्हालो पांव बले मुझ, दिन ढलिया थी सिधासु ॥जा.॥२६॥ चोमासे कहे कीचड बहुलो, पग लपसे छे महाराज । भूख लागी थकेलो चढियो, पग अकड़्या छे सारा ।जा.।३०। म्हारा शरीर में अड़चन दीसे चालण शक्ति नांइ । एक बार में आणी दीधो अब भेजो परतांईं ॥जा.॥३१॥ एक काम करावे तिण में, जाणी ढील लगावे । जाणे जलदी करसुं कारज फेर मुझ और बतावे ॥जा.॥३२॥ विनय वंदना करे न पहेली, कहे मुझ ज्ञान सिखावो । पाछे करजो काम तुम्हारो पहेला बोल बतावो ॥जा.॥३३॥ संयम लीधो मैं तुम पासे, एता दिन के मांही । काम काम में काल बितायो, ज्ञान सिखायो नांई ॥जा.॥३४॥ अवगुण आपना देखे नाही बात करण को तसियो । पेट भरीने नीदज लेवे, विकथा सुणवा रसियो ॥जा ॥३५॥ सामी सांज सुं पाय पसारे, भणियो सो न चितारे । टेके बेठा अक्षर सीखे भली सीख नहीं धारे ॥जा.॥३६॥ गुरु की कहनी करे वेठ ज्युं, अवगुण ताके परका । सुअर

अछा खावे खीर तज, ए लक्षण तिण नरका ॥जा.॥३७॥
अभिमानी अरु क्रोध घणेरो, चाले आपणे छन्दे । आप
करे गुरु छानो कारज, परना अवगुण निंदे ॥जा.॥३८।
गुरु देखी ने अन्तर घेखे, दीसे घणो सियाणो । पीठ
फेरियां छांदे चाले जाणे जग को राणो ॥जा॥३९॥
आपणे हाथे काम ज बिगड़े, पर ने माथे नाखे । गुरु
पूछयां गुर्रावे श्वान ज्युं, रंच न सांचु भाखे ॥जा॥४०॥
और अशातना भेद घणेरो पूरो कयो न जावे । तिलोख
रिख कहे ढाल दूसरी, भविक सुण हरखावे ॥जा॥४१॥

॥ दोहा ॥

जे अविनय थी डरे नहीं, करे आशातना कोय । ते दुख किण पर भोगवे सांभलजो भविलोय ॥१॥ सड्या कान की कूतरी जिण घर जावे चाल । निकाले दुर दुर करे तिण विध होय हवाल ॥२॥ परभव किल्विष देव में, उपजे सो अविनीत । तिहांथी मरि चउगति में होवे पूरी फजीत ॥३॥ गुरु बालक वृद्ध अणभण्या, ते पण अविनय टाल । अग्नि जेम सेवन किया सातां लहे विशाल ॥४॥ सुतो सिंह जगावणो, खेरं अंगारे पाय । गिरि खणावे जेम नख थकी पोते अशाता थाय ॥५॥ करतल मारे शक्ति पर, विष हलाहल खाय । मिरचां आंजे आंख में पोते अशाता थाय ॥६॥ एतो देव प्रभाव थी, विघन हरे

नहीं काय । अशातना फल न टले करतां कोई उपाय ॥७॥ एक वचन ज्ञानी तणुं जो धारे नर नार । तास अविनय तजवो कयो दशवैकालिक मांय ॥८॥ जिन पासे धारण कियो, संजम शिव दातार । तेनी करे अशातना सो मूरख सिरदार ॥९॥ नीति शास्त्र पण दाखियो, सात वार होय श्वान । सौ भव लहे चंडाल ना आगे लहे दुख खान ॥१०॥ गुरुजी निंदा करे तो वो, महापापी कहवाय । सर्व शास्त्रे दरसावियो मुक्ति कदही न जाय ॥११॥ के बहरो के बोबड़ो, के दुर्बल के दीन । जिन मारग पावे नहीं जो करे गुरु की हीन ॥१२॥ इम जाणी भवि प्राणियां करो विनय गुरु देव । ते सुणजो सुगुणा तमे किण विध करीये सेव ॥१३॥

॥ ढाल तीसरी ॥

विनय करीजे भाई विनय करीजे, विनय करी ने शिव रमणी वरीजे ॥टेर॥ श्री गुरु सेव करो मन रंगे, मोह कलेष कुमति सब भंगे । संजम किरिया गुरुमुख धारो लुल लुल नमन करी गुरु ठावो ॥वि.॥१॥ गुरु बतलाया तहत्त उच्चारो, क्रोध मान सब दूर निवारो । कठिण सुनी श्री गुरुजी की वाणी, रीस करो मत हेत पिछाणी ॥वि.॥२॥ फरमावे गुरु काम जो कोई, जेज न करणी अवसर जोई । गुरु मुझ ऊपर कृपा कीनी,

नेजॅरा रूप प्रसादी दीनी ॥वि.॥३॥ अंग चेष्ठा श्री गुरु की देखी, सो कारज करणो सुविवेकी । वैयावच्च करतां आलस छोड़ो भक्ति कियां पहेली मत पोड़ो ॥वि.॥४॥ प्रश्न पूछतां हाथ जी जोड़ो, शीश नमावी मान जी मोडो । मधुर वचन प्रशंसा करके ज्ञान सीखो अति आनंद धर के ॥वि.॥५॥ छोटा मोटा सुं हिल मिल रहीजें, अधिक भण्या को गर्व न कीजे । खार रोप किण सुं राखणो नांई, महारो थारो करो मत कांई ॥वि.॥६॥ वाद विवाद भोड़ मत मांडो, विकथा वात तणो रस छांडो । वचन कहो मत कोई मर्म नो, मन मे सदा डर राखो कर्म नो ॥वि.॥७॥ रीस वसे पातरा मत पटको, भजको खाई दुजा पर तटको । जेम तेम बड़ बड़ नहीं करिये, लोक व्यवहार सुं अधिको डरिये ॥वि॥८॥ ऊंचे शब्द करो मत हेला, सुण कर लोक हो जावे ज्युं भेला । जैन मार्ग की लघुता आवे, संसारी सगा सुण दुख पावे ॥वि.॥९॥ प्रिय धर्मी की आस्ता छूटे क्रोधरिपु संजम धन लूटे । ऐसो काम करो मत शाणा, इण भव निंदा आगे दुःख पाणा ॥वि.॥१०॥ रिद्धी छोड़ी जिण रो गर्व न कीजे, अधिक गुणी पर नजर जो दीजे । आगल का अवगुण मत देखो, अपणा अवगुण को करो लेखो ॥वि.॥११॥ बाल तरुण वृद्ध जो नर नारी, सब थी जी कारे बोलो विचारी । तुं तुं तुंकारो ओछी बोली, करिये

नहीं कुछ ठट्ठा रोली ॥वि.॥१२॥ नीचे देखी धीरे पग मेलो, न्याय प्रमाण सुणी मत ठेलो । संजम काम में निर्जरा जाणो, उज्ज्वल भावे शंका मत आणो ।वि ।१३। पंच व्यवहार प्रमाण करीजे, निश्चे व्यवहार की नय समभीजे । उत्सर्ग और अपवाद पिछाणो, सतगुरु वैन करो प्रमाणो ।।वि ।।१४।। इण विध करणी भव जल तरणी, दुःख दुर्गति आपद हरणी । त्रीजी ढालें विनयरीत वरणी तिलोखरिए कहे शिवसुख वरणी ॥वि.॥१५।

दोहाः—मान बड़ाई इर्षा, क्रोध कपट दे टाल । म्हारो थारो छोड़ के चाले रूडी चाल ।। विनय करे गुरुदेव को करे आज्ञा परिमाण ।। तिणने महागुण नीपजे ते सुणजो भवि जाण ।।

॥ ढाल चौथो ॥

विनयतणा फल मीठा, हलुकर्मी सुणकर हरखावे । मुरभावे नर ढीठा रे ।। भाई ।। विनय तणा फल मीठा ।।टेर।। प्रगमे ज्ञान विनीत शिष्य ने, ज्ञान थकी भ्रम भाजे ।। भ्रम गया सुं समकित पुष्टी, समकित सुं व्रत छाजे रे ।।भाई।। वि. ॥१॥ व्रत पाल्यां सु धन धन बाजे आदर अधिको थावे ।। खमा खमा करे नर नारी, मनगमती वित पावे रे ।।भा.।।२।। विनयवंत शिष्य ने सीख चोखी होवे सुशाताकारी । इण भव मांही रिद्धि सिद्धि

संपत्ति, परभव मे सुख त्यारी रे ॥भा.॥३॥ होय आराधक सुरपद पावे, महल मनोहर भारी ॥ रतन जड़ित पचरंग मनोहर, वास कुसुम छवि प्यारी रे ॥भा.॥४॥ कंकर कंकट पंक रजादिक, नीच अपावन नाई ॥ जाली झरोखा जगमग दीपे सुगंध रही महकाई रे ॥भा.॥५॥ बत्तीस नाटक निशि दिन होवे राग छतीस अलापे ॥ धपमप धपमप बाजे मृदंगा, सुणतां श्रवण नहीं धापे रे ॥भा ॥६॥ नाना प्रकार हार जिहां लटके, तोरण विविध प्रकारे ॥ आथडतां होवे नाद मनोहर, जाणे कोई देवी उच्चारे रे ॥भा.॥७॥ दोय सहस वर्ष छोटा नाटक में, मोटा में दस हजारो ॥ एक महूरत को काल ज्युं बीते विनय करणी फल धारो रे ॥भा.॥८॥ पल सागर तिथि एम निकाली तिहांथी चवी नर थावे ॥संजम धारी करम निवारी ज्ञान केवल सोही पावे रे ॥भा.॥९॥ होय अयोगी मुक्ति सिधावे, शाश्वता सुख जाणो ॥ विनय करण फल पार न पावे शास्त्र को भेद पिछाणो रे ॥भा ॥१०॥ सुणतां तो आनंद बढावे, गुणतां बुद्धि प्रकाशे ॥ पालतां तो शिवना फल लहिये राखो चित्त विश्वासे रे ॥भा.॥११॥ सवत उगणीसे छत्तीस साले तेरस वदि वैसाखे ॥ विनय फल ढाल कही छे चौथी सर्व सिद्धांत की साखे रे ॥भा.॥१२॥ देश दच्छिण विचरतां आया, खानरा हिवड़ा मंझारो ॥ तिलोख

रिख कहै मूल धरम को, करवा पर उपकारो रे ।।भा.।।१३।। सुण कर राग द्वेष मत करजो समुचय दियो उपदेशो ।। नही मानो तो मरजी तुम्हारी निज करणी फल लेशो रे ।।भा.।।१४।। दान शील तप भावना भावो ए जग मे तंत सारो ।। पालो आराधो विनय यथारथ उतरोगे भव पारो रे ।।भा.।।१५।। कलश।। विनय करणी, दुःख हरणी सुख निसरणी जाणिये ।। इणलोक शोभा आगे शुभगति सिधान्त न्याय वखाणिये ।। धरम मूलसो, विनय दाख्यो सीचे तो फल पाइये ।। कहे रिख तिलोक भवि का आराध्यां शिव जाइये ।। सम्पूर्ण ।।

।। अथ शील नी नव बाड़ प्रारम्भ ।।

श्री नेमीश्वर चरण नमुं, प्रणमुं उठ प्रभात । बावीसमां श्री जगत गुरु, ब्रह्मचारी विख्यात ।।१।। सुन्दर अपसरा सारिखी, रतिसंभव राजकुमार । भर यौवन में जुगत सुं छोड़ी राजुल नार ।।२।। ब्रह्मचारी जिन पालतां धरता दुष्कर जेह । ते तणा गुण वरणवुं, पावन होवे देह ।।३।। सु गुरु पोते कहया, रसना सहस्त्र बनाय । ब्रह्मचारी मे गुण घणा तो पिण कहया न जाय ।।४।। गलत पलत काया थयी तो पिण न मूके आस । तरुण-पणे व्रत धारिया बलिहारी जिनराज ।।५।। जीव विमासन जो मिले विखम राज गिनार । थोड़ा सुखां रे कारणे

भूरख होसी बदहाल ॥६॥ दस द्रष्टांते दोहिलो लाधो नर नर भव सार । शील पालो नव बाड़ सु ं सफल करो अवतार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥

सील सुरतरु सेवियै, व्रत में गिरुआ जेवो रे । दंभ कदा ग्रह छोड़ ने धरियै तिण सु ं नेहो रे ॥१॥ जिन शासन वन अति भलो, नंदन वन उणिहारो रे । जिनवर धन पालक तिहां, करुणा रस भंडारो रे ॥सी ॥ मन थारो तरु रोपियो, वीजी भावना अंबोरे ॥ सदा सारुण तिहां रहेवे विमल वमकित अंबोरे ॥सी ॥३॥ मूल जा दृढ़ समकित भलो खंदन देदंत दाखों रे । साखमहाव्रत नेहने, अणुव्रत लेवो लघु शाखो रे ॥सी.॥४॥ श्रावक साधु तणा घणा, गुण विन पात्र अनेको रे । मोह करम शुभ बांधवा, परिमल गुण अतिरेको रे ॥सी ॥५॥ उत्तम सुर सुख फूलड़ा शिव सुखते फल जाणो रे । जतन करी व्रत राखजो हिवड़े अतिरंग जाणो रे ॥सी.॥६॥ अध्ययन उत्तराध्याय सोलमो वंव सामयिक थायो रे । किदी तरु ते पंखानि, ये नववाड़ सुजाणो रे ॥सी ॥७॥

हवे प्राणी जाणी करी, राखो प्रथम बाड़ ।
जो मांगी ने विनसिये, प्राणी पर आधार ॥१॥
जेम तेम खंडन करे, जो प्रमाद के माय ।
शील वृक्ष उपाड़ता, तुरंत बाड़ विनास ॥२॥

॥ बाड़ पहलो ॥

भाव धरी नित पालजो, गिरुओ व्रत अतिसार हो भवियण। त्याथी शिव सुख पामिजो, सुन्दर तणो सिणगार हो भवियण ॥भाव ॥टेर॥१॥ तिरिया पशु पंडक रेवे, तिहां नही रेवे वास हो भ । तिणरी संगत निवारजो, व्रत रो करे विनाश हो ॥भ.॥भा.॥२॥ मंजारी संगत रमे कुरकुट, मूसा रे संग मोर हो भवि.। कुशल किहां थी तेहने पामे दुख अघोर हो भवि. ॥भा ॥३॥ अग्नि कुंड के पास रहे, पिघले घृत तणो कुंभ हो भवि.। नारी संगत पुरुष जो रहेवे किम रेवे प्रतिबंद हो भवि. ॥भा ॥४॥ सिंह गुफा वासी यत्ति, रया कोशाल चित्रसाल हो भवि. ॥ तुरंत पड़ियो बस तेहने, देश गयो नेपाल हो भवि.॥भा.॥५॥ अकल विकल विना बापड़ा, पत्ती करता केल हो भवि.॥ दिठी लिछमन महासती, रुली घणी इण बेल हो भवि.॥भा.॥६॥ चित चचल पंडग केरो, बरतं तीजो वेद हो भवि. ॥ तज संगत रति तेहनी, कहे मुनि उमेद हो भवि.॥भा.॥७॥

अथवा नारी एकली भली न संगत थाय।
धर्म कथा नाहीं सुनै, बैठे तिणरे पास ॥१॥
त्यांथी औगुण ऊपजे, संका पामे लोग।
अनछतो आल आवसी, बीजी वाड़ विनास ॥२॥

॥ वाड़ दूसरो ॥

जाति रूप कुल देशनारे, रमणी कथा कहीजे ॥ तेनुं ब्रह्मचर्य व्रत किम रेवे रे ॥ किम रेवे व्रत में नैयो प्राणी ॥ नारी कथा रे निवार ॥१॥टेर॥ चन्द्रमुखी मृग लोचनी रे, वेणी जाणे भुजंग ॥ दीप शिखा जिम नासिका रे, अर्ध प्रवाली सुरंगो रे प्राणी ॥ना॥२॥ वाणी कोयल सारखी रे वरण मुकुंद अरोर ॥ हंस मंगल गज चालती रे कहे जिनवर प्रसंगोरे प्राणी ॥ना.॥३॥ रमणी रूप इम वरणावुं रे, आणी विषय मन रग ॥ मूढ़ लोगा ने रीझवा रे, भेदे अंग आनंदो रे प्रा. ॥ना.॥४॥ अभ्यंतर मन नो कोथलो रे, कालो काजल नो ठाम ॥ बारे सुरतरु वेश-नारे चरम दीवड़ली नायो रे प्राणी ॥ना.॥५॥ चक्री चौथो जाणियो रे देवता दीठा आय ॥ क्षण मे ते विनासियो रे रूप अनंतो केवाय रे प्राणी ॥ना.॥६॥ देही औदारिक कारमी रे क्षण मांहे भंगो थाय ॥ सात धातुरी माकुली रे जतन करंता जावे रे प्राणी ॥ना ॥७॥ नारी कथा विकथा कही रे, जिनवर बीजे अंग ॥ अनर्था दंड ते आठमो रे, कहे जिनवर प्रसन्नो रे प्राणी ॥ना ॥८॥

दोहा—ब्रह्मचारी साधु सती न करे नारी प्रसंग । एक ही आसन बैठतां, होवे व्रत में भंग ॥१॥ पावक गाले लोयने पावक जोड़े संग । इम जाणी रे प्राणियां तज आसन त्रिया संग ॥

॥ वाड़ तीसरी ॥

तीजी वाड़ हिवे चित्त विचारो, नारी सहित बैठनो निवारो रे लाल ॥ एकण आसन इम दुख जाणो, चौथा व्रत में दोष लगावे लाल ॥१॥इम बेसंता असंग थावे,असंग काया फरसावे लाल ॥ काया फरसे ने विषय रस जागे, त्याथी अवगुण थावे लाल ॥२॥ जोवो श्री संभव प्रसिद्धो तन फरस न्यारो कीधो लाल ॥ द्वादशमो चक्री अवतरीयो चित्त प्रतिबोध तेने दीधो लाल ॥३॥ इम उपदेश लेश नहीं लाग्यो कायर थयी ने भागो लाल ॥ सातवी नरक तण दुखकारी नरक तणी साँची सेलाणी लाल ॥४॥ एकजी आसन इम दुख जाणो, निज आतम हित परिहरो लाल ॥ माँ बहन औ बेटी जी थावे, जो बेठे ने उठ जावे ओ लाल ॥५॥ कलपे मुहूर्त एक न पछे जिनवर की वाणी सुणो ओ लाल ॥६॥

दोहा—चित्र लिखंती पूतली तो पण जोवे नांय ॥
केवल ज्ञानी इम कयो,दशवैकालिक मांय ॥१॥
नारी भेष नरपति थयो चत्तु कुशलयो केवाय ॥
लचमण चौथी बाड़ तज रूलियां छे ऋषि राय॥२॥

॥ वाड़ चौथी ॥

मनहर इन्द्री नारी ने देखी वधे विकार भाग्ये लंका में मृगलो रे फांस रचियो करतार ॥ सुगुण रे नारी रूप

न जोय ॥टेर॥१॥ नारी रूपी दीवलो,कामी पुरुष पतंग ॥ झंपे सुखरे कारणे दाझै अंग आनंदो सुगुण रे ॥ना ॥२॥ मन गमता रमता हिवे रे उरक सुरक सु वंध ॥ आहार लेई भोगी धस्यो रे जोवंता व्रत भंग सुगुणरे ॥ना॥३ हाथ पांव छेदिया हुवा रे नाक कान पिण जोय ॥ तो पिण सौ वर्षा लगे रे ब्रह्मचारी तजे तोय सुगुण रे ॥ना.॥४॥ रूपे जो रंभा सारखी रे, मीठा बोली नार ॥ तो पिण हिवे जाई करी रे, ब्रह्मचारी व्रत धार सुगुण रे ॥ना ॥५॥ कामण गारी कामिनी जीत्यो सर्व ससार ॥ आखिर आणया कोई न रयो, सुरनर गया सहु हार सुगुणरे ॥६॥ अबला इन्द्री जोवतां रे, मन भावे वस केम ॥ राजिमती देखी करी रे तुरंत डिग्यो रहनेम सुगुण रे ॥ना ॥७॥ रूप कूप देखी करी रे, मांय पडियो कुमुंद ॥ दुःख मन तो जाणे नहीं, जिनवर कहे प्रसंग सुगुण रे ॥ना ॥८॥

दोहा—सजोगी पासे रहे, ब्रह्मचारी दिन नीश ।
कुशल त्यागा व्रत भगे भागे विश्वा वीश ॥१॥
चेठे नहीं खूंटी आंतरे शील तणो हुए हान ।
मन चंचल वस राखवा,सुनो श्री जिनवर वाण॥२॥

॥ वाड़ पांचवी ॥

वाड़ सुनो हिवे पाँचमी, शील तणा रखवालो रे ॥ चोरज वड़सी ते सही व्रत थासी विसरालो रे

॥वाड़.॥१॥टेर॥ भींत परिचय तटी आंतरे, नारी रहे तिहां रातो रे ॥ केल करे निज कंत सु विरह मरोड़े निज गातो रे ॥वाड़॥२॥ कोयल जिम ठहका करे, गावे मधुरा सादो रे ॥ के राती माती थई, छूर सरीखो उनमादो रे ॥वाड़॥३॥ रोवे विरह आकुल थकी, दाजे बहुदुख मालो रे ॥ हीन दिन रा बोलना, काम जगावा वालो रे ॥वाड़॥४॥ काम वसे हड़ हड़ हंसे, पिऊ मिल्या तन तापो रे ॥ बात करे तन मन हरे, विरह सु करे विलापो रे ॥वा.॥५॥ राग विषय मन हुलसियो हंसियां अनर्थ थाय रे ॥ राम गिरन हस्या थका, रावण बाद रयो जाय रे ॥वा॥६॥ ब्रह्मचारी नहीं सांभले, एहवा विरह ना वेणो रे ॥ के जिन हरषे धीरप धरे, चित्त चले सुन सेणो रे ॥वा.॥७॥

दोहा—छटी वाड़ विचारतां, चंचल मन मत डिगाय ॥ खायो पियो विनसियो तिण सु चित मत लगाय ॥१॥

॥ वाड़ छटी ॥

भर जोवन धन,सामग्री,लही पामे अनुक्रम भोगोजी ॥ पाँचो इन्द्रिया रे बस भोगवे, पामे भोग संजोगोजी ॥भर॥टेर।१। चितारिया सो ब्रह्मचारी नहीं, पूरव भोगव्या सुखोजी ॥ अच्छी विनस्यो रे सात में, स्नेह

चितारिया दुःखो जी ॥भर ॥२॥ सेठ मकंदी रा अंगज जाणिया, जिन रक्षक जिन पालजी ॥ यक्ष तणी सीख विसारिया व्यापो हित बस कामोजी ॥भर ॥३॥ रेणा देवी रे सन्मुख जोवियो पूरण प्रीत संभालोजी ॥ तीखी तरवारियां वींदीया,नाक्यो जलधि मंझारी जी ॥भर.॥४॥ जिन पालक पंडित थया नही कीधि तासे विसासो जी ॥ मूलज पितारे मतलब नहीं, धरी सुख संजोग विलासोजी ॥भर ॥५॥ सेलक यक्ष रे तत्क्षण ऊद्यो, निज मिल्यो परिवारोजी ॥ जिनवर केरो पूरब खिलियो, सांभलजो नर नारोजी ॥भर.॥६॥

दोहा—खाटो खारो चरपरो, मीठा भोजन जेम ॥ मदवा मोसक कसायलो रसना बस रस लेय ॥१॥ ज्यांरी रसना बस नहीं, चावे षट्रस आहार । ते दुख जाणो प्राणियां, चउगति भमे संसार ॥२॥

॥ वाड़ सातमी ॥

ब्रम्हचारी सांभल बातड़ी, थने सीख देऊं हितकारी रे ॥ वाड़ न भांगजे सातमी, सुन जिनवर नी वाणी रे ॥ ब्रम्हचारी.॥टेर॥१॥ कवल झरे उपाड़ता, घृत बिंदवो सरस आहारोजी ॥ ते आहार निवारजो, तिण सुं बढे विकारो जी ॥ब्र.॥२॥ राजा रसवंती आहार करे, दूध दही पकवानो जी ॥ पाप समान तेने कया, उत्तराध्ययन

में जानो जी ।।ब्र.।।३।। चक्रवर्त्ती आ रस वंती, रसिक थयो भव देवो जी ।। काम विडंबना ते लही, विरज विरज हित मेवो जी ।।ब्र.।।४।। जीभ रसना लोलुपी, लपटी लेई ने सवादो जी ।। मंगु आचारज नी परे कुबुद्धि पामे विखवादो जी ।।ब्र.।।५।। चारित्र छोड़ प्रमादिया, निरसुत नीरज ध्यानो जी ।। राजा रसवंती रे वश पडिया, ज्युं सेलक मद पाम्योजी ।।ब्र.।।६।। सबला अर्थ घल भद्रे, बल उपसम ने भेदो जी ।। भेद व्रत खंडन थया सुण भवियण कहे उमेदोजी ।।ब्र.।।७।।

दोहा—अति आहार थी दुख हुवे, गले रूप भले गात ।
आलस्य निद्रा प्रमाद बढ़े दोष कहाय ।।
अधिक आहार सुं विष चढे घणासुं फाटे पेट ।
धान अमाऊ ऊरतां हांडी फाटे नेट ।।

।। वाड़ आठमो ।।

पुरुष कंवल बत्तीस भोजन कया, अठावीस नारी भणी रे ।। पंडक कंवल चौबीस कया, होवे अशाता अति घणी रे ।।१।। जो व्रत धारे नर नार रे ।। तेम दोष नहीं उनोदरी में गुण घणा जीमे जाचक जेम ।।२।। तेमे गुण नहीं अतिचार ब्रह्मचर्य ना, जो पुंडरिक मुनि महाराज ।। सहस्र वर्ष लगे, तपकरी काया ने टाली ।।३।। जो छोड़ चारित्र आया अति मात्र रसवंती लहिये ।। मेवा मिष्ठान्न

भोजन नित नवा ॥४॥ दाल साल घृत लोची करी, भोजन किया भरपूर ॥ सुता नींद में तो हुई, विसुची की वेदनाएं ॥५॥ वेदना भई भरपूर, आर्त रुद्र में मर गया सातमी रे ॥ जिनवर के परिमाण थोड़ो जीमो बाड़ सुन आठमी रे ।६॥

॥ वाड नवमो ॥

दोहा—नवमी वाड़ विचारता, सदा पालो निर्दोष ॥
इम जाणी ने प्राणियां अविचल पदवी मोक्ष ॥१॥
अंग विभूषण जो करे, ते संजोगी होय ॥
ब्रह्मचारी ने शोभे नहीं, तिन कारण नही होय॥२॥

सुन चेतन मारी विनती, थने सीख देऊं हितकारी रे ॥टेर॥ शोभा नही करे देहनी, नहीं करे सिणगारो रे ॥ उबटन पीठी मंजन नहीं करे, नहीं करे क्षण एक वारो रे ॥सुन.॥१॥ ऊना ठंडा नीर सुं, नहीं करे अंग अंगोलो रे ॥ केसर चंदन कुंकुम, खंड नहीं करे खोलो रे ॥सुन.॥२॥ कंकण कुंडल मुदरिका माला मोती को हारो रे ॥ पेरे नही क्षण मात्र भी जो होवे व्रत धारी रे ॥सुन.॥३॥ मूंगा मोला ने ऊजला, नहीं वस्त्र बनावे रे ॥ धात करण महिमा भली, चौथा व्रत ने धावे रे ॥सु.॥४॥ काम दीप ने जिनवर कया, भूषण दोषण जाणो रे ॥ अंग विभूषण टाल ने जिनवर के उमेदो रे ॥सु.॥५॥

ढाल दसवो

श्री वीर द्वादश परिसदा में, उपदेश दियो जिन शील ॥ शील सदा तुम पालजो ॥टेर॥ फल तेहनो सरस रसाल, चार कर्म अरिहंत हणया ॥ वे लेसी ओ शिव सुख प्रवीन ॥ सील.॥१॥ बत्तीस ओपमा शील नी भाखो श्री जिनराज, सुर असुर नर सेवा करे ॥ मन वांछित सीझे काज ॥ शील.॥२। त्रिभुवन रे पाय नमु, शील सम पुण्य नहीं कोय ॥ क्रोड़ी क्रोड़ी धन देवे, शील समो पुण्य न होय ॥ शील.॥३॥ नारी ने दोष नर थकी, जिहां नारी तिहाँ नर न होय ॥ ये नउ वाड़ दोनु ने सारखी, ते पालीं धर संतोष ॥शील.॥४॥ सवत सोलह सो अग्सी भाद्रवा वद बीज ॥ उमेद मुनि कहे जुगत सु, आलस तज पालजो शील ॥शी ॥५॥

॥ इति शील नी नव वाड सपूर्ण ॥

॥ श्री रहनेमो राजमती का चरित्र ॥

दोहा—अरिहंत सिद्ध आचार्य ने उवज्झाय अणगार ॥
पाँचों पद ने नमन करू अट्ठोत्तर सौ बार ॥१॥
मोक्ष गामी दोनों हुवा, राजिमती रह नेम ।
चरित्र कहूँ रलियामणो, सांभलजो धर प्रेम ॥२।

॥ ढाल पहली ॥

सुखकारी सोरठ देस, राजा कृष्ण नरेश ॥मन मोयो लाल ॥ दीपती नगरी द्वारिका ए ॥१॥ समुद्र विजय तिहाँ भूप, शिवा देवी राणी रुढे रूप मन. ॥महाराणी माने जती ए ॥२॥ जिण जन्मया अरिहंत देव, चौसठ इन्द्र करे ज्यांरी सेव मन.॥बाल ब्रम्हचारी बावीसमा ए ॥३॥ अंत समय राजुल नार, तज तेल चढ़ी गिरनार मन ॥सतियां रे सिर सेहरो ॥४॥ समुद्र विजयजी रो नंद, रहनेमि रो सुणो सम्बन्ध मन ' लघु भाई श्री नेम नोए ॥५॥ रहनेमि विराजे रूढे रूप, भर जोवन बहु सूप मन.॥सुख बिलसे संसार मे ॥६॥ परणी है कन्या पचास भोगवे लील विलास मन.॥सदा काल सुख भोगवे ए॥७॥ नाटक ने झंकार, रमणी रूप उदार मन ॥मन वांछित लीला करे रे ॥८॥ प्रतिबोध्यो रह नेम लागो धरम सुं प्रेम मन.॥वाणी सुन वैरागियो रे ॥९॥ जाणियों अस्थिर संसार लीनो संजम भार मन. । रमणी पचासों परिहरि ए ।१०॥ छोडिया छत्तीस भोग, आदरिया संजम जोग मन. कठिन क्रिया मुनि आदरी ए ॥११। एक गुफा में आप, जिनवर जपता जाप मन. । काउसग में क्रिया करे रे ॥१२॥ आ हुई पहली ढाल भाखी रिख रायचंद रसाल मन. ॥आगे निर्णय सांभलो ए । १३॥

गंधण कुल ज्यूं किम होवे रे तूं वन्धन सामो जोय ॥ चारित्र ओ चिंतामणि जैसो कीचड़ में मत खोय ॥मुनि.॥५॥ अंधग विष्णु रा पोतरा थे समुद्र विजयजी रा पूत ॥ कुल सामो देखो नहीं थें काचा क्यूं दो सूत ॥मुनि.॥६॥ भोजग विष्णु री पोतरी मैं उग्रसेन मुझ तात ॥ ये दोनु कुल दीपता अबे किऊं बिगाड़ो बात ॥मुनि.॥७॥ चन्दन अग्नि वसे नहीं रे समुद्र न लोपे कार ॥ पश्चिम सूरज उगै नहीं ज्यूं, कुलवन्त रो आचार ॥मुनि.॥८॥ तूं होवे वैश्रमण देवता रे, नल कुंवर अनुसार ॥ जो होवे इन्द्र देवता सरिखो तोई वाछूं न लिगार ॥मुनि.॥६ गायां रो धणी ग्वालियो रे तूं मत जाणे कोय ॥ ज्यूं संजम रो धणी तूं नही ते दीदो संजम खोय ॥मुनि.॥१०॥ बाल चन्दन बावनो रे कीदो चावे राख ॥ चौथा सूं सूखा थका कांई कुल ने लागे साख ॥मुनि.॥११॥ रतन जतन कर राखिये खंडियां लागे खोड़ ॥ वले जोबन में जाणिये कीजे यतन करोड़ ॥मुनि.॥१२॥ थोड़ा सुखां रे कारणे कंई, यूं थे बिगाड़ो बात ॥ पछे घणो पछतावणो थांरे कछु न लगसी हाथ ॥मुनि.॥१३॥ मधु बिन्दु रे कारणे थें मूंडो दीधो मांड ॥ अल्प सुखां रे कारणे, थांरी होसी जग में भांड ॥मुनि ॥१४॥ वचन सती रा सांभली ने, आयो ठिकाणे रहनेम ॥ शील संयम दोनु तणां रहया कुसला खेम ॥मुनि.॥१५॥ हाथी ज्यूं रह-

नेमजी रे, महावत राजुल नार ॥ अंकुश रूप नेत्रे करी कांई, आयो ठांव ने वार ॥मुनि.॥१६॥

॥ ढाल चौथी ॥

भला वचन ते भाखिया रे लाल, इम बोले रहनेम ॥ सुगुण साध्वीए महासती तूं मूलगी रे लाल तारा केणो वाजेब ॥१॥ हूँ डिगियो थे थिर कियो रे लाल ॥टेर॥ थै राखी मारी लाज सु. ॥ ते उपकार मोटो कियो रे लाल, जाणे रंक ने राज सु ॥२॥हुँ.॥ समुद्र मांही डूबतो रे लाल थे मने लीधो झेल सु ॥ हुँ रूप कूप देखि पड्यो रे लाल थे शील दीप में मेली सु ॥३॥हुँ॥ निखरा वचन में काडिया रे लाल, कुमति बोल्यो कुबोल सु. ॥ सुध गई सब माहरी रे लाल, राख्यो थे मारो तोल सु.॥४॥हूं॥ मैं मति हीनो मानवी रे लाल, कुसीलियो कंगाल सु. ॥ पापी मैं पतित थइ गयो रे लाल, थै राख्यो मारो माल सु. ॥५॥हूँ॥ तूं परमेश्वरी सारखी रे लाल, तूं भगवन्त वीतराग सु. ॥ तुं सतीयां मांही शिरोमणी रे लाल, शील बडो वैराग सु. ॥६॥हूँ.॥ भूंडो मुंडो छे मारो रे लाल, भूंडा काढिया बैन ॥ सुन काया कंपावियां रे लाल निरखता डिगिया नैन सु ॥७॥हूं.॥ मैं नारी परिसो नासह्यो रे लाल सु. ॥ मारे प्रगटियो मन में पाप सु. ॥ मोटी सती ने मैं दियो

रे लाल सागर जितनो संताप सु. ॥८॥हूं॥ पुरुषां में उत्तम हुवा रे लाल नेमिनाथ अणगार सु. ॥ चलिया चित्त ने दृढ कियो रे लाल ते तिरला संसार सु.॥६॥हूं॥

॥ ढाल पांचवी ॥

थारो मोह पडल अलगो टलियो, घट में प्रगट्यो थारे ग्यान ॥रहनेमी॥ थैं विषय जाणी विष सारखी, म्हारा वचन लिया थें मान रह. ॥ थिर कर लीधी थांरी आत्मा ॥टेर॥१॥ थारो चित्त आगयो ठाम रे रहनेमि ॥ थांरे शील री नींव सेठी हुई पलटोणा परणाम रे र. ॥थि.॥२॥ थैं मुगति मारग सामा मंडिया, सील रतन पर बैस रे र. ॥ पंथ लियो थें पादरो, छोडियो करम कलेश रे र. ॥थि.॥ ३॥ जे मन मेले मोकलो ते तो होवे फजीत रे र ॥ जे मन जीते मानवी जाय जमारो जीत रे र. ।थि.॥४॥ थांरो मन जाय लागो मुगति सूं थारे गुरु ग्यानी सुं प्रीत रे र.॥ यश फैल्यो थारो जगत में थैं आछी कीदी रीत रे र. ॥थि.॥५॥ थैं तो त्याग वैराग वधारिया, थाने मिलियो मित्र संतोप रे र. ॥ शील देसी सुख सास्ता, थांरे मूंडा आगे मोत्त रे र. ।थि.।६॥ थारे तेज घणो तपस्या तणो, कीदो समता पूर रे र. त्तमा खड्ग तेग री ओ थारा, अशुभ करम गया दूर रे र ॥थि॥७॥ तूं

जीत्यो स्वाद जिन्हा तणो फिर मन राख्यो थोब रे र ।
खावण पीवण परहरणो नही थारे लालच लोभ रे र.
॥थि.॥८॥ थैं क्रोध भडीको नी क्रियो ने, मान दियो
हेठो मेल रे र. ॥ थारो काया में माया नही लोभ पाछो
दियो ठेल रे रहनेमि ॥थि ॥९॥ काम हरण क्रिया भली
रे तिणथी मिटे जंजाल र. ॥ राग द्वेष रह्यो नही थे करम
बीज दिया बाल रे. ॥थि ॥१०॥ थें तो दया मारग उज-
वालियो, करमां सुं मांड्यो जंग रे र. ॥ थें चलिया चित्त
ने घेरियो तोने घणां से रंग रे र ॥थि। ११॥ राजमती
रहनेमजी दोनुं, पामे केवल ज्ञान रे र. ॥ मुगत गया
दोनुं जणा, पाम्या अविचल ठाम रे र. ॥थि.॥१२॥
पाँचमी ढाल सुहामणी, उत्तराध्ययन अनुसार रे र. ॥
सूत्र मिलन्तो मेलियो ने वले क्रियो विस्तार रे र ॥थि.॥
॥१३॥ शील तीणो पंच ढालियो सूत्रा में दीठो निचोड़
रे र. ॥ तिन अनुसारे रिपि रायचन्द, कहे बेकर जोड़
रे र. ॥थे ॥१४॥

॥ श्री एषणा समिति की ढालें ॥

दोहा-धर्म मंगल उत्कृष्ट है, संयम तपस्या मांय ।
प्रणमे सुर नर जेहने, सदा धर्म चित्त चहाय ॥१॥
जिम मधुकर कुसुम भणी, दुख नहीं देवे लगार ।
रस ले तृप्त करे आत्मा तिम जाणो अणगार ।२॥

तप संयम प्रति पालवा, भाड़ो देत शरीर ।
दोष बयालीस टाल ने आहार लहे गुणधीर ॥३॥
भिन भिन वर्णन तासको, कहूँ सूत्र अनुसार ।
ते सुणजो भवि जन तुमें, आलस उंघ निवार ॥४॥

॥ ढाल पहलो ॥

तीजी समिति एषणा नामे, भाखी श्री जिनराया । पाले मुनिवर शुद्ध रीति से, शिव सुख गरजी डाह्या । भोला श्रावक दोष लगावे, मुनिवर जाणे तो नट जावे ॥टेर॥१॥ समुचय साधु कारण कीनो, असणादिक चउ आहारो । आधाकर्मी आहार सो कहिये, महोटो दोष विचारो ॥भोला ॥२॥ एक साधु को नाम थापी ने, करे सो उद्देशिक जाणो, सूजता मांही सीत मिले सो, पूईकरम बखाणो ॥भोला.॥३॥ गृहस्थी साधू दोई अरथे, भेलो करि निपजावे । मिश्र दोष कयो जगदीशे कर्मबंध दरसावे ॥भोला.॥४॥ अवरां ने अंतराय देई ने, थापे मुनिवर काजे । पाहुणा आगा पाछा नोते, सरस आहार रिख साजे ॥भोला.॥५॥ अंधाराथी करे उजालो, वली वेचातो लावे । उधारो मांगीने देवे, बदलो कर पलटावे ॥भोला.६॥ रिखजी काजे घर थी आणे छांदो उघाड़ी देवे । अबके ठामें चढ़ी ने आपे, चढे ठाम तले ठेवे ॥भोला.॥७॥ निबला पास थी सबलो खोसे, अच्छिज्झ दोष तें कहिये ॥

सबकी पांति में एक ज देवे, अणिसिठ दोप तें लहिये ॥भोला.॥८॥ आंधणमांही अधिको ऊरे, वहिरामण ने कामे ॥ उद्गमन ए सोला कहिये, गृहस्थी को छंदो है जामे ॥भोला.॥६॥ असूझतो आहार वेरावे जो कोई, ओछो आउखो पावे ॥ सूत्र भगवती तथा ठाणांगे, श्री जिनवर दरसावे ॥भोल॥१०॥ देवा वालो जहेर को दाता तिणनुं अधिको जाणो ॥ त्रिलोकरिख कहे सूझतो देवो, पावो पद निर्वाणो ॥भोला॥११॥

दोहा—सोला दोप दातारना, रिख टाली ले आहार ।
भिन्न भिन्न वर्णन करूं, सुणजो सब नर-नार ॥

॥ ढाल दूसरो ॥

बाल रमावे चित्र बतावे, आहार कारण जिम धायजी । समाचार कहे सगा सयणना, दूतिकर्म सो कहायजी ॥१॥ सोला दोप गुणीजन टाले पाले एपणा शुद्धजी । बुद्धि निर्मल होय संजम साधो, पावो वास विशुद्धजी ॥सा.॥२॥ जात जणावे गोत बतावे, आहार लेवण ने काजजी । बिन मिलियां मुखड़ो कुम्हलावे, जिम राजा नो गयो राजजी ॥सो॥३॥ दीन दयापणो होय हिया में बोले भिखारी जेमजी । वणीमग दोप कयो जगदीशे आहार मिल्या चित्त चेमजी ।सो.॥४॥ ओषध भेषज केरें पडिगणो आहार खुशामत काजजी । तिगिच्छा दोप कयो जगदीशे

निपजे मोटो अकाजजी ।।सो.।।५।। क्रोधे भरयो कहे रे कृपण जो नहीं देवे हमने आहारजी । होसे हानि तन धन जणनी माया नही आसी तुम लारजी ।।सो.।।६।। तुम दातार उदार भलेरा और नही तुम तोलजी । थें नहीं देसो तो कुण देशे मान चढावे इम बोलजी ।।सो ।।७।। दूध दही की वांछा मन में, मुख सुं मांगे छाछजी । दाखे सीरादिक पात्रा मांही, भाषा बदल कहे वाचजी ।।सो.।।८।। आहार सरस अधिको तें बेहरे लोभ जणावे दातारजी । दान दियासुं अधिको मिलसे लोभ दोष ए जहारजी ।।सो.।।६।। वहोरतां पेली अथवा पाछो बड़ाई दोष दातार जी । अथवा दोष लगावे कोइक इणविध वहोरे आहारजी ।।सो ।।१०।। विद्या सिखावे आहार खुशामद, मंत्र जंत्र करि लेहजी । चूर्ण वशी करण जड़ी बूटी, अहार काजे करे जेहजी ।।सो ।।११।। ज्योतिष शकुन शास्त्र प्रयुंजी, दाखे सुख दुख जोगजी । सुपनादिक फल आहार लोभ थी, मोहे इण विध लोकजी ।।सो ।।१२।। विधवा कारण गर्भ गलावे, मूल करम ए दोषजी । आहार लोलुपी करम करे इसा, पाप तणो करे पोषजी ।।सो.।।१३।। ए सोला दोष जो लागे साधु थी, संयम नो होय नाशजी । तिलोखरिख कहे दोष निवारयां लहिये अविचल वासजी ।।सो.।।१४।।

दोहा-सोला उत्पात तणा, दोष कया जगदीश ।
जे शिवसाधन उठिया, टाले वीसवा वीस ॥१॥
गृहस्थी घरे गोचरी गया, दश वली टाले संत ।
ते सुणजो आलस टली, भाख्यो श्री भगवंत ॥२॥

॥ ढाल तीसरी ॥

सोला दोष उद्गमन ना, एताही उतपातोजी । और कोई दूषण तणी शंका पड़े कोई बातोजी ॥१॥ तो मुनिवर वेहरे नहीं ॥टेर॥ जे अवसर का जाणोजी । आप तथा दातारने शंका अभिप्राय पिछाणोजी ॥तो ॥२॥ हाथरेखा आली होवे, अंगुठादिक ठामोजी । चोटी पटा दाढी मूंछ में, आलो रहे कोई जामोजी ॥तो ॥३॥ सचित द्रव्य नीचे धरयो, ऊपर द्रव्य अचितोजी । या अचित पर सचित धरयो, गृहस्थी सो द्रव्य देतोजी ॥तो ॥४॥ लूण खडी जल सचित शूं ठाम जो खरड्यां होवेजी, । तिणमें सुं लावे आहार ने एहवो भोजन जोवेजी ॥तो ॥५॥ दातार आंधो ने पांगलो, अथवा कंपण व्याधिजी । चालन की शकति नहीं, अथवा कंपल उपाधीजी ॥तो.॥६ पूरो शस्त्र नहीं परगम्यो, अधकाचो रह्यो जेहोजी । होला उंबी पुंखड़ा आद दे, गृहस्थी वेरावे तेवोजी ॥तो ॥७॥ तुरत को लीप्यो आंगणो, टपका पाड़तो लावेजी । एषणा ना दश दोष ए श्रीजिनवर फरमावेजी ॥तो.॥८॥ए दश दूषण

न जेह में बेहरावे दातारोजी, । तिलोख रिख कहे तीजी ढाल में, दोषण नेणो विचारोजो ॥तो। ६॥

दोहा-दोष बयालीस टाल ने, आहार लावे अणगार ।
पंच मांडला ऊपरे दोप करे परिहार ॥ १ ॥
ते मुणजो सुगुना रखि, रसना वश कर राख ।
तो सुख लहिसो शाश्वता, सर्व सिधान्त की साख ।२।

॥ ढाल चौथी ॥

एह रिख मारग रे नाइ, स्वाद करण करे आहार उमाही । राजी गमतो रे आया, अणगमतो करे सोच सवाया ।ए॥१॥ ताकी ताकी रे जावे,ताजा ताजा मालज लावे । नीरस ने बोरे नाही, बन रया कुंदो लाल सदाई ॥ए॥२॥ जीमण देखी रे धावे, रसलंपट ने लाज न आवे । मिलियां सु शोभा रे करतां, अणमिलिया पर निंदा उच्चरतो ॥ए॥३॥ सांड ज्युं कहिये रे तेहने, परभव खटको रंच न जेहने । दूधज आयो रे फीको, शकर आया लागसी नीको ॥ए॥४॥ दाल अलूणी रे आई, लूण विना तो स्वाद न कांई । चटनी पापड़ रे लावे, नाना विध संजोग मिलावे ॥ए॥५॥ गमतो आहारज आवे, दाबी चांपी ने अधिको खावे । जिनजी री आज्ञा रे भंगे, वली अशाता अति उपजत अंगे ॥ए॥६॥ भोजन आयो रे मातो, देखी मन में अति

हरपातो । सबड़का लेइने रे खावे, चटपट चटपट मुंडा बजावे ॥ए॥७॥ गरम मसालो रे भारी, बघारी घुंगारी रूढी तरकारी । चतुरणी नारी रे दीसे, उण घरे जावणो विसवा वीसे ॥ए॥८॥ खाता प्रशसा रे करतो, दिन उग्यांथी सांझ लग चरतो । चारित्र ने दाहज लागे अंगारा सम ओपमा सागे ॥ए॥९॥ आहार नीरसो देखी चित्त में आरत आणे विशेखी । मिरचां लूणज नांई घरनारी ए नही छसकाई ॥ए॥१०॥ बोले मुंख सु रे खोटो, पाड़े संजम धन को टोटो । कारण विन आहार खावे, पांचमो दोष ए स्वामी सुणावे ॥ए॥११॥ मंडल दूषण रे पांची, तिलोख रिख कहे सुणजो सांची । उग-णीसे छत्तीस रे साले, ग्राम सोनई दक्षिण सुविशाले ॥ए॥१२॥ आहार ना दूषण रे जाणो, चौथी ढाल रसाल वखाणो । जे मुनि दूषण रे सेवे, ते तो भवजल मांहीज खेवे ॥ए॥१३॥ छिन्नु दूषण रे सारा टाले सो धन धन अणगारा । इण भव शोभा रे भारी, आगे अजर अमर सुख त्यारी । एह रिख मारग रे नांई ॥१४॥

॥ पांच समिति तीन गुप्ति की चौपाई ॥

दोहा-पांच समिती तीन गुपती आठों प्रवचन मात ।
जो सुख चावो साधुजी तो खप करो दिन रात ॥१॥

शुद्ध कहिजे साधु ने, जो पाले निरतिचार ।
सावधान थई सांभलो सुमति गुप्ति विस्तार ॥२॥

॥ ढाल पहलो ॥

ज्ञान दर्शन चारित्र तणी काल ना तीन प्रकार भविकजन । कुपथ छोडो सुपथ आदरो, जयणा रो आगे अधिकार भविकजन ॥१॥ चोखे चित्त करने रे इरिय मारग शुद्ध जोयजो ॥टेर॥ द्रव्य क्षेत्र ने काल भाव, वलि जयणा रा चार भेद रे भ० । द्रव्य थकी तो रे जीव छः काय ना, जोवो धरि उम्मेद रे ॥भ०॥चो०॥२॥ पृथ्वी पानी आग ने वलि चौथी वायु काय रे भ० । लीलण फूलण रे वरजे, वनस्पती से मोटा मुनिराय रे भ० ॥चो०॥३॥ लट गिंडोला ने कीडी कुंथवा, वलि चौरिन्द्री जात रे भ० । पाँचो इन्द्री रे पूरी पामियो, तेहनी टालो घात रे भ० ॥चो०॥४॥ क्षेत्र थकी तो रे हाथ साढ़ा तीन प्रमाण भ० । भाव थकी तो रे दर्शवाना वर्जता, ज्युं सुगति तणा सुख होय भ० ॥चो०॥५॥ ढोल नगारा रे कंशमा दलवती, सुरणाई मोरचंग भ० । भला शब्द रे मारग सुणी, ज्हांसु चरे नहीं प्रसंग भ.॥चो. ६॥ व्याव बधावे गावे गोरड़ी वलि सितारया रा गीत भ । ये सुनी रे हियो हरखे नही, या साधु री रीत भ ॥चो॥७॥ भला चित्राम नही जोवणा, वलि स्त्री

रा रूप भ. । गेणा गांठा रे वस्त्र भारी पेरिया, न देखना धर चुप भ. । चो ॥८॥ हाथी घोड़ा रथ ने पालकी, वलि नाटकीया रा नाच भ । मार्ग मांही दीठा थका, राग धरी मत राच भ. ॥चो ॥६॥ गुलाब चपा चमेली ने केवड़ी अगर अबीरा गध भ. । कपूर कस्तुरी चोवा चदन, ज्यांसु करे नहीं प्रतिबंध भ. ।चो. ।१०॥ आमी सामी रे न करणी परियट्टणा, अणुपेहा धर्म विचार भ । धर्म कथा नो उपदेश देणो नही, ए मारग अनगार भवि. ।चो ।११। केई नाम धरावे रे साधु मोटका, चलता मारग मांय भ । आडा अवला रे ऊंचे मुख जोवता, इरिया री खबर न कांय भ ।।चो.।।१२।। लडाई रे मारग में न करे, निंदा ने गुणग्राम भवि. । अवगुण इतना रे द्रव्ये ऊपजे, ते सुणजो अविराम भवि. ।।चो ।।१३। ठोकर लागे रे पग पीड़ा हुवे, भागे कांटा ने सूल भवि पांव भरिजे भिष्टादिक करी, मारग जावे भूल भवि. ।चो. १४ । वलि अकड़ ने रे हेटो पडे भागे पग ने हाथ भवि. । दिठा बिना रे खबर न कांई पड़े, दिन धोले जाने रात भवि. ।।चो ।।१५।। जयणा करजो रे जीव छः कायनी,इरिया समिति निशान भवि. । प्रथम सेलाण रे शुद्ध साधु नो, लीजो चतुर पिछाण भवि ।।चो ।।१६। समिति साचे मन सु पाले रे ते जति, ते करे भवना फंद भवि. । ऋषि रायचंद जोडि कहे, शासता पामे परमानन्द भवि. ।।चो.।।१०।।

दोहा-समिति सुणो हिवे दूसरी, भाखु तिणरो नाम ।
शुद्ध मारग ने सेव ने तजो दूसरो काम ॥ १ ॥
भाषा समिति जाणिये, जिन शासन रो मूल ।
साधु भेष लेसु किथो धोलां पाड़ी धूल ॥ २ ॥

॥ ढाल दूसरो ॥

सत्य व्यवहार भाषा भली रे, बोलनी भाषा दो साधु । असत्य ने मिश्र परिहरो, ज्यु दोष न लागे को साधु । निवंद्य भाषा बोलजो ज्यां दूजी सुमति थाय साधु मीठी मिश्री सारखी जाणो मेल्यो दूध साधु । नि.॥१ क्षेत्र थकी तो चालतां, करनी नई कोई वात साधु ऊतावला नहीं बोलनो, गया पीछे पहर रात साधु ॥नि.॥२॥ मन अति उज्ज्वल राखणो दीनी सीखावण पाल साधु । भाव थकी भली तरह, आठ वाना देवो टाल साधु ॥नि.॥३ । क्रोध मान माया वशे, लोभ हंसी भय जाण साधु । मुखे और विकथा वलि, एह त्याग्यां निर्वाण साधु ॥नि.॥४॥ केई नाम धरावे साधु रो, बोले कड़वा बोल साधु । भेष लजावे लोक में, थारो बधे कटा सु तोल साधु ॥नि०॥५॥ रीस वशे रेकारा दिये, वड़का बोले तेह साधु । तुरत तुंकारो काढ दे, थोड़ा में काढे छेह साधु ॥नि०॥६॥ पोते वखाण करे आपणा, कुण छे मुझ समान साधु । ते साधु स्याणो नहीं, ओलख्यो नहीं

ज्ञान साधु ॥नि०॥७॥ हुँ शास्त्र मे समझूं घणो, जाणे बोले बावा रो धिग साधु । कपटाई घणी केलवे इसो साधु जाणे द्रव्य लिंग साधु ॥नि०॥८॥ परना छिद्र जोया करे, पोतारा देवे ढांक साधु । वड़ाई मे आगे घणो, बोलण ही में वांक साधु ॥नि०॥९॥ लवाड़ मे लाग्यो रहे, माथापच भरपूर साधु । बोले अलखावणो रीस करे, विनय भक्ति सुं दूर साधु ॥नि०॥१०॥ गुरु सुं पिण आदर नही गुरु भायां सुं तोडे हेत साधु । आर्या सुं आंट राखे घणी लड़ काढे पाद्रे खेत साधु ॥नि०॥११॥ श्रावक सुं समाधि २ करे, वधारे घणो वाद साधु । ऊपर आणे बोल आपणो, तिण मे किस्यो संवाद सा० ॥नि०॥१२॥ श्रावका सुं शुद्ध बोले नहीं, करित सरखा वेण साधु । दुःखकारी दुर्भागियो, शत्रु कर दे सेण साधु ॥नि०॥१३॥ पर ने पीड़ा ऊपजे तिण भापा लागे पाप साधु । अवगुण अधिको ऊपजे, कह्यो जिनेश्वर आप साधु ॥नि०॥१४॥ साधु साध्वी सेणा होवे, वाले ते अमृत वाण साधु । करे नहीं कदाग्रहो, ए उत्तम रा सेलाण साधु । नि०॥१५॥ चतुर ते बोले चुक सुं कदाचित निकल जाय साधु । गौतम स्वामी आणंद खमी दियो, कह्यो सातमा अंग माय साधु ॥नि॥१६॥ घणा सूत्रा में देख लो, जीभ ने करणी सदा वश साधु ॥ ऋषि रायचंद कहे सांभलो ज्ञान पणा रो रस साधु ।नि.॥१७॥

दोहा—समिति सुणो हिवे तीसरी, एषणा करनी शुद्ध ।
मुक्ति मार्ग ने उठिया, निर्मल ज्यांरी बुद्ध ॥१॥

॥ ढाल तीसरी ॥

तीजी समिति एषणा आहार तणो अधिकारो ए । सांचे मन सु पालजो ज्यानें होवे मुक्ति मंझारो ॥१॥ साधु ने लेणो सूझतो द्रव्य क्षेत्र काल भावो ए । सूत्र भण्या साधु ते सही ज्यांर नहीं संसार सु दावो ए ॥सा.॥ ॥२॥ साधु ने अर्थे कियो ते आधा कर्मी आहारो ए । उद्देशी नही आदरे देवण ने कीधो त्यारो ए ॥सा.॥३॥ पुई कर्मी नि शीत मिले ते तो आहार अशुद्धो ए । मिश्र सु मन ना करे तेहनी निर्मल बुद्धो ए ॥सा.॥४॥ थाप राखे साधु ने अर्थे, पाहुणा करे आगा पाछा ए । अंधारा में करे चांदणो, साधु ने लेणा रो त्यागो ए ॥सा. ५॥ मोल लेई ने दिये वली उधारो देवे आणी ए । बदलाई लावे भलो आपे सामो आणिये ॥सा.॥६॥ छांदी किवाड खोल दे, ऊंची अब की ठामो ए । निबंल पासे सु खोसी दे, एम सिरी आपे तामो ए ॥सा॥७॥ आदण में ऊरे घणो दोष हुवा ए सोला ए । लगावे शुद्ध साधु ने गृहस्थी हुए जो भेला ए ॥सा.॥८॥

॥ ढाल चौथी ॥

खुशामदी करे दातार नी और रमाड़े बाल । जाणे

आहार देसी अच्छी तरह, बांधे पेटनी पाल। ओ मारग नहीं साधु रो ॥ए टेर॥१॥ बेटा बहू ने मां बाप रा, स्त्री ने भरतार। सासु ने वहू सगा तणा, जो कहे समाचार ॥ओ.॥२॥ लाभ अलाभ भाखे वलि, ज्योतिष निमित्त जोय। जनम मरण बताय दे दोष ओ तीजो होय ॥ओ.॥ ॥३॥ जात जणावे आपणी दीन दयापणो थाय। पूरो आहार जो आवे नहीं मुंडो देवे कुमलाय ॥ओ.॥४॥ ओषध ने भेषज करे, वलि देवे श्राप। लड़ भिड़ लेवे भोलियो ज्ञानी कयो छे पाप ॥ओ॥५॥ मान माया लोभ करी हुवा दोषण दस। पेला पीछे साथे वलि, करे वखेरो जस ॥ओ॥६॥ चारण ज्युं विरदावलि, भोजक ने भाट। अणदीधा अवगुण करे, थोथो बेठो पाट ॥ओ.॥७॥ विद्या फोड़ कामण करे, करे मंत्र ने चूर्न। संजोग केले सांवठा इसडा करे खुन ॥ओ.॥८॥ उत्पादण ना दोष ए, जो गलावे गर्भ। उत्तम ते नहीं आदरे साधु टाले सर्व ॥ओ॥९॥ साधु शंका ऊपजे, थवा हो दातार सचित सुं हाथ खरड्या हुवे, नहीं वे अणगार ॥ओ.॥१०॥सचित करि ढांक्यो हुवे मुलगें व मांय। आंधो पांगलो अजयणा करे नहीं मिश्री नो र ॥ओ॥११॥ पूरो शस्त्र प्रगम्यो नहीं, खरड्यां न ले धोय। तिण काढे ए नाखतो एषणारा दस होय ो॥१२॥ द्रव्य थकी वस्त्र पातरा, थानक ए चार।

दोष बयालीश एहवा टाले ते अणगार ॥श्री.॥१३॥ क्षेत्र थकी दोष दोय ते आधो मत खांच। काल थकी तीन प्रहर रे, मांडला रा पांच ॥श्रो ॥१४॥ रसनो लोलुपी थकी, मेले आहार जोग। अच्छो मिल्या हर्षित हुवे, भुन्डा मिल्या सु' शोक ॥श्रो.॥१५॥ टक टक जावे गोचरी लावे ताजा माल। नीरस ऊपर मन नहीं बन रयो कुन्दो लाल ॥श्रो.।१६॥ रसना नो गृद्धी थको, आरा टाणा में जाय। लघुता लागे लोग में निंदा धर्मनी थाय ॥श्रो ॥१७॥ भारी आहार भली तरह खावे थांडा थांड। भांजे वाड भोलो थको हुवे लोक में भांड ॥श्रो.॥१८॥ वेसवाद भारी गालिया, भलो दियो बगार। तीवण ताजी तरकारियां, भलो दियो छमकार ॥श्रो.। १९॥ चावल दाल मे घी घणो, सराह सराह ने खाय। चारित्र ने करे (अध, कोयलो), कह्यो सूत्र भगवती मांय ॥श्रो.॥२०॥ नीरस आहार तेम नेम वलि, नहीं मिरच ने लूण। चारित्र ने करे धुंधलो खावे माथो धूण ॥श्रो.॥२१॥ छ कारण आहार लेवे, वलि छांडे छे प्रकार। हर्ष वेराजी न हुवे, चलावे संजम भार ॥श्रो.।२२॥ चारित्र नी महता है घणी, पहले ही अंग। दशवैकालिक देख लो ठाम ठाम सूत्र संग ॥श्रो ॥२३। वस्त्र पात्र ने शय्या, चौथो वलि आहार। साधु ते साधु भोगवे, ज्यांरी है बलिहार ॥श्रो.॥२४॥ तीजी समिति आराधतां पावे शास्ता सुख। ऋषि रायचन्द

इम कहे वीतरागे नहीं किणरी रूख ॥श्रो ॥२५॥

॥ ढाल पांचवो ॥

मंडल नो दोष पांचमो, कारण तिणरो नाम। आहार करे छः कारणे संयम राखण काम ॥१॥ धन्य मारग जिनराज नो, पाले जे मुनिराय। तिरण तारण गुरु जगत के सारे आतम काज ॥धन्य॥२ छुधा पीड़ा न खम सके, व्यावच करी न जाय इरिया सूझ सके नहीं, संयम न सके निभाय ध ॥३॥ कर पग चालतां लड़थडे, धर्म चिंता न सके जाग। आहार करे इण कारणे भाखे इम वीतराग ॥ध ॥४॥ आहार नीहार विहार हैं, और देह स्वभाव। जिन भाखे तिम ही करे एहीज मुक्ति उपाय ॥ध.॥५॥ हुवे कारण छे मांहिलो, आयो अवसर देख। करी आलोयणा तन तजे, करे संथारो संलेख ॥ध.॥६॥ आतक जीव आशा तजो, अथवा उपसर्ग। ब्रह्मचर्य राखी न सके देह तजे देई धिग ॥ध ॥७॥ जीव दया पाली न सके, अथवा नहीं सहीजे, तप। ममता उतरिया देहथी, करे तजवारी खप ॥ध ॥८॥ कायर ज्युं डरतो रहे, आयो मरण अतीव। औषध सावद्य आदरे, वलि निकल जावे जीव ॥ध ॥९॥ काचा श्रावक श्राविका, भोला आर्या साध। मोह विना ए करसी किसुं, पड़ जा इसे प्रसाद ॥ध ॥१०॥ आदान

भंडणी खेवना, चोथी सुमति छे एह । उव्या शिवपद साधुजी, पालसी निश्चय देह ।।ध.।।११।।

।। ढाल छठो ।।

साधु ने आर्या तणा जी, उपकरण संख्या बत्तीस । कोई एक मोटा कारणे जी, भाख्या छे जगदीश ।।१।। ऋषीसर चोथी सुमति शुद्ध पाल ।।टेर।। द्रव्य क्षेत्र काल भाव सुं रे दोषण सगला टाल ।।ऋ।।२।। तीन जातरा पातरा जी, तीन तेना रे थान । झोली गोछो मांडलो जी, पड़ला तीन पिछान ।।ऋ।।३।।पाय केसरी ने पुंजणीजी, पछेवडी तीन होय । चोलपटो रजहरणो मुहपतिजी, ए सतरे उपसर्ग जोय ।।ऋ।।४।। ए कह्या दशमे अंग मे जी पांचवे संवर द्वार । चिलमिल ते डोरी वलीजी, परहेज करतां आहार ।।ऋ.।।५।। अंकुचण पट कांचुओजी, जांध्यो ने जोग पट । ए तीन उपकरण आर्ज्या तणा जी, बृहत्कल्प में प्रकट ।।ऋ।६। कांबल करणि पूछणों जी ए कल्प सूत्र रे मांय । दशवैकालिक पांचवे जी पात्रा ने लुणो थाय ।ऋ।।७। हिवे दस उपकरण कारणे जी दांडो छत्र ए दोय । मातरियो लाठी पाटलीजी ए पॉचों अनुक्रम होय ।।ऋ.।।८।। चेल ने चिल मिल कांबली जी, चर्म अने कोष । चर्म छेदन दसमो कह्यो जी, कारणे एहनी दोष ।।ऋ.।।६।। सरवाले

ए साधु ना जी, उपकरण कह्या छत्तीस । पायदिक पड़ि-
हारियाजी, लेण रह्या जगदीश ॥ऋ॥१०॥ द्रव्य थी ए
सहुविधि कही जी, क्षेत्र थकी सर्व जाग । कालऐ दोय
टका वलिजी, दिन रो सोलमो भाग ॥ऋ॥११॥
पडिलेहिने पूंजनो जी तेहना भेद पचीस । उत्तराध्ययन
बाईस मे जी, नहीं होवे तो मत करो रीस ॥ऋ॥१२॥
अखोड़ा पखोड़ा कह्या जी, नौ नौ एम अठार । छः
पुरिमा एक दृष्टि कही जी, ए है पचीस प्रकार ॥ऋ॥१३॥
दोष छः पडिलेहणाजी, भांगा कह्या वलि आठ । चोथो
भांगो पडिलेहो जी, शेष सातु इम आठ ॥ऋ॥१४॥
पाट बाजोट ने पाटियो जी, ज्यां पहली नजरा देख ।
पुंजी ने लेजे पीछे जी, दया बिना छे भेष ॥ऋ॥१५॥
वस्त्र पात्र आपणो जी, गृहस्थी ने घर मांय । मेली ने
नहीं जावणो जी, दोष कह्यो जिनराय ॥ऋ॥१६॥ पहेला
धरती पूंज ने जी, पीछे सहु मेल । ज्युं जयणा ऊपजे
जीवनीजी, अरिहंत वचन मत ठेल ॥ऋ॥१७॥ पडि-
लेहना दोय काल ने जी, बीचे नही करनी बात ।
उत्तराध्ययन छबीस मे जी, ज्ञानी देखाड़ी बात ॥ऋ॥१८॥
भटक पटक मत करो जी, जो नाम धरावो साध ।
अजयणा करतां थका जी, उल्टी, पड़े छे खाद ॥ऋ॥१९॥
चोथी सुमति ने सांचवे जी पावे शिव सुख पर्म ॥ पुज्य
रायचंद इम कहे जी, समकित सहित छे धर्म । ऋपिसर

चोथी सुमति शुद्ध पाल ॥२०॥

दोहा—पाँचमी सुमति शुद्ध तरह, पाले जे अणगार।
इण भव आराधिक हुवे, पर भव में खेवे पार॥१॥
संसार सुं सन्मुख हुवे, पर भव सामी पूठ।
साधु भेष ले शुं कियो, जनम गमायो झूठ ॥२॥

॥ ढाल सातवीं ॥

परठाण सुमति ए पांचमी जी, द्रव्य क्षेत्र काल भाव। अर्थ न्यारा ओलखोजी, प्रणमी ने सत्गुरु पाय ॥१॥ सुमति साधु तणी पाँचमी जी, द्रव्य थी बोले आठ। बड़ी नीति लघु नीति खेल छे जी नाक नो मेल निर्घाट ॥सु॥२॥ शरीर नो मेल आहार वध्यो जी, ऊपदी आठमा देह। दश जागा क्षेत्र थी वर्जणी जी सांभलो मार्ग छे जेह ॥सु.॥३॥ प्रथम भांगे सहु परठवे जी, न होवे प्राणी नी घात,। भूमि होवे पोली नहीं जी, मुके वेगो दिन ने रात ॥सु.॥४॥वणी भूमि अति दूरो नहीं जी, नही अति दूंकडो होय॥ ऊंदरा प्रमुख ना बिल बिना जी, त्रस प्राणी बीज न होय ॥सु॥ रात तथा दिन काल थी जी, भाव थी भांगा छे चार। तीन भांगा तज परठवा जी, चोथो भांगो श्री कार ॥सु॥६॥ दिवस तो देख ले भूमि ने जी, पुंज ने परठे रात। चार अंगुल परमाण थी जी न होवे जीवनी घात ॥सु.॥७॥

जीव जंत नहीं जिण जगा जी, थंडलो छे निर्दोष।
दृष्टि चोखी तरह देखजो जी, मिलसी तुम ने मोक्ष॥सु॥८॥
प्रेम सुं धरती पूंजणी जी, लीलण फूलन टाल। त्रिखरी
नहीं वनस्पति जी वलि कीडियां तणो नाल॥सु॥६॥
नित्य प्रति देखनी भूमिकाजी, रात रा पड़े कोई काम।
तीन सौ सत्ताइस मांडलाजी, जेहनी जोवणी ताम॥सु.॥
॥१०॥ पगलो देणो पुंज नेजी, कह्यो छे जिन देव।
'आवस्सही' करने निकले जी, इन्द्र तणी आज्ञा लेव
॥११॥ पुंज धरती ने परठणो जी उच्चार पासवण खेल।
छीदा छीदा करे छांटना जी, मांहे मांहे खाय नहीं मेल
॥सु.॥१२॥ वोसरे वोसरे कर परठवेजी, निस्सही काम
निषेध। गमणागमणे पडिक्कमणो जी, इत्यादिक बहु
भेद॥सुं॥१३॥ एक एक साधु ने साध्वी जी, ओघो
ऊजलो थाय। पर धरती पुंजे नहीं जी, ओघो मेलो हो
जाय॥सु॥१४॥ ऊंचो राखे हाथ में जी,, फूटरो कीनो छे
धोय। देखण रो छे काम रो जी, पन जीव जतन नहीं
होय॥सा.॥१५॥ कांजो पिण काढे नहीं जी, युंही लिया
फिर रयो भार। पेट भरण रो अरथ रो जी, करदे जनम
खुवार॥सा.॥१६॥ दिल मांय सुं नाठी दया जी, पुंजण
सुं नहीं प्रेम। खांच मले जो आप में जी, सहुने सिखा-
मण एम॥सु. १७॥ साधु साध्वी शुद्ध तरह जी, आणजो

मन आनन्द । गुण लीजो ने अवगुण टालजो जी, ऋषि रायचन्द भाषे संबंध ॥सु॥१८॥

दोहा-सुमति संबंध पुरो हुवो, सुणि मत थायजो दीन ।
जो तुमने तिरणो हुवे, तो पालो गुप्ति तीन ॥१॥
तीन गुप्ति वलि तिम कहुँ, जो पाले अणगार ।
आवागमन अलगा करे, पावे भव नो पार ॥२॥
मन वचन काया करी, पाले संयम भार ।
शील सरोवर झूलतां, धन धन ने अणगार ॥३॥

॥ ढाल आठमी ॥

मन गुप्ति कही पहेलडी रे लाल, करडो तिणरो काम हो मुनिसर ॥१॥ तीन गुप्ति आराधिये रे लाल, साधु तणी छे रीत हो मु.॥ थोडा दिनांरी जांजली रे लाल, जासो जमारो जीत हो मु.॥ती॥२॥ आरंभ सारंभ नही चिंतवे रे लाल, देखे रूपवंती नार हो मु. ॥ भोग-वणी वंछे नही रे लाल, जिम वमियो आहार हो मु ॥ती.॥३॥ क्रोध ने माया ना करे रे लाल, लोभ ने दीधो छोड़ हो मु. । धर्म शुकल ध्यावे सदा रे लाल, मुगति जावण रो कोड हो मु.॥ती.॥४॥ संजम सेती बाहिरे रे लाल, बारे न काढे मन हो मु ॥ संकल्प विकल्प ना करे रे लाल, एहवा साधु धन्य हो मु ॥ती ॥५॥ वचन गुप्ति वलि दूसरी रे लाल, विकथा

चार निवार हो मु ॥ स्त्री कथा ए फूटरी रे लाल, विषय नजर मत भाल हो मु.। ती.॥६॥ वस्त्र गेहना सुं नारी शोभती रे लाल, तेहनी महिमा निवार हो मु ॥ विषय कषाय ने वश करो रे लाल, जाणजो काल कूट जहर हो मु ॥ती ॥७॥ आ दाता आ सूमडी रे लाल, आ बुढी ने आ जवान हो मु ॥ आ काली ने आ फूटरी रे लाल. न करे एहवा वखाण हो मु ॥ती.॥८॥ ओ देश सुखकारी सुहामणो रे लाल, ओ देश दुःख कार हो मु ॥ शहर गॉव गिणे नही रे लाल, ए आचार अतिसार हो मु ॥ती.॥९॥ ओ राजा अच्छो बड़ो रे लाल, ओ राजा गरीब शैतान हो मु ॥ ओ भोजन स्वादिष्ट घणो रे लाल, ओ माठो धान कुधान हो मु ॥ती ॥१०॥ इम ही वलि असंयती रे लाल, न कहे आव जाव बेस हो मु ॥ उठ सुव एम ना कहे रे लाल, न देवे सावद्य उपदेश हो मु ॥ती.॥११॥ काय गुप्ति हिवे तीसरी रे लाल, बिना पुंज्या पग हाथ हो मु ॥ ओटिंगन पाट पाटला रे लाल, नही ले दिवस ने रात हो मु ॥ती ॥१२॥ हाथ घणा हिलावे नही रे लाल, घणो धुणे नहीं अंग हो मु. ॥ अति आलस मोड़े नही रे लाल, संजम सुं सदा रंग हो मु । ती ।१३॥ दड़ बड़ घिण दोड़े नही रे लाल, काय चपलता मूक हो मु ॥ झटका पटका नहीं करे रे लाल, पाले भली प्रकार सु

शील हो मु.। ती ।।१४।। पांच सुमति तीन गुप्ति रे लाल, प्रवचन पाले आठ ओ मु. ।। ते सुख पासी शाश्वता रे लाल, देवे कर्मा ने कार हो मु ।।ती.।।१५।। उत्तराध्ययन चौवीस में रे लाल, सुमति गुप्ति अधिकार हो मु. ।। तिण अनुसारे इहा कह्यो रे लाल, वलि चीज विस्तार हो मु ।।ती ।।१६।। अधिको ओछो जो कह्यो रे लाल, मिच्छामि दुक्कडं मोय हो मु ।। पुज जयमलजी रे प्रसाद थी रे लाल ऋषि रायचंद कहे जोड़ हो मु ।।ती.।।१७।। सवत अठारे इकीसमो रे लाल, गढ जोधाणा मंझार हो मु ।। फागण वद एकम दिने रे लाल, सुणतां जय जय थाय हो मु ।।ती.।।१८।। सम्पूर्ण ।।

।। श्री आषाढ भूतिजी को चौढालियो ।।

दोहा-दर्शन परिसह बाइसमो, काठो तिणरो काम।
पॉचो दूषण परिहरो, सेंठा राखो परिणाम ।।१।।
उत्तराध्ययन सूत्र मध्ये, चालियो आषाढ़ भूत।
पहला परिणाम पोच पडिया, पछे सेंठा रो पियासुत।२।

।। ढाल पहलो ।।

आषाढ भूति अणगार, बहुत त्यांरो परिवार, मन मोहन स्वामी, आचारनी चढती कला ए ।।१।। आगम अरथ अपार, हेतु दृष्टान्त कर सार, मन० चेला भणाया चूंप सुं ए ।।२।। एक शिष्य कियो जी संथार, गुरु बोल्या

तिण वार, सुण चेला म्हारा, जो तूं थावे देवता रे ॥३॥ थूं मने कही जे आय, जेज मत करजे काय, सुण गुरु, सम जग में कोई नहीं रे ॥४॥ आगे तीन चेला कियो जी संथार, पिण कोई न पूछी म्हारी सार, सुण, किण ही आय कह्यो नही जी ॥५॥ थूं मारो चौथो चेलो होय, तो सम और न कोय, सुण मैं साज दियो संजम तणो ए । ६॥ थूं मारो शिष्य सुविनीत, थारी मने पूरी प्रीत, सुण, तू अंतर भगतां मांयरो रे ॥७॥ थूं मने मत जायजे भूल, करले वचन कबूल, सुण. थू तो वेगो आवजे जी ॥८॥ चेले ते छोड़ियो प्राण, जाय उपनो देव विमान, मन मोहन स्वामी, ऋद्धि वृद्धि पामी घणी ए ॥६॥ जग मग लग रही जोत, जाणे सूर्य उद्योत, मन जाली झरोखा झिल रया ये । १०॥ थांबे पुतलियां रही थांब, महला मांय महराब, मन. रतन जड़त घर आंगनो ए । ११। पागा रतन जड़ाव, ईस उपला सोना रा थाव, मन. रतन जड़त वाण पच रंगनो ए ॥१२॥ लूंबे कचिया सेज, दीठां उपजे एद, मन., सुंवाली माखन सारखी ए ॥१३॥ चोवो चंदन सपेल, अंतर रेला पेल, मन, गुलाब रा डावा खुल रया ए ॥१४॥ कपड़ा महि गलतान, गेणा रो नहीं ज्ञान, मन, देखतां ने नेतर ठरे ए ॥१५॥ महल विचे डोली वाग, चले छत्तीसों राग, मन. नाटक बत्तीस प्रकारना ए ॥१६॥ दीपति देवियां री देह, जाग्यो नवलो

स्नेह, मन., देवियां सुं मोह्या देवता ए ॥१७॥ एक नाटक रे झनकार, वरस जावे दो हजार, मन., गुरु कह्यो याद आवे कठे ए ॥१८॥ लाग रह्या सुखां रा ठाठ, गुरु जोवे चेला री बाट, मन., देवता अजै आयो नहीं ए ॥१९॥ चेलो झिल रयो पूरो नेह, पड्यो गुरु ने संदेह मन., समकित में शंका पड़ी ए ।२०॥ आ हुई पहली ढाल, ऋषि रायचंद भणे रसाल, मन., आगे निर्णय सांभलो ए ॥२१॥

दोहा—आपाढ भूति मन चिंतवे, नही स्वर्ग नहीं मोक्ष ।
निश्चय में नहीं नारकी, सगली बातां फोक ॥१॥
चित वल्लभ चेलो हुंतो, मुझ सुं पूरो प्रेम ।
सूत्र वचन सांचा हुवे तो, पाछा न आवे केम ॥२॥

॥ ढाल दूसरी ॥

आपाढ़ भूति मन चिंतवे, पाछो जासूं ओ मारे घर वास । सुन्दर सुं सुख भोगवुं, घरे विलसूं हो हुं तो लील विलास ॥१॥ चरित्र सुं चित चलि गयो, घरे चालिया हो, हुई श्रद्धा भृष्ट ॥ अरिहंत वचन उथापिया खाली हुवा हो, गमाई सम दृष्ट ॥२॥ तिण समय सिंहासन कांपियो, देव दीठो हो, तिहां अवधि ज्ञान ।। गुरु ने घर दीठा जावतां मारग मे हो, मांडियो नाटक प्रधान ॥३॥ छः महिना लग नाटक निरखियो हो, आचार्य हुवा मन

हुलास ॥ पूरो हुवो हो नाटक पांगुरिया, विहार करता हो आया वनवास ॥४॥ दया री परीक्षा लेवण भणी, देव, बनाया हो चार नाना बाल ॥ गेहना ने गांठा पहराविया, रिमझिम करतां हो चाले सुकुमार ॥५॥ पृथ्वी अप तेऊ वायु रो वनस्पती ओ छठी त्रस काय ॥ सहु में नाना छोकरा, मायतां ओ दीधां मारा नाम ॥६॥ छः काया री दया पाली घणी, नही दीठी ओ दया में भली वार । पुण्य पाप रो फल पायो नहीं, सबरा गेहना लेऊं उतार ॥७॥ सब ने कने बुलाय ने, गेहना गांटा हो लीधा है खोल ॥ सबां रा गला मरोडिया, बालुडा मुंह सु सकिया न बोल ॥८॥ गृहस्थी रे धन बिना नही सरे, मने मिलियो हो मोकलो माल ॥ पात्रा तो गेहना सुं पूर ने मलकंता हो चाले चाल ॥९॥ दया तो तिण रे दिल सुं गई, देव दिठो हो गुरु किया अकाज ॥ हजे पिण मारग आणलुं, रही छे आंख्या में लाज ॥१०॥ दूजी ढाल-पूरण हुई, ऋषि रायचंद कहे एम ॥ देखो चतुराई देवां तणी, गुरु ने मारग लावे केम ॥११॥

दोहा—देवता रूप फेरी करि, कियो साध्वी रूप । गेहना गांठा पेरिया झीणां कपड़ा बहुरूप ॥१॥ बाजूबंद ने बेहरका, हिवड़े नवसर हार । लिलाट टीको झलहले, पग नेवर झंकार ॥२॥ सोहन चूड़ो हाथ में, कंकण रतन जड़ाव । काजल सार्‌यो आंख मे, नख शिख कियो

बणाव ॥३॥ कर पात्रा ओघो खाक में, मूंडे मुंहपत्ति डाल । इरिया मारग सूं सती, चाले भीणी चाल ॥४॥ मारग में साधु मिलिया, देख साध्वी तेम । लाज हीन तूं पापिणी, भेष लजावे केम ॥५॥

॥ ढाल तीसरी ॥

सुण महासती इण लखणां सूं, जैन धर्म अति लाजै, गुण नही सती लोगा मां, निर्ग्रन्थणी तूं बाजे ॥१॥ तूं चाले चालां करती, इरिया समिति नहीं धरती, तूं लोक लाज सुं नही डरती ॥सुण.॥२॥ थैं नेणा काजल सारया थें संयम गुण ने बिसारियो, थे गुण बिन भेष ज धारयो ॥सु.॥३॥ थारे कंचन चुड़लो खड़के, मंजन सुं तन मन झलके, बिजली ज्युं तन भलके हो ॥सु.॥४॥ थूं जग में बाजे गुरुणी, थारी बिगड़ गई सब करणी, थूं लाजै नही उदर भरणी ॥सु.॥५॥

दोहा—कहे आरजका आप के, कपट घणो मन माय ।
मैं तो सरल स्वभाव सुं, चौड़े दिया दिखाय ॥१।
पण थें सुणो हो साधुजी, किसड़ा बोलो बोल ।
पातरा हाथ सुं मेल ने, लाज हमारी खोल ॥२॥

॥ ढाळ चौथी ॥

सुणो मुनिवरजी मत देखो पर दोष विचार ने बोलो,

सुणो जिनवरजी तन ऊजलो मन कपट हिया को खोलो ॥१॥ पर उपदेशी घणा जगत में, अवगुण देखे पग पग में, आप भूल रया हो अंग अंग में ॥सु ॥२॥ आप सासरे नहीं जावे, निश दिन बैठी अवगुण गावे, पर ने कहे थूं क्यूं नहीं जावे ॥सु.॥३॥ थें हाथ सुं फेरो माला, थांरे पेट मांहे कुदाला, ऐसा मुनिवर का मुंह काला ॥सु.॥४॥ आप पोते निर्ग्रन्थ बाजो, थोथा चणा ज्युं किम गाजो घरे जातां मन में नहीं लाजो ॥सु०॥५॥ थें मनुष्य मार धन लावो, थें पेला मने समझावो, थांरा झोली पातरा देखावो ॥सु०॥६॥ सुण वातां अचरज पाया, आ किम जाणे मारी माया, मुनि दौड़ ने आगे आया ॥सु०॥७॥

दोहा-अल्प दोप छे माहरो, क्यूं कहो स्वामी नाथ ॥
पग बलती देखो नहीं, थें कीधी बालकां री बात।१॥
इम सुणी आगे चाल्या, आ किम जाणे दोप ॥
रूप भाव कारां करि लीधा आडम्बर रोक ॥२॥

॥ ढाल पांचवी ॥

संघाड़ो इकट्ठो कियो हो, किया नर नारियां का ठाठ ॥ सेहज वा घोड़ा घणा ए सेल घणी गह-गहाट ॥ पूजजी आज पधारिया ॥ जूना श्रावक घणा समझणा ए, मूंडे मुंह पत्ति बांध ॥ प्रदक्षिणा तो देवे करी ए भली प्रकार पग वांद ॥पू०॥२॥ मैं आपने

वंदन आवता ए. मारे पूरो पूज्यजी सुं राग ॥ आप
ही सामां मिल्या ए, भला खुलिया मारा भाग ॥पू०॥३॥
मैं दर्शन कीना आपरा ए, म्हाने दूनो छे स्नेह ॥ मन
वंछित कारज फलिया ए. प्रसन्न हुई म्हांरी देह ॥पू०॥४॥
इन दर्शन रे कारणे ए, वंदू वार हजार ॥ कृपा करने
लीजिये ऐ, सूजतो आहार ॥पू०॥५॥ गुरू कहे श्रावक
सांभलो ए, थांरो भलो छे राग ॥ पिण आहार वेरण
तणो ए, हिवड़ा में नहीं लाग ॥पू०॥६॥ घणी तो
खेंच करो मती ए, म्हारा लेणा रा नहीं परिणाम ॥ थें
किम वेहरावसो ए, जोरावरी रो नहीं काम ॥पू०॥७॥
चलता श्रावक इम कहे ए, जोड़ी दोनुं हाथ ॥ हठीला
स्वामी थें घणा ए, खेंचो किम छो बात ॥पू०॥८॥ दो
पहर दिन ढल गयो ए, थांरे हुवो भिक्षा रो काल ॥
खीचड़ी बड़ियां भली ए, रोटी घिरत ने दाल ॥पू० ।६॥
ओ दाखां रो धोवण सूझतो ए, आ पूरन भरी ए परात ॥
मन मोहे तो मीठी लीजिये ए ओला मिसरी निवात
॥पू०॥१०॥ गुरु ने वेहरायां विना ए, म्हाने नहीं जीमण
रो नेम ॥ वेगा खोलो पातरा ए थे झोली नही खोलो
केम ॥पू०॥११॥ थें तो श्रावक घणा सांवठा ए लीदो
हो मांने घेर । किम जावन देवो नही ए मैं मन रो हो
गयो सेर ॥पू०॥१२॥ पूज्य सुणो थें पादरी ए मांडो
पातरा मत करो जेज ॥ मैं श्रावक छां आपरा ए,

हुलसियो हिवड़ा रो हेज । पू०॥१३॥ मैं श्रावक घणा देखिया रे, पण ओ हठ ने आ भोड़ ॥ कठेई मैं नहीं देखी रे, देखी इण हीज ठोड़ ॥पू०॥१४॥

दोहा-खींचा ताण करता थकां, छीन लियो सब लोग ॥
भड़पी ने गुरु हाथ थी, भोली लीनी खोस ॥१॥

॥ ढाल छठी ॥

आसी ने सासी खेंचता, भोली खोलाई नीठा नीठ ॥गुरांजी॥ हो॥ पातरा मांहने गेहणा पडिया, सब लोगा ने दिया दीठ ॥गुरां०॥१॥ गेहना कठा सुं लावियां, कहो थांरा मन रीं बात ॥गु०॥ भेष लजाया लोग में, कह्यो कठा लग जात ॥गु०॥२॥ इतरी बातां वीतां पछे, आया बाप ने मांय ॥गु०॥ गेहना तो गया मारा आगड़ा, मारा बालुड़ा देवो बताय ।गु०॥३। मांय बाप कहे रोवता, सुत बिना गेहना साल ॥गु०॥ तड़पे छे मारो काल्जो, ज्यां लग नहीं देखा लाल ॥गु०॥४॥ वेगा मांने वताय दो, जेज करो मत काय ।गु०॥ छाने कठे थे छिपाविया, म्हारो जीव निकलियो जाय ॥गु०। ५॥ जीवता होवे तो जोय लेसां, मुवा होवे तो देवां दाग ॥गु०॥ गुरु आंख्यां मीच अबोला रया, आवी लाज अथाह ॥गु०॥६॥ जो धरती फाटे पड़े, तो पेस जाऊं पाताल ॥गु०॥ मोटो अकारज मैं कियो,

मारियां नानड़ा बाल ।।गु०।।७।। अरिहंत सिद्ध साधु धरम नो, चित धरिया सरणा चार ।।गु०।। अबकी आन पड़ी छे माथे, म्हांने सरणा रो आधार ।।गु०।।८।। देवता चरित्र अलगो कियो रे, आई आंख्यां में लाज।।गु०।। लाज रही तो मारग आवसी लाज सु ं सुधरे काज ।गु०।६।।

दोहा-वाहरू लागा वाहरू, गुरु हुवा भय भ्रान्त ।।
देवां ज्ञान में देखियो, आय मिल्यो सब तंत ।१।।
सरव माया समेट ने, चेला नो रूप बणाय ।।
मथेण वंदना मुख सु ं कही ऊभो आगे आय ।।२।।
तुम मारग में आवतां, कई देख्यो महाराज ।।
पलक एक नाटक देखियो, तब चेलो बोल्यो वाय ३।।
पलक कहो तुम एक ही, पण निरख्यो छै: मास ।।
देखो सूरज मांडलो, जोवा ये विभास ।।४।।

।। ढाल सातवीं ।।

रूप कियो देवता तणो रे लाल, कियो ऋद्धि तणो विस्तार हो ।।गुरांजी हो।। हू ं चित्त वलभ चेलो पूज रो रे लाल उपनो स्वर्ग मंझार हो ।।गु०।।१।। राखो अरिहंत वचना री आस्था रे लाल, टालो समकित दोप हो ।।गु०।। स्वर्ग नरक निश्चय जाण जो रे लाल, कर्म खपाय जाणो मोच्च हो ।गु०।।२।। हू ं संजम पाली

हुवो देवता रे लाल, जठे रतन जड़त रो विमान हो ॥गु०॥ दो सहस्त्र वरस पूरा हुवे रे लाल, एक नाटक रो प्रमाण हो ॥गु०॥३॥ ज्यूं थे नाटक में मोह गया रे लाल, त्युं मैं पण मोह्यो एम हो ॥गु०॥ थाने हूं विसर गयो रे लाल, वलि लागो मुझ प्रेम हो ॥गु०॥४॥ समकित में सेठा कर दिया रे लाल, काढ़ दियो मिथ्या सार हो ॥गु०॥ गुरां सुं ओ उपकार हुवो रे लाल, कर दिया धरम मे सार हो ॥गु०॥५॥ देवप्रतिबोध परो गयो रे लाल, लीधो संजम भार हो ॥गु०॥ चारित्र पाल्यो चित्त निर्मले रे लाल, औरां कियो उपकार हो ॥गु०॥६॥ आषाढ़ भूति पछे भली तरह, रे लाल, जिन मारग दीपाय हो ॥गु०॥ अन्त समय अनशन करी रे लाल मोक्ष पहुँचा कर्म खपाय हो ॥गु०॥७॥ आषढ भूति ज्युं दृढ रया रे तिम दृढ़ रहिजो चतुर सुजाण हो ॥गु०॥ समकित राखो चित्त निर्मली रे लाल, ज्यां पहुंचो निर्वाण हो ॥गु०॥८। उत्तराध्ययन अध्याय दूसरो रे लाल, कथा में कयो अधिकार हो ॥गु०॥ तिण अनुसारे जाणजो रे लाल, ऋषि रायचन्द कहे लिगार हो गु०।६॥ पूज्य जयमलजी रा प्रसाद सुं रे लाल, शहर नागौर चौमास हो ॥गु०॥ ढालां जोड़ी जुगत सुं रे लाल समकित ज्योति प्रकाश हो ॥गु०॥१०।संवत अठारे सौ छत्तीस में रे लाल आसोज वद दशम हो ॥गु०॥ समकित पालो चित्त

निर्मली रे लाल, ते जग मांय धन्न धन्न हो ।गु०।११॥
आषाढ़ भूति चरित्र सम्पूर्ण ॥

॥ श्री थावरचा पुत्र की ढालें ॥

दोहा-थावरचा भोगी भ्रमर, बैठो महल मंझार ॥
ऋद्धि वृद्धि सुख संपदा भोगे सुख श्रीकार ॥१॥
पाड़ोसी तिणरे हतो, पुत्र रहित धनवंत ॥
पुत्र भयो तिण अवसरे गोरियां गीत गावंत ॥२॥

॥ ढाल पहली ॥

महलां में बैठो सुखे रागी, थावरचा पुत्र वैरागी, महलां सु उतरयो हुवो राजी, कर जोड़ कहे सुणो मांजी ॥१॥ ए तो इसड़ा गीत गावे, म्हारे कानां घणा सुहावे, वलती इम बोले माया सांभल रे मारा जाया ॥२॥ पाडोसन बेटो जायो, तिणरो छे हरक बधातो, थाल भरी गुड़ व्हेंचे, जाणे पुत्र हुवो मारे जी से ॥३॥ बाजा बाजै बालक साला गोरियां गावे गीत रसाला हिलमिल गीत जी गावे, बालक री मां ने सुहाते ॥४॥ गुड़ देने गीत गवावै, गोरियां राजी हो जावे, सब कुटुम्ब तणे मन भावे, कानां में शब्द सुहावे ॥५॥ गीत गाय ने गोरियां उठी, देवे सोनैयां भर भर मुठी, माता इतनी वात सुणाई, थावरचा रे मन भाई ॥६॥ माता ने बेटो घहु प्यारो, नित माणे परोसे आहारो, कने वैठ जिमावे,

भाणा री माखी उड़ावे ॥७॥ इतरा में कूको पड़ियो, थावरचा काने सुणियो, सांभल ये ए माता माहरी, ये किम रोवे नरनारी ॥८। इण पर तो बोली माया, सांभल रे मारा जाया, बेटो जायो सो मुवो, तिण कारण रुदन हुवो ॥६॥ माता इम वात सुणाई, थावरचा ने व्यथा थाई, मां वाप अरड़ावे रोवे बालक ना मुख ने जोवे ॥१०॥ मां ये क्रूर शब्द अरड़ावे मां सु सुन्यो नहीं जावे, जन्म ने पुत्र किम मुवो, अचरज मुझ ने हुवो ॥११॥

दोहा-उग्यो सूरज आथमे, फूले सो कुमलाय ॥
जनमे सो मरसी सही, चिंता इण में क्यु थाय॥१॥
इण संसार में आ वड़ो, जनम मरण रो झोड़ ॥
जनम मरण ज्यां छे नहीं, इसडी नहीं कोई ठोड़॥२॥
हाथ रो कवो हाथ में, और मुंह रो है मुंह मांय॥
माताजी हूं मरू नहीं, इसडी ठौर बताय ।३॥
सुख भोगो संसार ना, और करो आनंद ॥
जनम मरण ने मेटसी, यादव नेम जिणंद ॥४॥

॥ ढाल दूसरी ॥

माता ओ संसार असारो, मैं तो लेसूं संजम भारो, संसार नी माया झूठी, सब ने एक दिन जाणो उठी ॥१॥ संसार मे मोटी खोड़, जनम मरण रो अठे झोड़, किण

रा मायने किण रा बापो, जीव बांधे छे बहुला पापो ॥२॥ थावरचा लीधो धार, कीधो नेमजी त्यांथी विहार, स्वामी सुखे द्वारका आया, सगला रे मन सुहाया ॥३॥

॥ ढाल तीसरी ॥

नेम जिणंद समोसरिया रे, द्वारका नगर मंझार रे भविक जन ॥ नर नारी तिहां वांदतां रे, भव भव नो निस्तार रे ॥भ०॥१॥ प्रभुजी तिहां पधारिया रे, सहस्राम्र नामे बाग रे ॥भ०॥ तरण तारण जग प्रगटिया रे, भव्य जीवां रे भाग ॥भ०॥२॥ सहस्र अठारे साधुजी रे, आर्ज्यां चालीस हजार रे ॥भ०॥ ज्या में आण मनावता रे, शासन ना सिरदार रे ॥भ०॥३॥ कोई ने दिन पन्द्रह हुवा रे लाल, कोई ने महीनो एक रे ॥भ०॥ कोई ने वरस दिवस हुवा रे लाल, कोई ने बरस अनेक रे ॥भ० ॥४॥ कोई लेवे मुनिवर वांचणी रे लाल, कोइ एक सरसा बोल रे ॥भ०॥ समझावे भवि जीव ने रे लाल, ज्ञान चक्षु दे खोल रे ॥भ०॥५॥ नेमजिनंद आया सुणी रे लाल, नर नारी हर्षित थाय रे ॥भ०॥ तेमना दरसन कीदा विना रे लाल, च्हण लाखीणो जाय रे ॥भ०॥६॥ कोई कहे प्रश्न पूछसां रे लाल, कोई कहे सुनसां वखाण हो ॥भ०॥ कोई कहे सेवा करसां रे लाल, करसां जनम प्रमाण रे ॥भ०॥७॥ एम कहे श्री कृष्ण ने रे लाल,

वन पालक कर जोड़ रे भ० । दीधी कृष्ण वधावनी रे लाल सोनैयां बारा क्रोड़ रे भ० ॥८॥ केई बेठा हवेलियां रे लाल केई चढ़िया गजराज रे भ० । केई सुख पावे पालकी रे लाल केई एक डोले साज रे लाल भ० ॥६॥ चतुरंगी सेना सजी रे लाल, घणो साथे गहगहाट रे लाल भ० । केई बोले विरदावली रे लाल, भोजक चारण भाट रे भ० ॥१०॥ छत्र चॅवर देखी करि रे लाल सब कोई हर्षित थायरे ॥भ०॥ नृप तिहां पर आविया रे लाल, वांदिया श्री जिनराज रे ॥११।

दोहा—तिण काले ने तिण समये, द्वारका नगर मझार ॥
नेम जिणंद समोसरिया, सहस्रवन बाग मझार॥१॥
थावरचा तिण अवसरे, बैठो महल मझार ॥
लोक घणा ने देख ने, मन में करे विचार ॥२॥

॥ ढाल चौथी ॥

लोग सब मिल कठे जावे, सेवक ने पास पुछावे, कहे सेवक सुण राया, अठे नेम जिनेश्वर आया ॥१॥ बात नेम आगम री ताजी, सुण थावरचा हुओ राजी, पुण्य जोगे प्रभु अठे आया, वॉद सफल करुं मारी काया ॥२॥ मारा मनरा मनोरथ फलिया, म्हारा भव भव रा दुख टलिया, इम हरषे धरि सिर पाग, और पेरियो नव रंग वाग ॥३॥ उत्तरासन झीणें सुतर रा,

मेल्यां किलंगी तुर्रा, कड़ा हाथ कानों में मोती, जाणे लागी जगमग ज्योति ॥४॥ दसों अंगुलियां मुंदरी गले डोरो, मन में नेम वदन रो कोड़ो, देख चंवर छत्र धर प्रेम आण ने वांदिया छे श्री नेम ॥५॥ भवि जीवां रो काटन क्लेश, दीधो स्वामी इसो उपदेश, दुख जन्म मरण रा भारी, बांधे कर्म तो आगे त्यारी ॥६॥ हंस हंस ने बांधिया भूठे, तिका रोणा सु भी नहीं छूटे, आवे काल भपेटा लेतां, वले बंब नगारा देतो ॥७॥ सुणी इक चित्त प्रभु नी वाणी, होती मन में बिछुड़े जाणी, कर जोड़ ने कहे सुणो स्वामी, दीक्षा लेसूं अंतर-जामी ॥८॥

दोहा—जिम सुख थावे तिम करो. इम बोले श्री नेम,
ढील लगार करो मती, जो चाहो कुशल ने क्षेम॥१॥
प्रभु ने वंदन कर चालिया, कीधो महल प्रवेश,
माता पासे जायने मांगे इम आदेश ॥२॥

॥ ढाल पांचवी ॥

आज्ञा दो मुझ मातजी हो, माता ओ संसार असार ॥ काल आय घेरियां थका हो माता कोई न राखण हार ॥ ओ माता । आज्ञा दीजै वेग ॥ टेर ॥ वाणी अपूर्व सांभली ए माता, पडी मूरछागत थाय ॥ सावधान बैठी करी ओ माता भाली सीतल

धाय ॥२॥ओ०॥ थूं एकाकी छे मारे रे जाया, तू कालजारी कोर ॥ मुझ आंधी ने थूं लाकडी रे जाया, तुज सम मारे कुण और ॥३। रे जाया ॥ थूं मुझ जीवन की जडी रे जाया, तुं मुझ प्राण आधार। जीऊं थने मैं देख ने रे जाया, सुण थावरचा कुमार ॥रे जाया ॥४॥ रमणी बत्तीस छे थायरी रे जाया अप्सरा रे अनुसार। ते विलविलती छोड़ ने रे जाया, मत लो संजम भार ॥५॥रे जा०॥ रमणी झुरे रंग महल में रे जाया मात झुरे मन मांय। वैरागी झुरे मोक्ष ने रे जाया सनडो रयो उमाय ॥६॥रे जा०॥ साधुपणो अति दोहिलो रे जाया, त्रिविध महाव्रत चार। दोष बयालीस टाल ने जाया लेणो निर्दोष आहार ॥७॥रे जा०॥ कनक कटोरा छोड़ ने रे जाया, जीमणो काठ रे पात्र, ए सुख सेजां छोड ने रे जाया, राखणो मैलो गात्र ०॥८॥ कायर ने घो दोहिलो री माता, आप कही जो बात, सूरां ने सब सोहलो री माता, दुलभ नहीं तिल मात्र ॥९॥

दोहा—वचन सुणी बेटा तणां, माता भई निराश।
चेटो आज वरे नहीं, भद्रा थई उदास ॥१॥
रतन अमोलक भेटना, ले दास्यां ने लार।
बीच बाजार में नीकली, गई कृष्ण दरबार ॥२॥

॥ ढाल छठी ॥

माता तो उठ कृष्ण घर चाली, कहे सांभलजो नर नाथो । एकाएकी म्हारो कुँवर थावरचा, काढी दीक्षा री बातो ॥१॥ जायो मारो लेसी संजम भारो ॥टेर॥ भांत घणी समझायो तिण ने पिण माने नहीं लागो रे ॥२॥ अन्न धन तुम प्रसाद घणोई, तिण रो नहीं मारे चावो । पुत्र वैरागी तिणरे मोक्ष काजे छत्र चंवर दिरावो ॥३॥ जायो ॥ वलतां किसनजी इण पर बोले, थांरो बेटो होसी धरम देवो हौंस हमारी पूरण काजै मोक्ष करस्यां स्वयमेवो ॥४॥जायो॥ चतुरंगी सेना सज कीधी, आप हुवा असवारो । नाटक ना झणकार होवता, आया थावरचा घर बारो ।५॥ जायो ॥

॥ ढाल सातवीं ॥

थावरचा ने कहे किशनजी यूं दीक्षा मती लेय भाया रे । सुख भोगव संसार नो मारी छत्र नी छाया रे ॥था. १ । वलतो कुंवर इसडी कहे मारो जीव तो जद सुख पावे रे । आप कहो जिम तो करूं जो जनम मरण मिट जावे रे ॥था. ॥२॥ वलता किशनजी इम कहे थैं बात करी बहु भारी रे । जनम मरण मेटण तणी तो पौंच नहीं छे मारी रे ॥था.॥३॥ हाथी पर बैठाय ने, गलियाँ गलियाँ मंझारो रे । कृष्ण करावे उद्घोषणा, द्वारका नगर मंझारो

रे ॥था.॥४॥ जग मे कोई किणी रो नही स्वारथ भरियौ ससारो रे। माधव मुख सुं इम कहे मती करो ढील लगारो रे ॥था ॥५॥ दीक्षा लो निश्चिन्त थे, बाँधो पाणी पेली पालो रे। पाछला सब परिवार नी मैं कर लेसुं संभालो रे ॥था ॥६॥ खाणो खरचो पूरसुं, बोले कृष्ण मुरारो रे। थावरचा साथै वैरागिया उठिया पुरुष हजारो रे ॥था ॥७॥ पंच मुष्टि लोच हाथे कियो संजम लियो प्रभु पासो रे। कुंवर थावरचा ज्यो करे तिणने मुगतिमां वासो रे ॥था.। ८॥

॥ ढाल पहली धन्नाजी की ॥

नगरी काकंदी हो अति रलियामणी सहस्र वन उद्यान हो भविक जन। प्रजा सुखी तिण नगर मे जित शत्रु राजान हो भविक जन ।। भाव धरी ने भवियण सांभलो ॥१॥टेर॥ भद्र सारथवाही तिहां वसै धन रो तिण रे नही पार हो भ०। तिण घर धन्ना कुंवर जनमिया, रूप देख मगन थाय हो भ० ॥२॥ भाव॥ जोवन वय मे आया पछी परणायी बत्तीस नार हो भ०। मेहलां बैठ लीला करे नाटक ने झणकार हो भ० ॥३॥ भाव० ॥ षटरस भोजन तिहां नव नवा घणा दासी ने दास हो भ०। क्रोड़ बत्तीस सोवन डायजो विलसे लील विलास हो भ०॥४॥ भाव ॥ वीर जिनेश्वर विचरत आविया लक्षण

सहस्र ने आठ हो भ० । वन्दन आवे सारी परषदा धर्म रा लाग रया ठाठ हो भ० ॥५॥ भाव० ॥ राजा वन्दन आवियो कोणिक जिम धर कोड़ हो भ० । पाँच अभिगम सुधा साचवी वन्दे बे कर जोड़ हो भ० ॥६॥ भाव० ॥ पहली ढाल पूरण थई समोसरिया जिनराय हो भ० । नगरी में हल चल लागी अति घणो लोग टोले टोले जाय हो भ० ॥७॥ भा० ॥

॥ ढाल दूसरी ॥

धन्नो नाम कुमार बैठो गोख मंझार सुणजो चित्त लगाय लोगा ने जाता देखिया रे ॥१। कहे सेवग ने एम लोग जावे छे केम सुण०। कुण ओ मेलो मांडियो रे०॥२॥ सेवग कहे जोडी हाथ समवसरिया जगन्नाथ सुण० । परषदा जावे वंदवा रे ॥३॥ सुण सेवग री बात लागे अमृत समान सुण० । वांदवा मन उमंगियो रे० ॥४॥ सकल सज्या शृंगार साथे सहु परिवार सुण० । जमाली जिम चालिया रे० ॥५॥ आया जहां जिनराज पांच अभिगम साज सुण० । बैठा सन्मुख वीर ने रे० ॥६॥ भगवंत दे उपदेश काल घटे हमेश सुण० । जन्म मरण रोग लागियो रे० ॥७॥ अस्थिर संसार नी मौज जैसे उनाला री सांज सुण० । छेडली पड़सी देहड़ी रे० ॥८॥ मेलो मंडियो सराय आया जाएया उठ जाय सुण० । जेम

वटाऊ पामणो रे० ॥९। इतर कुटुम्ब परिवार फंसियो माया जाल सुण०। भॅवरो जिम कमल परे रे० ॥१०॥ सांभल श्रीजिन वाण लागो वैराग नो बाण सुण०। धन्नो कहे कर जोड ने रे ॥११॥ मैं लेसूं संयम भार, छोड़ बत्तीसे नार सुण०। आऊं आज्ञा लेयने रे० ॥१२॥ भाखे श्री जिणराज जिम थाने सुख थाय सुण०। जेज मत करो इण कार्य में रे० ॥१३॥ वांदिया दीन दयाल आ थई दूजी ढाल सुण०। माता पासे आविया रे० ॥१४॥

॥ढाल तीसरी॥

घर आई माता ने इम कहे रे लाल हुं लेसुं संजम भार सुणो माता जी हो आज्ञा दीजे मो भणी रे लाल। ढील न करो लिगार सु० कृपा करीने दीजे आज्ञा रे लाल ॥१॥ एह वचन श्रव णे सुणी रे लाल मूर्छागत थयी मात हो सु०। सावचेत हुई चिंतवे रे लाल आज्ञा दीधी किम जाय सुत सांभलो रे चारित्र छे बहु दोहिलो रे लाल ।२॥ पांच महाव्रत पालना रे लाल करणो माथा रो लोच सुत०। बावीस परिसह जीतना रे लाल किंचित न करणो सोच सुत० ॥३॥ खड्ग धारा पे चालणो रे लाल करणो उग्र विहार सुत०। मोह माया सहु छोड ने रे लाल शील पालनो नव बाड़ रे सुत० ॥४। औषध सावद्य ना करे रे लाल मारग दुखकर घोर सु०। हरगिज थासुं ना पले रे लाल मत

कर कूडी भोड़ सु० ॥५॥ पुत्र एकाएक मांरो रे लाल आज्ञा देऊँ किण रीत सुत० । ए कंचन ए कामिनी रे लाल सुख भोगवो धर प्रीत सुत ।६॥ कुंवर कहे माता सुणो रे लाल गयो हुँ नरक निगोद रे मांय सुणो० । दुख अनंता मैं सह्या रे लाल कयो कठा लग जाय सुण० ॥७॥ हरगिज माने वरजों मती रे लाल हुं छोड़ सुं माया जाल स० । माता वरजती थाकी गई रे लाल पूरी थई तीजी ढाल रे ॥८॥

॥ ढाल चौथी ॥

हॉ रे लाल महाबल कुंवर तणी रे, माताजी आज्ञा दीनी रे ला. । कृष्ण थावरचा नी परे मोटे मंडाने दीक्षा लीधी रे लाल ॥१॥ गेणा गांठा उतारिया, माता लीना खोला ने मंझार रे लाल । ढलक ढलक आँसू पड़े जाणे टूट्यो मोत्यां रो हार रे लाल वि० ॥२॥ माता प्रभु ने दीनी भोलावणी बेटा ने देवे सीख रे लाल । क्रिया में कसर राखे मती गुरु आज्ञा में रहीजे ठीक रे लाल वि.॥३॥ माता चरण वांदी गई निज स्थान पे, धन्नोजी हुआ अणगार रे लाल । नित सुमति गुप्ति नी खप करे किरिया पाले अपार रे लाल वि. ॥४॥ चरण वांदी जिनराज ना दीक्षा लीधी तिण वार रे लाल । बेले बेले करुं पारणो जावजीव न पाडूँ भिन्न रे लाल वि. ॥५॥

जिम सुख होवे तिम करो आज्ञा दीवी श्री जिनराज रे लाल ॥ धन्नोजी सुण हर्षित हुवा अवे सारुं आतम काज रे लाल ॥वि०॥६॥ आयो वेला केरो पारणो, काकंदी नगर मंझार रे लाल ॥ गौतम स्वामी तणी पर जाय वीर देखाविया रे लाल ॥वि०॥७॥ आज्ञा हुई है जिनराज नी जिम बिल मे पैठे भुजंग रे लाल ॥ मूर्च्छा गृद्धि पणो नही, मुनि मांडयो कर्मा सु' जंग रे लाल ॥वि०॥८॥ आहार मिले तो पाणी न मिले, पाणी मिले तो न आहार रे लाल ॥ दीनपणो आणे नही, क्रोधादिक सहु मन जीता रे लाल ॥वि०॥९॥ जन पद देश में विचरतां, धन्नाजी श्री वीर ने संग रे लाल ॥ सामायिक आदि थेवरा, मुनि भण्या इग्यारे अंग रे लाल ॥वि०॥१०॥ तपस्या अति कठिन करे, लेवे आतापणा जोर रे लाल ॥ ध्यान मांहे रिख लीन है, मुनि करणी करे छे घोर रे लाल ॥वि०॥११॥ काया सूख खंखर भई जाव खंदक नी परे जाण रे लाल ॥ चौथी ढाल पूरी हुई आगे सुणो शरीर वखाण रे लाल ॥वि०॥१२॥

॥ ढाल पांचवी ॥

सूखी साल काष्ट नी, पावड़ी जेवा पग दोय सूखा मांस ने लोही सूख गया, दीसे दुर्बल लूखा रे ॥ धन्ना

मुनिश्वर तप तपे ॥१॥ सुरत जाय लागी मुखो रे ॥ काया तो खंखर डरावनी सूखो सरप नो खोखो रे धन्ना० ॥२॥ मूग उड़द कोमल कुली, सूखी तेनी फलियां रे ॥ तेवी धन्ना मुनिराज नी सूखी पग नी अगुलियां रे ध० ॥३॥ पंखी तो काग ने मोरिया तेवी सुखी पगनी जंघा रे ॥ गोडो तो गांठ वनस्पति पिण परिणाम चंगा रे ध० ॥४॥ साथल पिंगु कूपल सारखी कडिया ऊंट अरध पगो रे ॥ उदर तो जाणे सूखी दीवडी पेट ऊंडो अथागो रे ध० ॥५॥ आरिसा उपरा ऊपर मेलिया, जेवी पासलियां जाणो रे ॥ हाथ कड़ासन जेहवा पासली लारली पिछाणो रे ध० ॥६॥ छाती तो जाणे दुपडो वींजणो बांस सुखी खेजड़ फलियां रे ॥ हाथ नो पंजो वनरो पानडो, कुलथ फली सूखी उंगलियां रे ध० ॥७॥ गलो तो सूखो करवा जेवो दाढ़ी आंवा कुली जानो रे ॥ सूखी जलोख होठ जेवा जिह्वा सूखी साग पानो रे ध० ॥८॥ नाक बिजोरा नी कातली आंख्यां छिद्र दो वीणा रे ॥ अथवा तारो परभातियो, कान कांदा सु भीणा रे ध० ॥९॥ सूखो कोलो अथवा तूम्बड़ो जेवों सूखो रिपि नो शीशो रे ॥ काकड़ा भूत काया कसी सूखा बोल इक्कीसो रे ध० ॥०॥ उदर कान होठ जीभ में या में साम नसा जालो रे ॥ सतरे बोला में गालिया हाडका, डील दिसै महा विकरालो

रे ध० ॥११॥ ढीलो पिलाण तुरंग रो पागडो, तेवा लटको दोय हाथो रे ॥ अहु बल सुं हाले चालवे धुजे कंपण वाय माथो रे ध० ॥१२॥ वाजे खीसारा तिल री सांकली, जिम वाजै खड़ खड़ हाडो रे ॥ ढांकिया अग्नि तणी, पड़े मांय तेज से गाडो रे ध० ॥१३॥ ढाल थयी आ पांचमी, मुनि काया जोर कच्ची रे ॥ परवा नहीं राखी डीलरी, सुरत सुगति मे वसी रे ध० ॥१४॥

॥ ढाल छठी ॥

नगरी राजगृही समवसरिया हो ॥ जिणंद राय ॥ करता उग्र विहार हो, परखदा आई वंदवा ॥ जिणंद ॥ श्रेणिकराय आयो सपरिवार हो ॥१॥ धरम कथा जिनवर कही ॥ श्रेनिक राय ॥ वंदे शीस नमाय दुःख हर करणी निर्जरा ॥ जिणंद राय ॥ चवदे सहस्त्र मे कुण थाय हो २ वीर जिणंद इम उच्चरे ॥ श्रेनिक राय ॥ मुनिवर चौदह हजार हो मारो धन्नो नाम अणगार हो ॥३॥ श्रेणिक कहे कारण किसो ॥ जिणंदराय ॥ कह तो लारलो सहु विस्तार हो वीर वांदी धन्नाजी तणा । श्रेनिक राय ॥ चरण वंदे बारंबार हो ॥४॥ सुकृत नर भव थै लियो धन रिषि तुम अवतार हो स्वयं वीर वखानिया दुष्कर करणी अवतार हो ॥५॥ नृपति गुण कीर्तन करी वांदिया छे

जिनराय हो ॥ राजा गयो निज स्थान पे मुनिवर ना गुण गाय हो ।।६।। ढाल छठी पूरी थयी, विराज्या राज गृह बाग हो ॥ धन्नोजी जाग्या रातरा जाग्या वहु वैराग्य हो ॥७।

॥ ढाल सातवीं ॥

धन्नोजी रिख मन चिंतवे, तप करतां हम तणी टूटी काय के ॥ वीर जिणंद ने पूछ ने आज्ञा ले संथारो ठाय के ॥ धन करणी मुनिराज री ।।टेर॥१॥ प्रह उगे वांद्या श्री वीर ने, श्री मुख आज्ञा दी फुरमाय के ॥ विमल गिरी थेवरां संगे चाल्या समस्त साधु खमाय के ॥धन०॥२॥ आयो संथारो एक मास नो, आया प्रभुजी रा गोढ के ॥ भडोपकरण सब सौंपने गौतम पूछे वे कर जोड़ के ॥धन०॥३॥ तप तप्या मुनिवर आकरा, कहा स्वामी कहां जाय वासो लीदो के ॥ सागर तेतीस रो आउखो, नव महीना में स्वारथ सिद्धि लीदो के ।धन०॥४॥ महाविदेह क्षेत्र में सींझ से, विस्तार नवमां अंग माय के ॥ विसलपुर गुण गाविया पूज्य रामचन्द्र प्रसाद के ॥धन०। ५॥ संवत अठारह सौ उनसठे वैसाख वद पक्ष मांय के ॥ आस करण गुण गाविया, भवियण सुनो चित लाय के ॥धन०॥६॥ सत ढालियो पूर्ण हुवो,

सूतर तणे अनुसार के । वुद्धि सारु गुण गाविया, धन्ना मुनि धन मानव भव पाय के ॥धन०॥७॥

॥ श्री खंदक मुनि को चौढालियो ॥

दोहाः-प्रणमुं जगनायक सदा, भव भंजन भगवंत ॥
आचार्य उपाध्यायजी गौतमादिक सब संत ॥
श्री गुरु चरणांवुज नमूं समरुं सरस्वती मांय ॥
खंदक मुनि गुण गावसुं सुणजो चित्त लगाय ॥

॥ ढाल पहली ॥

सावत्थि नामे नगरी भले री गढ मठ पोल प्रकारो । हाट हवेली महल मालिया शोभा विविध प्रकारो रे ॥ प्राणी धर्म सदा सुखदायी ॥१॥ कनक केतु तिहां भूपति जाणो धम केतु गुणवंतो ॥ शूरवीर महि मंडल मांही, प्रजा जनक जसवंतो रे । प्रा०॥२॥ मलया राणी पति सुख दाणी वाणी मधुर गज गमणी ॥ चन्द्र वदन मृग नयनी शाणी, शील रूप गुण रमणी रे ॥प्रा०॥३॥ तस नंदन सुखप्रद सकल ने खदक नाम कुमारो ॥ गुण तस वंदक चंद्र ज्युं शीतल शूरवीर सिरदारो रे ॥प्रा०॥४॥ बहोत्तर कला मांही अधिक विचक्षण दिन दिन कीर्त्ति सवाई ॥ मात पिता की भक्ति कारक भद्रक भाव सदाई रे । प्रा०॥५ । तिण अवसर मुनि विजय सेण रिख,

गुण रतनाकर भारी ॥ परम वैरागी आश्रव त्यागी धर्म रागी तपधारी रे ॥प्रा०।६॥ श्री संघ मंडण भ्रम विहंडण, बहु शिष्य ने परिवारे ॥ ग्राम नगर पुर पाटन विचरे, भवि प्राणी बहु तारे रे ॥प्रा०॥७॥ अनुक्रमें आया तिण पुर मांही उतरिया बाग मंझारो । श्रावक सुण के अधिक आनंदे, वंदन गया अणगारो रे ॥प्रा०॥८॥ भूपति निज संपत्ति सब लेई, मुनि वंदन परवरिया ॥ अवसर देखि देशना देवे ज्ञान गुण का वे दरिया रे ॥प्रा०॥९॥ ए संसार सुपनवत माया, देखत में विरलावे ॥ धन संपत सब कारमी जाणे ज्यों बादल दल छावे रे ।प्रा०॥१०॥ नीट नीट यह नर भव पायो, रोटी साटे मति हारो । धर्म रतन राखो अति जतने परभव खरची आ लारो रे ॥प्रा०॥११॥ कर्म निवारो धर्मज धारो, वारो विषय विकारो । केवल पावो मुक्ति सिधावो, उतरो भव जल पारो रे ॥प्रा०॥१२॥ इत्यादिक उपदेशना दीनी, प्रथम ढाल के मांही ॥ तिलोक रिख कहे भविजण प्राणी, सुण के हरख्या वणाई रे ॥प्रा०॥१३॥

दोहाः—खदक कुंवर तब वीनवे, जोड़ी दोनों हाथ ॥
सत्य वाणी प्रभु ताहरी, धर्म बोलाऊं साथ ।१॥
आथ नहीं इण सारखी, मैं जाणु निस्तार ॥
मात पिता आज्ञा लेई लेउ संजम भार ॥२॥

मुनिवर कहे जिम सुख हुवे, तिम करो तत्काल ॥
धर्म ढील न कीजिये, भाखी ए दीनदयाल ॥३॥
मुनि वंदी घर आविया, खंदक नाम कुमार ॥
किण विध मांगे आज्ञा ते सुणजो अधिकार ॥४॥

॥ ढाल दूसरी ॥

कुंवर कहे कर जोड़ ने स कांई यह संसार असार ॥ धन सपत सब कारमी स कांई शंका नहीं लगार हो ॥ माताजी मोरा, आज्ञा देवो तो संजम आदरु ॥१॥ वचन सुणी इम पुत्र का स कांई मुर्च्छाणी तत्काल ॥ सुद्ध बुद्ध सगली बीसरी स कांई, मोह की मोटी जाल हो ॥ माता०॥२॥ शीतल नीर समीर प्रभावे, कांइक थयी हुशियार ॥ करुणा स्वरे नयनां जल बरसे, ज्यों श्रावण जलधार हो ॥माता०॥३॥ तू मुझ नंद एकाकी कुल मे जीवन प्राण आधार ॥ उंवर फूल सम दरशन थारो, मत ले संजम भार हो ॥ सुण नन्द हमारा, जोबन ढलियां सु लीजे जोग ने ॥४॥ विनय करी ने कुंवर प्रजपे, काल व्याल विकराल ॥ हरि हर इन्द्र चन्द्र नहीं छोड़े, छिन में करे बेहाल हो ॥माता०॥५॥ जिण ने हेत होय काल रिपु से, भागी जाणे की पहोंच ॥ अथवा जाणे हुं कदी न मरशुं, उण के तो नहीं सोच हो ।माता०॥६॥ राज लक्ष्मी संपत बहुली, हय गय दल

बल पूर ॥ ए भोगव फिर संजम लीजे, मान केणी जरुर हो सुन०॥७॥ धन दौलत और माल खजाना ज्युं बिजली चमकार ॥ चोर अग्नि स्वजन भय धन में, नरकगति दातार हो ॥माता०। ८॥ कोमल काया कंचन वरणी, तरुणी सुं सुख भोग ॥ वृद्धपणे जब आवे तन में, तब आदरजे जोग हो ॥सुन०॥९॥ काया माया बादल छाया, मल मूत्र भडार ॥ रोग शोक नो भाजण इण में तप जप संयम सार हो ॥माता०॥१०॥ भोग हलाहल जहर सुं ज्यादा फल किंपाक समान ॥ अल्प सुख सुं दुख अनंता शहद छुरी जिम जाण हो ॥माता०॥११॥ रतन पिंजरे शुक नही राजी तिम हुँ इण संसार ॥ जनम मरण, सुख मोहनो बंधन कहतां न आवे पार हो ॥माता०॥१२॥ मोह नाता वश माता बोले, तूं वत्स अति सुकुमाल ॥ पांच महाव्रत मेरु समाना, तोड़नो मोह जंजाल हो ॥ सुण पुत्र पियारा सजम लेणोजी दुक्कर कार छे ॥१३॥

पग अणवाणे चालणो स कांई लोचन सोंच अपार ॥ बाईस परिषह जीतणा स कांई चलणो खांडा धार हो ॥सु०॥१४॥ घर घर भिक्षा मांगणी स कांई, दोष बयालीस टाल ॥ कोइक देवे उलट परिणामे कोईक देवे गाल हो ॥सु०॥१५॥ वाय भरेवो कोथलो स कांई

दुक्कर छे जग मांय ॥ शिला अलूणी चाटणी स कांई, दीक्षा अति दुखदाय हो ॥सु०॥१६॥ कुंवर पयंपे सत्य कही सब, कायर नर ने जाण ॥ शूरवीर ने सहेज छे संजम, शंका रंच न आण हो ॥सु०॥१७॥ तिलोख रिख कहे दूजी ढाले, लीनी दृढ़ता धार । मात पिता थाका समझातां, आज्ञा दी तिणवार हो ॥सु०॥१८॥

दोहा—कियो महोत्सव दीक्षा तणो, सूत्रमांहे विस्तार ॥
पांच महाव्रत आदर्या, धन खंदक अणगार ॥१॥
मात पिता मोहनी वशे, पंचसया परिवार ॥
राख्या रक्षा कारणे, सुभट वड़ा होशियार ॥२॥
जिहां जिहां मुनिवर संचरे, तिहां तिहां रहे सो लार ॥
नृप चुकावे नौकरी जाणे नहिं अणगार ॥३॥

॥ ढाल तीजो ॥

खंदक मुनि गुण वंदक जग में, पंच महाव्रत पाले रे लो । पांच समिति तीन गुप्ति आराधे, पंच प्रमाद मद टाले रे लो ॥खं०॥१॥ छः काया प्रतिपाल दयानिधि पांच क्रिया परिहारी रे लो । सतरा भेदे संजम पाले, द्वादश तपस्या धारी रे लो ॥ख॥२॥ चाकर ठाकर शत्रु सज्जन, सम जाणे रिखराया रे लो । क्षमा सागर गुण रतनाकर, त्यागी जगत की माया रे लो ॥खं॥३॥ सहे परिषह शूर परिणामें, चार कषाय निवारी रे लो । मास

मास तप करत निरंतर, शम दम उपशम धारी रे लो ॥खं॥४॥ ज्ञान प्रबल मुनि ध्यान मे शूरा, एकाकी पड़िमा विहारी रे लो। ग्राम नगर पुर पाटण विचरे, तारे बहु नर नारी रे लो ॥ख॥५॥ एकदा मासखमण तप करतां कुंती नगरी में आया रे लो ॥ सुभट विचारे इहां मुनिवरना, बहेन बनेवी राया रे लो ॥ख॥६॥ इहां डर कारण नहीं जरा भर, उतरिया बाग मझारे रे लो ॥ लागा सहुभोजन करवाने, ते मुनिवर तिण वारो रे लो ॥खं॥७॥ प्रथम पहर में सूत्र चितारे, दूजी मे ध्यान ज ठाया रे लो ॥ त्रीजी पहेरसी पारणा, कारण मुनि गोचरिये सिधाया रे लो ॥खं०॥८। कोमल काया पग अणुवाणे, परसेवे भीज्यों शरीरो रे लो। खड़ खड़ बाजे हाड़ मुनि ना, चाल चले अति धीरो रे लो ॥ख. ९॥ चल आवे नृप महलनी पासें राजाजी तिण वारो रे लो। राणी संघाते चोपड़ खेले, हर्ष वदन हुसियारो रे लो ॥खं॥१०॥ राणी की दृष्टि पड़ी रिषि ऊपर, मन में ताम विचारी रे लो। मुझ बंधव पण संजम लीनो, सहतो होसी दुःख भारी रे लो ॥खं ११॥ ऊणारत आणी अति राणी, आंसू तत्क्षण आया रे लो। नृप पूछे सो कांइ न बोली नीचे देख्यो तव राया रे लो ॥खं॥१२॥ मुनिवर देखी वैर ज जाग्यो, अधिको क्रोध भराणो रे लो। ओ मोडो इण पंथ कयुं आव्यो, चाकर सुं कहवाणो रे लो ॥खं.॥१३॥

पकड़ ले जावो जंगल मांही, सब तन खाल उतारो रे लो। छोडो मत इण ने कोई प्रकारे, मानो हुकम मारो रे लो। खं ॥१४॥ आगी पाछी कांइ न सोची पूरव वैर प्रभावे रे लो। त्रिलोक रिख कहे तीजी ढालें, राय हुकम फरमावे रे लो ॥खं॥१५॥

दोहा—सुभट आया तत्क्षण तदा, ने मुनिवर नी पास।
ग्रहवा लाग्या कर भणी, तव पूछे मुनि तास ॥१॥
सो कहे आज्ञा राय नी खाल उतारण काज।
ले जावां श्मशान में, तव बोल्या रिषिराय ॥२॥
हाथ ग्रहो मत माहरा, हुं आवुं तुम लार।
मुनि पहुंचा श्मशान में, मन मे साहस धार ॥३॥

॥ ढाल चौथी ॥

खंदक मुनि श्मशान में रे, आलोयणा शुद्ध कीध। नमोत्थुणं सिद्धने दियो, दूजो अरिहंता ने दीध रे ॥धन धन मुनिराया ॥१॥ पाप अठारा त्यागिया रे, जावजीव चौविहार ॥ काया माया ममता तजी कियो, पादोपगमन संथार रे ॥धन०॥२॥ उभा मुनि निश्चलपणे रे, ज्यों पाट्यो छोले सुतार ॥ राय सुभट लिया पाछणा भाई, तीखी छे तिणरी धार रे ॥धन०॥३॥ खाल उतारी देहनी रे चरड चरड तिणवार ॥ तरड तरड रुधिर बहे भाई, दया न आणी लिगार रे ॥धन०॥४॥ सिर सु

लगाई पग लगे रे, छोली मुनिवर खाल ॥ नाके सल लाया नही भाई, मेटी क्रोध की जाल रे ॥धन०॥५॥ उजली वेदना ऊपनी रे, कहेतां न आवे पार ॥ के दुःख जाणे आतमा भाई के जाणे किरतार रे ॥धन०॥६॥ मुनिवर मन में चिंतवे रे, उदे थया मुझ कर्म ॥ सम परिणाम राख्यां थका भाई, निपजसी आतम धर्म रे ॥ध०॥७॥ अज्ञान पणे, अति हरख सुं रे बांध्या निकाचित पाप ॥ भुगतियां बिन छूटे नहीं भाई, भोगवे आपो आप रे ॥ध०॥८॥ तुं पुद्‌गल सुं भिन्न छे रे, अजर अमर अविकार ॥ नाश नहीं त्रिहुं काल में भाई, मन मांही साहस धार रे ॥ध०॥९॥ थिर परिणामें मुनिवरो रे, ध्यायो शुक्ल ज ध्यान ॥ अंतगड़ केवल पायने भाई, पाया पद निर्वाण रे ॥ध०॥१०॥ धन जननी जिण जनमिया रे, धन धन ते अणगार । पाछे देही पडी भू परे भाई पेली लह्यो भव पार रे ॥ध०॥११॥ हवे वीतक सुणो पाछलुं रे सुभट जे मुनिवर लार ॥ देख्या नहीं रिषि नयण सुं भाई शोधे नगर मझार रे ॥ध० ।१२ तिण समे दासी रावली रे, ओलखिया असवार ॥ पूछ्युं कारण तिणे दाख्युं भाई, राणी थी कह्या समाचार रे ॥ध०॥१३॥ राणी कहे निज कंत सुं रे सुण राजा मुरझाय ॥ वीतक वात कही तदा भाई, राणी पडी मूर्च्छाय रे ।ध०॥१४ फिट फिट कंता शुं कियो रे,

म्होटो ए अकाज ।। मुझ वीरो हीरो गुण तणो भाई महा मोटा रिखराज रे ॥ध०॥१५॥ चण एक तो धरती ढले रे चण एक नाखे निसास ॥ चण एक दे ओलुंभा रे भाई, रुदन करे अति त्रास रे ॥ध०॥१६॥ रोवे राणी रावली रे, काने सुणी नहीं जाय ॥ रोतां सहु रोवाड़ियां भाई हाहाकार पुर मांय रे ॥ध०॥१७॥ झूरे सुनंदा बेनडी रे झूरे पुरिससेण राव ॥ मोड़ं अकारज ए थयो भाई, घात करी मुनिराय रे ॥ध०॥१८॥ तिणसमे केवल धारण रे, समोसरया मुनिराय ॥ राय गयो वंदन तणी भाई, पूछे शीश नमाय रे ॥ध०॥१९॥ निरपराधी महामुनि रे, किम उपनो मुझ द्वेष ॥ पूरव वैर कांई हुतो भाई, ते दाखो कर्म रेख रे ॥ध०॥२०॥ मुनिवर कहे सुण भूपति रे, पूरव भव संस्कार ॥ काचरा नो जीव तुं हतो भाई, नृपनंद खंदकुमार रे ॥ध०॥२१॥ छाल उतारी हरख शुं रे आनंद अंग न माय ॥ कीधी सराहणा तिण तिह भाई, वार वार मन वाय रे ॥ध०॥२२॥ वैर जाग्यो रिपि देख ने रे, कर्म न छोडे कोय ॥ जिन चक्री हरिहर भणी भाई हिरदे विमासी जोय रे ॥ध०॥२३॥ कर्म निकाचित बांधिया रे तेरे क्रोड भव माय ॥ काचरा नुं जीव तुं थयो भाई, ते तो थया मुनिराय रे ॥ध०॥२४॥ कर्म समो शत्रु नहीं रे, कर्म करो मत कोय ॥ रखवाला पांच सौ सुभट था भाई आडो आयो

न कोय ।ध०॥२५॥ राणी राय अने सुभटां रे सांभली ए अधिकार ॥ संजम लेई मुक्ते गया भाई, वरत्यो जय-जयकार रे । ध०॥२६॥ संवत उगणीशे गुनचालीस में रे, जेठ शुक्ल दूज जाण ॥ लश्कर घोड़नदी विषे भाई, गुण किया वखाण रे ॥ध०॥२७॥ खंदक जिम क्षमा करो रे तो उतरो भवपार ॥ तिलोख रिख कहे चौथी ढाल में भाई धर्म सदा श्रीकार रे ॥ध०॥२८॥

॥ अथ मेतारज मुनि नुं चौढालियो ॥

दोहा—श्रीजिन समरुं भावसुं, सत गुरु लागूं पाव ।
कथा अनुसारे गावशुं मेतारज मुनिराय ॥१॥

पूरव भव दो मित्र था ब्राह्मण केरी जात ।
देशना सुणी रिषिराज की संजम लियो संघात ॥२॥

संजम पाले भावसुं, तपस्या करे करूर ।
एक दिन मन में चिंतवे पूरव पाप अंकुर ॥३॥

जैन धर्म श्रीकार छे शंका नहीं लगार ॥
स्नान नही इण मार्ग में ए तो कही आचार ॥४॥

कुलमद दुगंछा भाव थी नीच कुल बंधन कीण ॥
आलोचणा विण सोचवी, सुरगति दाणुं लीन ॥५ ।

दोय मित्र तिहां देवता, बोले आपस मांय ॥
जो पहेलो नरभव लहे घालीजे धर्म मांय ॥६॥

संजम लेवाणो तिन भणी करि कोय ढाय उपाय ॥
इम संकेत कीनो उभे, सुरभव आपस मांय ॥७॥
कुलमद जिन कीनो हुतो, ते पहेलो चव्यो तेथ ॥
मातंग कुल में अवतरयो, उदय कर्म के हेत ॥८॥
शेप पुण्य प्रताप थी, पायो संपति सार ॥
किण विध ते संयम लियो ते सुण जो अधिकार ॥९ ।

॥ ढाल पहली ॥

शहर राजगृही दीपतु राज करे श्रेणिक राय रे ॥ सेठ युगधर दीपतो, लच्मी वंत कहाय रे ॥शहर०॥१॥ श्रीमती नार सुलच्चणी, रूप गुणे अधिकाय रे ॥ अवगुण कर्म प्रभाव थी मृत वंझणी ते थाय रे ॥श०॥२॥ एकदा गर्भ रह्यो तेहने चिंतवे ते मन मांय रे ॥ जीवे नहीं बालक माहरे, धन रखवालक नांय रे ॥श०॥३॥ जिम संतति रहे कुल विपे, तिम करुं कोई उपाय रे । एटले आवी मातंगणी, गर्भवती सा देखाय रे ॥श०॥४। तिण ने एकान्ते लेई करी, दीयो घणो सम्मान रे ॥ संपत्ति छे मुझ घर घणी, जीवे नहीं मुझनी संतान रे ॥श०॥५॥ जो तुज होवे नंदन कदा गुप्त पणे घर मोय रे ॥ मेलजे तुं निशि ने समे ठीक पडे नहीं कोय रे ॥श०॥६॥ द्रव्यं देशुं तुझ सामठुं, होसी सुखी तुझ पूत रे ॥ प्रेम हुं राख शुं अति घणो, रहेसी मुझ घर

तणो सूत रे ।।स०।।७।। राजी थयी तिणे मानियो, जनमियो, नंद जिणवार रे ।। प्रछन्नपणे तिणे मोकल्यो, ठीक नहीं पुर नर-नार रे ।।श०।।८।। जनम महोत्सव सब ही कियो, दिवस थया जब बार रे ।। दियो दशोट्टण जात में, वरतिया मंगलचार रे ।।श०।।६।। नाम मेतारज थापियुं प्रतिपालण करे पंच धाय रे, ।। पूरव पुण्य प्रभाव थी, रूप गुणे अधिकाय रे ।स० ।।१०।। कुलमद कियो तिण कर्म थी, महेतर घर अवतार रे ।। बीज शशि जिम दिन दिने, वधे तस जस विस्तार रे ।।स०।।११।। बहोतर कला में पंडित थयो, आवियो यौवन मांय रे ।। सिलोख रिख कहे पहली ढाल में, पुण्य थी सुख सवाय रे ।।स०।।१२।।

दोहाः—यौवन वय जाणी करी, कन्या परणाई सात ।।
पंच इन्द्रिय सुख भोगवे आनंद में दिन रात ।।१।।
हवे तिण अवसर ने विषे, पूर्वे कीनो करार् ।।
ते सुर आई उपदिशे ले सुं संजम भार ।।२।।
तल्लालीन ते भोगवे मानें नही लगार ।।
कीनी सगाई वलि तणे ते सुणजो अधिकार ।।३।।

।। ढाल दूजो ।।

आठमी कन्या तेह परणवा उम्माह्या ।। म्हारा लाल।।परण०।। कीनी सजाई जान, जानी भेला थया

॥मा०॥जा०॥ केशरियो जामो पहेर मुकट सिर पर धरयो ॥मा०॥मु०॥ माथे बांधियो मोड बींद नो वेश करयो ॥मा०॥बी०॥१॥ शिर पर शिर पेच जडाव, तुर्रो झुगझुगे सही ॥मा०॥तु०॥ कलंगी तिण ऊपर जाण, अधिक झलकी रही। मा०॥अ०॥ झगमगे कुंडल कान, हार झगमग करे ॥मा०॥हा०। बाजुबंद भुजदंड, पोंची कड़ा कर सिरे ॥मा०॥पो०॥२॥ मुंदरी अंगुली के मांय झलके हीरा तणी ॥मा०॥झ०॥ कमर कंदोरो जडाव, सुवर्ण की खिंखणी ॥मा०॥सु०। अत्तर अंग लगाय, तिलक भाले करयो ॥मा०॥ति०॥ कियो उत्तरासण तेण सुर थकी सो नहीं डरयो ॥मा०॥सु०। ३॥ बैठो होय असवार लाडो बण्यो सो सही ॥म०॥ला०॥ गावे मंगल नार, अधिक उच्छावही ॥मा०॥अ०॥ धप मप मादल नाद, के साद सुहामणो ॥मा०। के०॥ धड़िदा धडिंदा ढोल, तिड़ किड़ त्रांसा तणो ॥मा०॥ति०।४॥ चाल्या अधिक उत्साह, व्याह करवा भणी ॥म०।वि०॥ आया मध्य बजार बणी शोभा घणी ॥मा०।ब०॥ तिण समै सो सुर कीध, वात कौतुक तणी ॥मा०।वा०॥ मातंग मन दियो फेर, हेर अवसर अणी ॥मा०।हे०।५॥ लीनो हाथ में लट्ठ, धठ धीठो घणो ॥मा०।ध०॥ आयो जान के मांय धरी कुलठ पणो ॥मा०।ध०॥ माने नहीं कछु शक, वंक एकी जणो ॥मा०।व०॥ आयो सो बींद हजूर,

काम नहीं दूर तणो ॥मा०।का०।६॥ सघला ही रह्या देख, बोले सुणो नंदना ॥मा०।बो०॥ हुं छु सगो तुझ बाप, जाणे मत फंदना ॥मा०।जा०॥ सात कन्या ब्याही वणिक परणाऊ एक माहरी ॥म०।प०॥ पकडी अश्व लगाम, कोई नहीं बाहरी ॥मा०।को।७॥ बदलायो चित्त लोक धोको सबने पड्यो ॥मा० धो०॥ साची दीसे ए बात, जोग इसडो घडयो, ॥मा०।जो०॥ लोक गया सब ठाम बींद रह्यो एकलो ॥मा०।बी।। अधिक खिसियाणो होय, देखे सो भुंई तलो ।मा०।दे०।८॥ तिण समे सो सुर वेण, कहे श्रवण विषे ॥मा।क०॥ ले हवे संजम भार, कहे सो भूंडो दिसे ॥मा०।क०॥ हवे पाछो होय सुजस, परणुं कन्या वणिक नी ॥मा०।प०॥ नवमी परणूं भूप धूया श्रेणिक नी ॥मा०।धू०।९॥ बारा वर्ष गृहवास, रहूँ तदनंतरे ॥मा०।र०॥ लेसुं पछे संजम भार, वचन ए नही फिरे ॥मा०।व०॥ एम सुणी सुर वेण, सेण मन फेरियो ।मा०।से०॥ भूठी मातंग नी बात बींद वली हेरियो ॥मा०।बीं०।१०॥ हुई सजाई सर्व तिहां वली विवाह नी ॥मा०।ति०॥ आया सोई बाजार बात थयी न्यावनी ॥मा०।वा०॥ महेतर आयो सो चाल, जान मांही दोडी ने ॥मा०।जा०॥ उण मदिरा पीध बोले कर जोडी ने ॥मा०।बो०।११॥ ए नहिं माहरो नंद, खोटो हुं बोलियो, ।मा०।खो०॥ माफ करो अपराध,

कह्यो वे-तोलियो ॥मा०।क०॥ भर्म टल्यो सहु लोक, कन्या परणी सही ॥मा०.क०॥ तिलोकरिख कहे दूजी ढाल दुविधा राखी नहीं ॥मा०।दु०।१२॥

दोहा–राजसुता परणावनी सुर सोची ने तास ।
दीनी बकरी रुयड़ी, उगले रतन उजास ॥१॥
रत्न राशि जगमग करे देखे बहु नर नार ।
पुर में पसरी वार्ता मेतारज पुण्य सार ॥२॥

॥ ढाल तीजी ॥

राय सुणी इम वारता, मन में विस्मय थाय हो लाल । बकरी लावो वेग सु', जेज करो मती कांय हो लाल ॥रा०।१॥ सुभट सुणी चल आविया, गुणधर ने गेह हो लाल । मांगे बकरी सेठ थीं, उगले रत्न ज जेह हो लाल ॥रा०।२॥ सेठ वदे सुभटां भणी, मैं नहीं मालक तास हो लाल । मेतारज ने पूछि ने, ले जावे थें उल्लास सु' लाल ॥रा०।३॥ कुंवर कने जाची तिका, सो बोले तिणवार हो लाल । बकरी जीवन प्राण छे, रत्न पुंज दातार हो लाल ॥रा०।४॥ सुभट गया फिर राय पे दाख्या सहु समाचार हो लाल । सुणि क्रोधातुर बोलियो जेज न करो लगार हो लाल ।रा०।५॥ हल्कारिया सुभटां भणी धसमस करता जाय हो लाल ।

छारी लाया छोडिने, पूछियो तिणसुं नाये हो लाल ।।रा०।६।। राय कचेरी लाविया, चण अंतर नी मांय हो लाल । थकरी छेरी तिण समे, दुर्गंध रही फैलाय हो लाल ।रा० ७।। सभा सहु व्याकुल थई, उठि चाल्या सहु लोक हो लाल । पूछे भूप कारण किसुं बात थई ते फोकू हो लाल ।रा०।८ सुभट कहे झूठी नहीं, एही रतन दातार हो लाल । पूछे कारण कुंवर सुं सुभट गया तिण वार हो लाल ।।रा०।६।। पूछयो कारण कुंवर थी, किण कारण दुर्गंध हो लाल । उगले नहीं किम रत्न ते, दाखो तेह प्रबन्ध हो लाल ।।रा०।१०।। सो कहे मुझ राजी करे, रत्न उगले श्रीकार हो लाल । नहीं तो ए छे रे बुरी, शंका नहीं लगार हो लाल ।।रा०।११।। राय कहे जे छारिका देने रत्न श्री मोय हो लाल । मुख मांगी वस्तु तिका देउं हुं खुशी होय हो लाल ।।रा०।१२।। सो कहे कन्या तुम तणी, दो मुझ ने परणाय हो लाल । रत्न उगलसी ए भला, हाम भरी तब राय हो लाल ।।रा०।१३।। गुण मजरी कन्या भली, कीधो व्याह उत्साह हो लाल । तिलोख रिख कहे तीजी ढाल में, कुंवर नो पुरियो उमाह हो लाल ।।रा०।१४।।

दोहा-नव कन्या परणी भली, नवनिधि पति जिम तेह ।
भोगवे सुख संसार ना, दिन दिन वधते नेह ।।१।।

थारा वर्ष इम वीतिया, सो सुर आयो चाल ।
कहे ले हवे तुं वेग शुं, संजम चित उजमाल ॥२॥
नहिं तो देऊं संकट घणो, इण मे फेर न फार ।
सियाल परे श्री वीर पे, लीधो संजम भार ॥३॥
मन में ताम विचारिणो, धिक धिक काम विकार ।
पायो हीनता लोक मे महेतर घर अवतार ॥४॥
हवे करणी दुक्कर करूं कर्म करुं सब छार ।
मास मास तप धारियो निरंतर चौविहार ॥५॥

॥ ढाल चौथो ॥

नित नित प्रणमुं रे मेतराज मुनि, तारण तरण जहाज। परम वैरागी रे रागी धर्म ना साधे आतम काज ॥नि०।१॥ थिविरां पासे रे सिख्या थिर मनै, नव पूरव को रे ज्ञान । ग्राम पुर पाटण विचरतो, ध्यावो निर्मल ध्यान ॥नि०।२॥ कोई समे आया रे राजगृही वली, पारणो आयो रे ताम । प्रभु आज्ञा लेई गोचरी पधारिया, भिक्षा निरवद्य काम ॥नि०।३॥ मारग जाता रे सुवर्णकार के, ओलखिया रिपिराय। एह जमाई रे थाय श्रेणिक तणा, गोचरी कारण जाय ॥नि०।४॥ आवो पधारो रे हम घर साधुजी, कृपा करो मुनिराय । वहोरो सूझतो आहार छे माहरे बोले ते एम उमाय ॥नि०।५॥ इम सुणि मुनिवर तिहां वहोरण गया, उभा

रहियो रे बार । सोनी घर में रे आयो वेग सुं वहीरावण भणी आहार ॥नि०।६॥ सुवर्ण जव था रे राय श्रेणिक ना, कुर्कुट आयो रे चाल । सो जव चुगि ने रे गयो ने शीघ्र सुं मुनिवर रह्या रे भाल ॥७॥ बाहिर आयो रे आहार वेहराय ने, जव नहीं दीठा रे नयण । कहो कुण लीधा रे कुण आयो इहां, कहे रोषें भरयो वेण ॥८॥ मुनिवर सोचे रे देख्या ना कहुं, झूठज लागे रे मोय । कुर्कुट चुग्या रे इम उच्चारतां हिंसा पातक होय ॥नि०।९॥ देख्यो अदेख्यो रे काई न बोलणो, निश्चय कियो अणगार । मौनज पकड़ी रे आण अराधवा, धन्य सो करुणा भंडार ॥१०॥ मौनज जाणी ए सुवर्णकार ते, आई रीस अपार । इणना भेद में थई चोरी सही, पूछे बारंबार ॥नि०।११॥ मारे चपेटा रे कहे वलि चोर तुं, किम नहीं बोले रे सांच । मुनिवर क्षमा रे धारी तन मनें, बोले नही मुख सु वाच ॥नि०।१२॥ तिम तिम अधिको रे सो क्रोधे भरयो, सोचे ए अति धीठ । कूटया बिन रस ए देवे नहीं, मूरख चोल मजीठ ॥नि०।१३। मुनि कर पकडी रे ले गयो वाड़ा में सिरपर आलो रे चर्म । खेंची ने बांध्या रे तावड़े राखिया, वेदना उपनी परम ॥नि०।१४॥ लोचन छटकी रे बाहर निकल्या, तड़ तड़ तूटी रे नाड़ । मुनिवर थिर मन दृढ करि राख्युं, जेम सुदर्शन पहाड़

॥नि ॥१५। केवल पाई रे मुगत सिधाऱ्यां, अजर अमर अविकार। देव बजावे रे दुंदुभि गगन मे, बोले जय-जय कार ॥नि.॥१६ तिण समे मोली रे एक कठियारडे, नाखी धमक सूं ताम। बींटज कीनी रे कुर्कुट भयवश, जव पड़िया तिण ठाम ॥नि.। १७। सोनी देखी रे थर थर धूज्यो कीधो महोटो अकाज। मैं मूढ भावे रे निरपराधिया, घात करी रिखराज ॥नि०।१८॥ राजा श्रेणिक भेद ए जाणशे, करसे कुड़ंब संहार। एम जाणी ने रे श्री वीर पै, लीनो संजम भार ॥नि०।१६॥ तप जप करणी रे कीनी सहुजणा, पाया सुर अवतार। अनुक्रमें जासी रे करम खपाई ने सहु ते मात्त मझार ॥नि०।२०॥ नव कोटि धन नव कन्या तजी ने, नव विधि ब्रह्मचर्य धार। नव पूरव धर नव संवर करी, पाया भवजल पार ॥नि०।२१॥ एहवा मुनिवर त्तमा सागरु, तस गुण गाया उमाय। तिलोख रिख दाखे रे चौथी ढाल ए, सुणतां पातक जाय ॥नि०।२२॥ संवत उगणीसे रे गुण चालीस में, आषाढ वदी पड़वा वखाण। दत्तिण देशे रे पूना शहर में, नाना की पेठ में जाण ॥नि०।२३॥ जोड़ जमावी रे विपरीत जो कथ्यो, मिच्छामि दुक्कडं मोय। भणशे गुणसे रे विधि शुद्ध भावसुं, तस घर मंगल होय ॥नि०।२४॥

मेघकुमार की ढालें

॥ ढाल पहली ॥

धारणी समझावे हो मेघकुंवर ने जी तू तो जाया एकज पूत ! तुझ विन जाया रे दिन किम नीमरे राखो म्हारा घरतणो सूत ॥धा०।१॥ अन्न धन लक्ष्मी रे जाया मारे छे घणीजी विलसो नी इतरे संसार। छती ऋद्धि विलसी रे जाया घर आपणोजी पछे लीजो संयम भार ॥धा०।२॥ तुझ ने परणाई रे जाया आठ अन्तेवरी वे हैं बहुआं रूप रसाल । गजगति चाले हो मलकतीजी नैन वैण सुकमाल ॥धा०।३॥ ऊंचा घरां हो ऊंचा मन्दिर मालियाजी यौवन झलके जी झाल । नाटक नाच हो जाया थारा महल में जी खेलो थारे राणियां रे परिवार ॥धा०।४॥ एक ऊणायत हो जाया म्हारे छे घणीजी खेलाऊं मारी बहुआंतणा बाल । देव हठीलो हो संशय नहीं मेटियोजी, पछे लीजो वैरागी रो भार ॥धा०।५॥ रत्न कचोले रे जाया थारे जीमणोजी नित नव भोजन तैयार । घर घर फिरनो रे जाया पछे गोचरीजी सरस नीरस रो आहार ॥धा०।६॥एक पहर री माजी ! म्हारी गोचरीजी सात पहर को राज। घर सुं भली हो माजी ! मारी कचोलड़ीजी भांत भांत रो जो

आहार ।।धा०।७।। इतरो कही ने हो थाकी माता धारणीजी नहीं समझिया मेघकुमार । छोड़ देसूं ये घरवास जाय रहसूं वनवास ।।धा०।८।। मेघकुमार की माता कहीजे धारणीजी संजम लेस्यां प्रभुजी रे पास । पांच रतन हो प्रभुजी सुं पाया हो जी हो जो मंगलाचार (हो जो क्रोड कल्याण) ।।धा०।६।।

।। ढाल दूसरो ।।

मेघकुंवरजी री धारणी माता बोले छे मीठी वाणीजी । अणगमता रे माता वचन सुणावे थारे आंखियां मे पड़सी पाणीजी, मोह तणे रे वश धारणी बोले ।।१।। नीठ नीठ रे जाया नर भव पायो, थारी ओछी उमर में कछु न खायोजी । आठों ही राणियां ने जाया छेह न दीजे, भर यौवन लाहो लीजे जी ।।मो।२।। खाणो तो पीणो ये माता कर्म बन्धाणो भोगवणो महा दुःखमी रोगोजी । जोवन विषे के तो पुण्यवंत बोले म्हें आदर सुं जोगोजी ।।मो।३।। कोईक रे तो जाया सरस वहरावे, कोईक लूखो सूखोजी । ठूंसी ठूंसी रे तो जाया आहार न कीजै, कीजै देह परमाणोजी ।।मो.।४।। कोईक ता रे जाया मोदक वहरावे कोईक वसुला सुं छेदेजी । साधुने रे जाया चमा ज करणी राग-द्वेष दोनों तजनो जी ।।मो०।५।। श्रेणिक राजा तो कहे कुंवर ने

तू छे अति सुकुमारोजी। सदा खुनाली में रहतो रे जाया मारी पूठ न–चिंतो जी ॥मो०।६॥ थोडा वरस रो जाया जोग नहीं छे, जावजीव लग सहनोजी। इसडी तो वातां माता किणने सुणावे, म्हारो मन होसी जिम करसुं जी ॥मो०।७॥ सीयाला रे जाया सीयज खमणो उन्हाला री लूआ जालोजी। चोमासा रा जाया मैला जी कपड़ा तूं छे अति सुकुमालोजी ॥मो०।८॥ कायर ने माता सहणो दोहिलो शूरा ने अति सोरोजी। म्हारी तो सुरत माता लागी मुगत सुं मैं आदरसुं तप जोगो जी ॥मो०।६॥ जो तू रे जाया दीक्षा लेसी, मायडी सामो जोवो जी। नाना थी मैं मोटो ज कीनो लघु बान्धव नही कोयोजी ॥मो०।१०॥

॥ ढाल तीसरी ॥

मोटी बनाई एक शिबिका जी जिण मांहि बैठा मेघकुमारजी। झूर झूर रोवे वारी कामिनियांजी बरसण लागो सावन मास जी। झुर झुर कायर रो हिवणो थरहरेजी ॥१॥ कदियन करड़ी नजरां जोवताजी कदियन बोल्या मुख सुं वैणजी। संयम लेवो तो चूक वताय दो जी, ये बातां नहीं आवे म्हारे दायजी ॥झु०.२॥ थां सुं तो नेह मारे अति घणोजी, आंसूडा डारो छो केमजी संजम लो तो ढील करो मतीजी सांचो

तो थांरो नेहजी ॥भु०।३॥ इतरो सुणी बोल्या नहीं जी मन मांहि समझिया मेघकुमारजी । आप स्वारथ दीसे कामिनियांजी विन रे स्वारथ नही कोयजी ॥भु० ४॥ कोई नरनारी मंदिर मालिया पै जी झांके जालिया में मुंडो घालजी । मुख कुम्हलाणो मालती रा फूल ज्योंजी कुंवर कुम्हलानो काची केल ज्यूंजी ॥भु०।५॥ कोई नर-नारी मुख सुं इम कहेजी, संजम लेसी मेघकुमारजी । अन्न धन लक्ष्मी वांरे अति घणीजी नहीं दे परमेसर वाने खाणजी ॥भु० ६॥ कोई नरनारी मुख सुं इम कहेजी संजम लेसी मेघकुमारजी । वले विशेखे वांरी कामिनियां जी छांडे भोजन में मीठी खीरजी ॥भु०।७॥ परणी तो बायां चाली सासरेजी गावे वे गहरा मधुरा गीतजी । कायर हिया रो रोवे मानवीजी नहीं जाणे धर्म री रीतजी भु०।८। नगरी के बीचे होय नीसरियाजी, वन मांहि आया शूरवीरजी । बाजा तो बाजे बहुत सुहावनाजी, कायर हियारो दिलगीरजी । भु०।६॥

॥ ढाल चौथी ॥

बोल्या बोल्या ए सखी मारे दादर मोर लाल झरोखे बोली कोयली । रत्न झरोखे बोली कोयली॥ १॥सयम लेसी ए सखी मारो मेघकुमार, वले विशेषे वारी कामिनियां ॥२॥ पहरिया पहरियां ए सखी मारे नवसर हार ।

चंदन हार सोवन कड़ा वारा हाथ में ॥३॥ घीरत विना ए सखी मारे लूखोजी आहार, कंत बिना लूखी कामिनियां प्रिय बिना लूखी कामनियां ॥४॥ तूंछे रे जाया मारे एकज पूत, तुझ बिन मारो कुल सूनो तुझ बिन मारो घर सूनो ॥५॥ दीपक बिना ए सखी मारो सूनो जी महल, जल बिना सूनो सरवरियो ॥६॥ पूतज बिना ए सखी मारे सूनो परिवार, कंत बिना सूनी कामिनी ॥७ ।गुड़ बिना ए सखी मारे फीको कसार। पिउ बिना फीकी कामिनियां ॥८॥ काजल बिना ए सखी मारे फीका जी नैन। कंत बिना फीकी कामिनियां ॥९॥ तारा बिना ए सखी मारे सूनी जी रैन, कंत बिना सूनी कामनियां ॥१०॥ मेघ ज लागा ए सखी वारे माताजी रे पाय, जननी रे पाय, आज्ञा देओ मारी माताजी ॥११। मेघजी लागा ए सखी मारा गुरुजी के पाय, पूज्य जी रे पाय, संजम दो म्हारा गुरुजी चारित्र दो मारा गुरुजी ॥१२॥

॥ ढाल पांचवी ॥

जाया ! जोग भली तरह पालजो थें तो रहिजो थांरे संजम लाल के। चारित्र पालो बच्चा ! निर्मलो थांरा जनम मरण मिट जाय के। अनुमति दी माता धारणी ॥१॥ जाया जोग भली तरह पालजो थे तो रहिजो जी थांरे गुरुजी के पास के। चवदा हजार मुनि मांहे थे तो

लीजो हो जाया यश सौभाग के ॥२॥ मारी कालजारी कोर पुत्र हुँ तो, मैं तो सौंपियो हो स्वामी आपने लाय के। मैं जाण्यो जिम जाण जो, म्हारो वालुडो छे अति सुकुमार के ॥३॥ स्वामी कोई रे वेरावे खांड खोपरा, स्वामी कोई हो थाने नवा भांत के। म्हें वहरायो मारा पूत ने थे तो राख जो थां रे कालजा री कोर के ॥४॥ स्वामी कोई वहरावे चीजा सावद स्वामी कोई हो वस्त्र थान के। मैं वहेरायो मारा पूत ने थे तो राखो हो स्वामी अरथ भंडार के ॥५॥ मारे कालजा री कोर पुत्र हुंतो मैं सौंपियो हो स्वामी आपने लायके। मैं जाण्यो जिम जाणजो म्हारो वालुडा छे अति सुकुमार के ॥६॥ स्वामी तपस्या थोड़ी करावजो, भूख तृषा री लीजो संभाल के। आगे परीषह देख्यो नहीं म्हारा गृहस्थीरो केवणारो आचार के ॥७॥ जाया जोग भली तरह पालजो मती करजो जी कोई दूसरी माय के। शिव रमणी वेगी वरो थारे जनम मरण सहू मिट जाय के ॥८॥ माता पुत्र पहुँचाई पाछा वलिया नैना छूटो हो आंसूडा की धार के। छाती भरीजे हिवडो हुबके वरसण लागो हो सावणिया को मास के। ९॥

॥ ढाल छठी ॥

चवदा हजार मुनि मांहे मने डालियो पगातियां रे

हेठो जी । चीत चीत सहू नीसरियां मारी कोई न पूछी सारोजी । जोई जो रे चल गति करमा की । आवताजी जावता साधुजी मने हेत करी ना वतलायो जी । साथे चालो तो कोई साथिया मारी मूल न राखी आसोजी ॥जी.॥२॥ म्हे तो श्रेणिक राजा रो दीकरो मारे माथे रहती पागोजी । पाग हेठी मेलिया पछे मारो उतर गयो आगोजी ॥जो.॥३॥ म्हें तो संसार में सुखियो हुंतो मारे लारे बहुला लोगोजी । खमा रे खमा करता सहु मारी कोई न लोपता कारोजी ॥जो.॥४॥ म्हारे ऊंचाजो मन्दिर मालिया म्हारे गौरियाँ गावे गीतोजी । नाटक भली भली भांति रा म्हारे पाछे रही सहू रीतो जी ॥जो॥५॥ म्हारे कुशलावती पद्मावती म्हारे अविचल रे उणियारो जी । मोटा जी कुलरी ऊपनी मैं तो जाय करुँला संभालोजी ॥जो.॥६॥ मैं तो नहीं लीवी या भेले गोचरी मैं तो नहीं लीवो या भेलो आहारोजी । दिन उगा मारे घर जासू विलसूंला लील विलासोजी ॥जो॥७॥ मैं तो ओघा जी पात्रा मेल देसूं मैं तो मेल देसुं सहु सिरपावोजी । दिन उगिया मारे घर जासूं मारे पूछणरी छे रीतोजी ॥जो.॥८॥

॥ ढाल सातवो ॥

पौ फाटी पगडो हुवो हो मेघजी आया श्री वीरजी

रे पास हो मुनीश्वर मेघ। पडिक्कमणो ठायो नहीं हो मेघ दुख वेदिया भरपूर हो मुनीश्वर मेघ । श्री वीर जिनेश्वर बोलाव्या मेघ ॥१॥ गज भव सुसलियो राखियो हो मेघ, हाथीरा भव मांय हो मुनीश्वर मेघ। श्रेणिक राजा रा दीकरा हो मेघ अब हुआ मोटा मुनिराज हो मुनीश्वर मेघ ॥श्री.॥२॥ नरक निगोद मे थें भम्या हो मेघ अनंती अनंती वार हो मुनीश्वर मेध। बीजे विमान थकी चवी करी हो मेघ महाविदेह क्षेत्र मझार हो मुनि ।श्री.॥३॥ दान शील तप भावना हो मेघ शिवपुर मारग चार हो मुनीश्वर०। कर्म खपाय मुगते गया हो मेघ वर्त्या है मंगलाचार हो मुनीश्वर मेघ ॥श्री.॥४॥

नमि राय की ढालें

दोहा—शासन- नायक समरिये निश्चय शिवपुर जाय।
गुण गाऊं गिरिवरतणा सांभलजो चित्त लगाय ।१॥
उत्तराध्ययन में चालियो, नमि नामा अणगार ।
एक सहस्र अठ रानियां तजी ज्यां सारया आतम-काज।२।
किम वैराग्यज ऊपन्यो किम निकल्या छिटकाय ।
ध्यान धर्यो वनखंड में नमि नामे अणगार ॥३॥

॥ ढाल पहली ॥

मिथिला नगरी केरा राजवी, नमिनामे अणगार। नीति वरताई वो राजेन्द्र अति भली जी लोक सुखी तिणवार। राज करे छे हो अति रलियामणो ।१॥ हय गय पैदल सेना शोभती, तेज प्रताप अखंड । वश किया सहु वह वैरी ने भोमिया नहाट जावे परचंड ॥राज०।२॥ साचात मिथिला वह देवलोक सारखी नाटक रा भनकार। बाग-बगीचा व सरवर सोभंता गढ मठ पोल बाजार ॥राज०।३॥ इक दिन रायतणे अंग ऊपन्यो दाह-ज्वर रो रोग। बलूं बलूं रे सगली काया करे उठे पिंड मांहि ज्वाल ॥राज०।४॥ चन्दन घिस घिस

लावे कामिनियां खल-हल वाजे चूड़ । राजा ने लागे वह अति अलखावणी चूड़ियां कर दीनी दूर ॥राज०।५॥ एक चूड़ी राखी सुहाग रे कारणे, हवे खनको नहीं होय। राजिंद पूछे वह विधि सहु पाछली, खलको क्यों नहीं होय ॥राज०।६॥ वलती तो रानियां इम अरजी करे, माथे चढी मत वार । चूड़ियां खलके वो चंदन लावता, तिण कारण दई रे उतार ॥राज०।७॥ इतरो सुनी ने वो राजिंद चिंतवे वहु मिलिया वहु दुःख । इण जग मांहि कोई किणरो नहीं जीव एकाएकीज सुख ॥राज०।८॥ उज्वल भाई वह राजिंद भावना, दियो छह काया ने अभयदान । नमी नामे राजिंद वीर हुआ ऊपन्यो जाति स्मरण ज्ञान ।राज०।९॥

दोहा—सुख भर निद्रा आ गई उगंते प्रभात ।
वैरागी मन वालने छोड़ी मन नी आस ॥१॥
हाथी घोड़ा रथ पालखी छोड्या मुलख भंडार ।
ध्यान रह्या वनखड में नमि नमो अणगार ॥२॥

॥ ढाल दूसरी ॥

पहला देवलोक रा धणी नमी ऋषिराय वो । ज्ञान करी ने जोय नमी ॥१॥ आयो आयो ऋद्धि छिटकाय ने नमी, ध्यान ध्यायो एकाएक नमी ॥२॥ परिणाम तो ले देवता नमी मुनिवर गोडे आय नमी ॥३॥

कोट सेटा करो रे लाल, नहीं लागे वैरियां री जोर हो सौ. । लारला याद करसी घणा रे लाल, इसडा राजा बीजा नही हो ओ सौभागी ॥इन्द्र॥७। चलता मुनिवर इम कहे हो श्रद्धा रूपनी पागार होय हो सौ. वैराग्य रूपणी पोल छे रे लाल । गंजी न सके कोई, ओ सौ. श्री नमी यों कहे ब्राह्मण सांभलो रे लाल ॥इन्द्र॥८॥ आगल संवर तपतणी हो गढ़ क्षमा रूपी जाण हो सौभागी। गुप्ति खाई में आराधता रे लाल, पराक्रम धनुप प्रमाण ओ सौभागी ॥इन्द्र.॥ तप रुपियो लोह-बाण छे रे लाल भावे संग्राम होय हो सौ. । संसार नगरी कारमी रे लाल, अविचल मुगत्यां रो राज सौभागी ॥इन्द्र.॥१०॥ जीवा ईर्या रूपणी रे लाल, धीरज पणो मध्य भाग हो सौभागी कर्मा ऊपर कटकी करो रे लाल, मारे मुगति जावण रो कोड हो सौभागी ॥इन्द्र.॥११॥ यह वचन श्रवण सुण्या धन धन मुनिवर हे महा सौभागी । इन्द्र सुणी हरख्या घणा रे लाल, सांभलो चौथी ढाल हो सौभागी ॥इन्द्र.॥१२॥ इति

दोहा-चोथो प्रश्न किस विधे, पूछूं छुं कर जोड़ ।
सावधान होइ सांभलो, आलस निद्रा छोड़ ॥१॥

॥ ढाल चौथी ॥

अहो ! इन्द्र कहे नमिराय ने जल बिच महल

चुणाय हो । जाली झरोखा सोभंता दीठा ही आवे दाय हो । श्री इन्द्र कहे नमीराय ने ॥१॥ अहो ! सतभोम्या अति शोभंता ठंठा जल री आवे लहर हो । नमी ए विना कुण कुण करे थारे नाम को रहसी केम हो ॥श्री इन्द्र।२॥ अहो वलता मुनिवर इम कहे, कुण राचे अज्ञानी लोक हो । ने छेही इक दिन चालणो घर शाश्वत म्हारे मोक्ष हो । नमी कहे ब्राह्मण ने ॥३॥ अहो घाट मारग वासो वस्यो, हरख्यो फूल्यो घणो जीव हो । काल लेऊं र लेऊं कर रह्यो, कुण देवे कारमी नींव हो ॥नमी०।४॥ अहो ये वचन श्रवन सुणया हरख्या सुर गति ना नाथ हो । प्रश्न पूछे पांचवो इन्द्र जोडिया है दोनों हाथ हो ॥श्री इन्द्र।५॥ अहो चोर गांठ छोड़ी करी फांसीगर ने भटियारा हो । इतरा ने क्षमा वरताय ने पछे लीजो संजम भार हो ॥श्री इन्द्र०।६॥ अहो लोक नें खबर पड़ी नहीं चोरां ने सेटा कीजे हो । चोरां ने यों सहजे जुगत सुं मन वांछित भोजन नहीं दीजें हो ॥श्री इन्द्र०।७॥ अहो वलता मुनिवर इम कहे सुन ब्राह्मण मारी वात हो । मैं म्हारा चोर सेंटा किया पर चोरां ने पकड़े केम हो ॥श्री नमी०।८॥ अहो पांचों इन्द्रियां चोरटी ज्यांने दीधी है जो मोकलाय हो । और ने कूटे घेर वाधरा चोरा री खबर न काय हो ॥श्री नमी०।९॥

दोहा—उत्तर यों नमिराय तणा, सांभल विलसा वैन ।
थें जग पियर साधुजी ! सच्चा मिलिया सैण॥१॥
चलाया चलिया नही, इन्द्र लेवे छे मन ।
श्रद्धा नींव सेंठी घणी, साधु सदा ही धन्न ॥२॥

॥ ढाल पांचवी ॥

आनड भोम्या सहुने नमावो, आप तो आणो ओ, आप तो आणो ओ आज्ञा रे मांय मुनिवर सांभलो हो। अहो नमी ऋषीश्वर मुक्ति दातार मुनिवर सांभलो हो ॥१॥ आपरा पराक्रम लारला जाने तो, थां विना वैरी हो थां विना वैरी हो कुण आणे नही आज्ञा रे माय ॥मुनिवर।२॥ व लता तो मुनिवर इम भाखे, मैं मारा वैरी हो मैं मारा वैरी हो जीत्यां दस ज लाख ॥मुनिवर०।३॥ कोई एक आपरी आत्मा जीते ते तो शूरा हो, ते तो शूरा हो मुनिवर अधिको तेज ॥मुनिवर० ४॥ यज्ञ होमीजे ने ब्राह्मण पोसीजे, पछे तो अवसर हो, पछे तो अवसर हो मुनिवर आया संजम लेय ॥मुनि०।५॥ प्रश्न पूछे पारका गाडे घर को तो धर्म, घर को तो धर्म गुरां थे दियो काइं छोड़ ॥मुनिवर।६॥ घर को धर्म सिरेकार जाणो, जाचक तो मांडे हो, जाचक तो मांडे हो, आगे आय ने हाथ ॥मुनिवर०।७॥ दस लाख गायां रोजाना दीजे, तिणसुं तो अधिको हो, तिणसुं तो अधिको हो,

धर्म केरो एक टीप ।।मुनि० ८।। आठम चवदस रा पौसा करीजे तो तिणसुं तो अधिको हो तिणसुं तो अधिको हो, धर्म करो एक टीप ।।मुनि०।९।। मास मास तप पारणो कीजे डाभरी अणी डाभरी अणी हो जिनरों अन्न ज ले ए ।।मुनि०।१०।। संजम रा गुण कह्या अमोलक दान तो नही हो, दान तो नहीं हो कोई संजम रे तोल ।।मुनि०।११।। वलता तो मुनिवर ते इम भाखे साधु तो मोटा हो साधु तो मोटा हो, जग मे छह काया रा नाथ ।।मुनि०।१२।। सोलहवीं कला साधुजी री कहिये तिणरे तो तुले हो तिणरे तो तुले हो लागे नही कोय ।।मुनि०।१३।। यह वचन सुणी ज्ञानीजी कने इन्द्र तो हरख्या हो इन्द्र तो हरख्या हो मन में असमान ।।मुनि०।१४।। इति

दोहा—छठो प्रश्न किस विधे, पूछूं छुं कर जोड़ ।
जिम जिम उत्तर सांभलो, तिम तिम अधिको प्रेम ।।१।।

।। ढाल छठो ।।

इन्द्र कहे नमिराय ने हो, सोनो ने रूपो वधाय माणक मोती आदि देई हो संचय थारा राज में मोकलो माल, श्री इन्द्र कहे नमिराज ने ।।१।। संचय कांसी भाजण तणा हो वस्त्र थिरमा दुशाला । हाथी घोड़ा रथ पालखी हो मोकला घालोनी राज भंडार । श्री इन्द्र कहे नमिराय

ने हो ॥२॥ लारला याद करसी घणा हो इसड़ा हुआ महाराज । इतरा वाना वधाय ने पछे सारो थारां आतम काज ॥ श्री इन्द्र.॥३॥ वलता मुनिवर इम कहे हो, मेरु जितरो धन होय । तो पिण तृष्णा पापणी हो लोभ अग्नि रुपिणी जाल ॥श्री इन्द्र.॥४॥ लाभ थी लोभ वधे घणो हो हिये विमासीने जोय । एक संतोषी वायरो हो जीव तृपत नहीं होय ॥श्री इन्द्र.॥५॥ उपर ठाइने धन थकी हो ते जग विरला होय । बड़ा बड़ा ने लूटिया हो कनक-कामिनी बंधन दोय ॥श्री इन्द्र.॥६॥ मैं धन जाण्यो कारमो हो पत्थर धूल समान । इन्द्र सुणी हरख्या घणा हो आयो आयो अन्तर-ज्ञान ॥श्री इन्द्र ॥७। छठी ढाल सुहावणी हो देसी ददा मारी जात । सातवी आगे सांभलो हो रखो मती करो बीच में बात ॥श्री इन्द्र॥८॥

॥ ढाल सातवो ॥

दोहा—इन्द्र कहे नमिराय ने, ए अंतेवर भोग ।
इतरा ने छिटकायने, काई लेवो मारग जोग ॥१॥
छतां देवलोक सारखा थें वंछो नहीं कोय ।
अछतां री वांछा करो यह मन अचरज होय ॥२॥
हाथ जोड़ ब्राह्मण कहे दीक्षा लेवो छो आप ।
ए अंतेवर छोड़ी ने रखे करो पश्चात्ताप ॥३॥

ढाल—श्री जिन भाखे हो, सुनसुन ब्राह्मण एम ।

शल्य जिम काम ने भोग दुखदायी इण जीव ने ॥१॥ काम भोग भोगव्या हो, दुख रो कोई नहीं पार। वांछा करे मनमाय तो पिण दुर्गति जावसी ॥२॥ खारा कड़वा हो विषय जहर समान। दृष्टि विषे जिम नाग, किंपाक फल री उपमा ॥३॥ गीत जानूं हो, इसडा विलापात। आभरण है भारभूत, नाटकना छे विडंबना ।४॥ मूढ लोक हो रह्या मुरझाय, ज्ञानी रे नहीं आवे दाय। नरक तणा दुख जिनवर कह्या ।५॥ इन्द्र सुनिया हो ऋषि रा अमृत वैण। सकल सजिया हो शृंगार। काना हो कुंडल शोभता ॥६॥ कडा मोती हो, हिवडा बीचे हार घुंघरिया धमकाय, आय साधुजी रे पाय नम्या ॥७॥ धन्य धन्य हो मोटा अणगार, सकल क्षमा गुण धार, गुण रत्नागर आगला ॥८॥ थें तो मोटा हो मुनिवर, पूजवा जोग तिरण तारण री जहाज। इण भव मुगति सिधावसे ॥९॥ प्रश्न पूछिया हो थाने, अनेक प्रकार। कलंक न लागो ज कहिये, आई पूरी थारी पारखा ॥१०॥ सहस्र जिव्हा हो गुण वर्णऊँ तो पिन पूरा नहीं होय। मोय मुख कथी के थकिता ॥११॥ लुल, लुल लागूँ हो साधुजी रे पाय। इन्द्र गया देवलोक मुनिवर मुक्ति सिधाविया ॥१२॥ उत्तराध्ययन में कह्यो, नौवां अध्ययन नमीतणो अधिकार, भाख्या श्री वीतरागजी ॥१३॥ सांचारो हो मुझने मारग होय। अछ तो आयो कोय। तो मुझ मिच्छामि दुक्कडं॥१४॥

चेलना रानी की ढालें

दोहा—अवसर जे नर अटकले ते तो चतुर सुजान ।
दीपावे जिन धर्म ने भणियारो परमाण ॥१॥
किस विध धर्म दिपावसी सांभलजो नरनार ।
साणा हुआ साधवी, लब्धितणां भंडार ॥२॥

॥ ढाल पहली ॥

पंच महाव्रत पालता विचरता ग्राम नगर पुर हो भवियण कठिन क्रिया मुनि आदरी । सेठ सुदर्शन नाम हो भवियण ॥१॥ साधु सदा ही सुहावना पूरो ज्यांरो प्रेम हो भवियन । हिवड़ा भीतर वस रह्या हीरा ने वली हेम हो भवियन ॥२॥ तप कर काया सुखाविया वैराग में भरपूर हो भवियन । आचार ज में ऊजला सतवादी ने शूर हो भवियन ॥३॥ जीवन री वांछा नहीं मरण तणो भय नाय हो भवियन । पूठ दे संसार ने नीसर्या ज्यांरी सुरत सूतर रे माय हो भवियन ॥४॥ सोनो ने पत्थर सारखो स्त्री तृण समान हो भवियन । यहां शत्रु ने मित्र सरीखा निश्चल ज्यारो ध्यान हो भवियन ॥५॥ अटल विहारी एकला सहता

शीत ने ताप हो भवियन । पराक्रम धारी पुण्य रा धणी परहरिया सहु पाप हो भवियन ॥६॥ लब्धि जिनतणी ऊपनी करता उग्र विहार हो भवियन । रिख रायचन्द कहे सांभलो आगल रो अधिकार हो भवियन॥७॥

॥ ढाल दूसरी ॥

मगध देश ज हो राजगृही नगरी भली, सुन्दर शोभती हो सूत्र सिद्धांत में चाली ऋद्धि सिद्धि जहां धर्म ध्यान करती भली । राजा श्रेणिक हो पटरानी वर चेलना, पिउजी साथ हो नित नवला करे खेलना । नित नवला सिणगार पहरती सुख भोगवे भरतार, बालपणा में समकित पाम्यां पुण्य प्रगटिया इन नारना जी पुण्य प्रगटिया इन नार, चेलना पुत्री ज हो चेडाराय नृप तणी पुण्य जोग ज हो मिथ्यात्वी घर रो धनी आपो आप ज हो गुरु रा वखाण ज कर रह्या होन हारज हो दोनों बराबर होय रह्या, होनहार झोड दोनो के रहे सदा दिन रातरा दिन रात रा श्रेणिक राजा मन चिंतवे जतन करो इन बात रा जी जतन इन बात रा॥

॥ ढाल तीसरी ॥

तप संजम दृढधारी यती एकला उग्र विहारी हो ज्ञानी गुरुजी आपरा दर्शन की बलिहारी वारी वार

हजारी हो ज्ञानी गुरुजी आपरा दर्शन की बलिहारी ॥१॥ पूरब सुकृत कीना म्हारा ज्ञानी गुरुजी दर्शन दीना हो ॥२॥ पूरव सुकृत अतिशायी, म्हारा ज्ञानी गुरुजी की आई बधाई हो ॥३॥ यती राजगृही में आया, राणी चेलणा ने घणा ही सुहाया हो ॥४॥ चरण तुम्हारा भेटिया, मारा भव भव का पातक टलिया हो ॥५॥ आज म्हारा ज्ञानी गुरुजी मिलिया मारा मन रा मनारथ फलिया हो ॥६॥ चार ज्ञान रा पूरा, राजगृही मांहि आया शूरा हो ॥७॥ आवतडा दूर थकी दीठा, माने लागा अमृत सरीखा मीठा हो ॥८॥ अक्षय दान रा दाता, थें तो सजम में रंग राता हो ॥९॥ आज म्हारा ज्ञानी गुरुजी मिलिया, मारा भव भव का पातक मिटिया हो ॥१०॥ शील संजम मे सेठा, मोक्ष महल रा द्वार मांहि बैठा हो ॥११॥ ढाल भई या तीजी रानी चेलना इन पर रीझी हो ॥१२॥ साणी श्राविका चेलना राणी, पूज्य रायचन्दजी कहे वीर वखाणी हो ॥सत्गुरुजी.॥१३॥

॥ ढाल चौथी ॥

दोहा—वली कहे रानी चेलना, सांभलजो महाराज ।
मोटा गुरु छे म्हायरा तिरन-तारन जहाज ॥१॥
भोग छोड़ ने जोग आदरियो करणी जाकी श्रेयकारजी
कनक कामिनी त्यागी ते विरला संसारजी ॥२॥

ढाल—निर्ग्रन्थ गुरु कियो निस्तारो, पामी जनम मो पारो, तुम आतम का कारज सारो, तुम कायारा कारज सारो, सुन महाराजा जैन सरीखो मारग नहीं कोई दूसरो, सुन सुख पाया निर्ग्रन्थ गुरुना पाय सदा ही पूजिये ॥आंकडी॥ वे सत्तावीस गुण करी शोभे छे वे पाखण्डियां ने जीते छे, वेरी कोमल काया दीपे छे, वेरी कंचन काया दीपे छे ॥२॥ वे जीव अजीव ने जाने छे, वे उल्टी रूढि नहीं ताणे छे वे मोक्ष ना बीज पिछाने छे ॥३॥ थारा मारा गुरुरी किसी होड़ो सुण राजा गरदन मोड़ो, काइं सेठां रहो तो हठ छोडो ।४॥ वे मुख मुंहपत्ति बांधे छे, मुझ छाती में राबज रांधे छे तू पड़ी कुगुरु ना पाने छे ॥५॥ वां रा लूखा-सूखा मुंडा छे वां रा हाथ में झोली कुंडा छे, वे दिसतां ई वहु भुंडा छे ॥ वे जैन जती गुरु बाजे छे वे पाखण्डियां ने जीते छे, वे चाले आपरें छांदे छे, वे पाप करे बहु छाने छे ॥७॥ वे भिक्षा लेवे अणजाणी, वे नित पीवे धोवन पानी, वांकी ऐसी है मुखरी वाणी ॥८॥ रानी शिवमतियां की होड़ न होय सुनकर राजा गरदी ज होय, निरखंता रा मन मोहे, वे चतुर पुरुषांरा कंठ सोहे ॥९॥ राजा ऊंचा नीचा बोलज बोले छे, राणी रो मन नहीं तोले छे, पण रूठो राजा हठ नहीं छोड़े छे ॥१०॥ वे स्नान संपाडा नित करे, राजा उठ पाया पड़े, वे जैन जती सूं नही अडे

॥११॥ राणी विवेक वचन कर बोले छे, राजारे मन नही तोले छे, पण रूठी राणी हट नहीं छोड़े छे ॥१२॥ कर जोडी सेवक जंपे गुरू गौतमजी रा पाय वन्दे, चेलना रानी को मन हर्षे ॥१३॥

दोहा—तम्बू ताणी छांयता, और ताणी कनात ।
और सुगंधी भूमिका खूब बनी विख्यात ॥
धरिया गादी पाटला, और बाजोठ रसाल ।
जगमग रत्न जडाव का धरिया प्याला थाल ॥
स्नान करवा नीसरिया, राणी देख्यो तंत ।
आभूषण सहु अलगा धरिया जूती धरी एकांत ॥
कारज कीनो आपनो, शंका न राखी कोय ।
जूती को चूरण कियो, भेल्यो सगलो आहार ॥
पूजा करलो भगति सुं नीचो शीष नमाय ।
दासी साथे संदेशो स्वामी भोजन हुआ तैयार ॥

॥ ढाल पांचवी ॥

राणी रसोई कीनी तैयार, भांति भांति रा भोजन भारी हो गौसाईजी भोजन हुआ रे तैयार ॥आंकडी॥ जोगी आयने बैठा भाणे राय भर भर दुकडिया आणे हो गौसाईजी ॥१॥ जोगी आय ने बैठा भाणे राय परोसे एकण हाथे हो गौसाईजी । इमरती सेव सुंवाली भेले जलेबियां घणी घेर वाली हो गौसाईजी ॥२॥

लाडू पेडा ने दाना ताजा, भेले घेवर खांड ने खाजा हो गोसाईजी ॥४॥ फिणी रोटी ने रस पोली भेले बरफियां घीरत झबोली हो गौसाईजी ॥५॥ पेडा दोठा ने माल पुआ भेले मसाला घालिया सवाद हुओ हो गोसाईजी ॥६॥ पीपल पाक बीजोरा ने कोला केरी पाक गटकाया कोरा हो गौसाईजी ॥७॥ मन आनंद कुलकंद कलाकंद खाया आनन्द हो गौसाईजी ॥८॥ दाल चावल ने सीरो रसलेई ने जीमो धीरे धीरे हो गौसाईजी ॥९॥ गीरी गीदोडा गुलपाको जोगी जीमतां नहीं थाको हो गोसाई जी ॥१०॥ इत्यादिक खीर रंधाई पछे तरकारियां री जुगत बनाई ॥११॥ जूती उरी रे मंगाई नानी कतरी ने सांगरिया बनाई हो गोसाईजी ॥१२॥ भैंस रा दही में छिमकाई भले कस्तूरी री वास लगाई हो गोसाईजी ॥१३॥ इत्यादिक षट् रसोई बनाई पछे पितोडा में कसर न काई हो गोसाईजी ॥१४॥ जोगी जिमिया पेला मेवा मिठाई पछे राईता री धूम स मचाई हो गोसाईजी ॥१५॥ जोगी जिमिया ने हुआ राजी, राग हरखिया ने राणी राखी वाजी हो गोसाईजी ॥१६॥

दोहा—जीम चूटने निसरियां, आया तो शाला मांय।
लोंग सुपारी इलायची राजा मुखवास दियो लाय॥१॥
पूजा करलो भगति सुं नीचो शीप नमाय।

राजा बहु हर्षित हुआ स्वामी आनन्द पामिया आज।२॥
जोगी बहु हर्षित हुआ स्वामी आनन्द पाम्या आज।
आज भार हलका हुआ स्वामी विदा करी जे आज॥३॥
और आज्ञा लेई ने नीसरिया आया तो शाला-बहार।
पग मोजड़ी दीसे नहीं मन में करे विचार॥४॥
चतुर पुरुषां री पावड़ी, किन लीधी नर ने नार।
ते पावड़ी कहां निकलसी ते सुनजो विस्तार॥५॥

॥ ढाल छठी ॥

राजा श्रेणिक पास सभा छे अति घणी पूछे वारंवार खबर मोजडी तणी राय सभा रे माय लोक सर्व मालूम हुई, दूत भेज्यो सगला शहर में खबर पाई नहीं, राजा कहे एम अंतेवर जोओ सही, राय तणा सुणिया वैण, तिहाते नीसरिया आया उतावला वेग महला मांहि परवरिया राणी कहे एम। राजाजी ने जाय कहो मोजडी छे गुरुजी रे पास, औरों के सिर ना दीजिये, राणी तणा सुनिया तिहां थकी ते निसरिया आया उतावला वेग राज मांहि परवरिया जोडिया दोनों हाथ अर्जी इसड़ी करे सांभल जो महाराज करूं एक विनती राणी कह्यो एम राजाजी ने जाय केवो मौजडी छे गुरुजी के पास औराना सिर ना दीजिये। दूत तणा सुणिया वैन, मन मांहि चिंतवे ए छे चेलना रा काम औरा सु

नहीं होवे, आछी कपटण नार शठ इणरो हियो, जिम जिम थी मन मांय तिम तिम पूरो कियो आया उतावला देग महलां माय परवरिया रानी कह्यो एम राजाजी पधारिया सज सोलह शृंगार विनय सुं वधाविया जोडिया है दोनों हाथ अर्जी इसड़ी करे प्रीतम म्हारा ऊपर मेहर आज दिल में धारी। राजा कह्यो एम कपटण तूं खरी रोल कीनी छे आज मारा रे गुरा तणी। अरिहंत देवाधिदेव मोटा जिनराज थी जिम जिम मन मांय तिम तिम पूछो खरी, भिन्न भिन्न देसी बताय शंका न राखो रती।

दोहा—ज्ञान गुरां में ऊपजे, ज्ञान गुरां में होय।
ज्ञान विना जो गुरु हुए तो मूरख कहिये सोय॥
मोटा गुरु महाराज ना पूर्व जन्म दियो बताय सोय।
तिण कारण करुं परीक्षा शंका न राखूं कोय॥

॥ ढाल सातवी ॥

पूरव भव बकरी हुती स्वामी घणा खाया फलफूल, तिण कारण भावे नहीं हो स्वामी यो ही ज दारण्यो मूल भक्त जोगी राय रा सुनो नारी नी अरदास ॥आँकडी॥१॥ तिण कारण जूती लेई स्वामी चूरण कियो के विशेष, सगला आहार में भेलियो हो स्वामी जोगी जिमिया है धापो धाप ॥भगत.॥२॥ सगलाई

आहार पूरो कियों हो स्वामी गुरु, नहीं जाएयो भेद।
नगर डिंडोरा फेरिया हो स्वामी जाणे मदमस्त हाथी
जेम ॥भगत.॥३॥

दोहा—सुनो रे बाबाजी सुनो रे जोगीजी थाने वन्दना
आवे पटराणी झूठी य दासी झूठण बोले थारी
जीभ पकड़ कुण जाले, जूती खवाई अग्नि पड़े
माने सांगरिया घणी साले ॥

॥ ढाल आठवो ॥

रानी तो तिहां आयने रे जोगिया, प्राण रहित सगला सूता देखने रे जोगिया राणी कहे चेला आगे जाय रे धूतारा थारो कपट उघाड़े रानी चेलना रे जोगिया ॥१॥ रानी कहे तुम गुरु कहाँ गया रे जोगिया प्राण रहित पड़ी काय, तेडो आयो वैकुंठ को रे जोगिया सगला गया प्रभुजी रे पास रे ॥धुतारा.॥२॥ राणी तो मन मांहि चिंतवे रे जोगिया सगला सूता कपट बनाय। हिवे यांरो कपट उघाड़ सूं रे जोगिया राणी लीधा मुसद्दी बुलाय रे ॥धुतारा.॥३॥ गुरु तो कहीजे महाराजरा रे मुसद्दिया सगला गया प्रभुजी रे पास ; इहां आवे तो अच्छा नहीं रे मुसद्दिया थारी सलाह किसी आवे दायरे ॥धुतारा.॥४॥ जन्म-मरण सहु मिट गया रे मुसद्दिया, सहज ही छुटको थाय। इहां आवे के तिहां भला रे

मुंसदिया थारी सलाह किसी आवे दायरे ॥धुतारा.॥५॥ जन्म मरण सहु मिट गया रे मुसदिया सहज ही छुटको थाय । इहां आवे के तिहां भला रे मुसदिया म्हारी सलाह एही ज आवे दायरे ॥धुतारा.॥६॥ खडक पडिया तो फिर आवसी रे मुसदिया जलाया रहेसी प्रभुजी रे पास । हवे देरज करो मती रे मुसदिया राजी होसी श्रेणिक महाराज रे ॥धुतारा॥७॥ लकड़ा मंगाय ने खडकिया रे मुसदिया महलां नीचे आग लगाय । लकडा नहाकनरी तैयारी करी के मुसदिया जोगी गया दसों दिशि भाग रे ॥धुतारा.॥८॥ जोगी तो मन मांहि चिंतवे रे जोगिया जब जाण्यो राणी तणो हंडोल । महल थकी बाहर पडिया रे जोगिया आय मिलिया छे सामग्री रो जोग रे ॥धु.॥ राणी तो मन मांहि चिंतवे रे जोगिया जब जाण्यो जोगी केरो भूठ । कहता प्रभुजी रे पास गया रे जोगिया किम गया दसों दिश ऊठ रे ॥धु.॥१०॥ राणी रो मन नहीं मारवा भणी जोगिया, नहीं बांधे माठा परिणाम । पाखंडिया री परीक्षा करवा भणी रे जोगिया सगला लोका देखत पडियो मान रे ॥धु.॥११॥ फूला जिम फूलानी रानी चेलना रे जोगिया, मुनी ने सीदायरा श्रेणिक राज । हीलना हुई गुरु तणी रे जोगिया इज्जत पाड़ं जब सुख थाय रे ॥धु॥१२॥

दोहा–चेलना चरचा करे घणी नहीं देवे पाछा पांव ।
करणी ज्यांरी पादरी राजा खोटा खेले दाव ॥१॥
हलकारा ने हुक्म दियो जोवो शहर मझार ।
महाराणी रा गुरु आवसी म्हाने तुरत दीजो बताय ।२।
हलकारो शहर जोयने, कहे राजाजी ने आय ।
महाराणी रा गुरु आविया महापुरुष देवरा रे मांय ।३
श्रेणिक राजा तिन समय, एक वेश्या दीनी वार ।
चोकीदार चारो दिशा राजा जड़ दिया वज्र किवाड़ ।४

॥ ढाल नवमी ॥

एक वेश्या दीनी देवरा वार, अठे दीसे कोई द्वेष रो काम, इण बातां सु होय नुक्सान, दिन उगिया लोक देखसी नार, झूठ सांच रो कुण करसी न्याय, जोगी बन बैठियो अवधूत, हाथ में घोटो लगाई भभूत, ओघा मुंहपत्ति वस्त्र पातरा वाल दिया सहु माया मातरा । राती सिन्दूर की टीकी आंखिया लाल, बिछाय बैठो चीता री खाल हाथ में लियो हिरण रो सींग, जाने बैठो बावारो धींग, लम्बी दाढी ने जटा रसाल, गला में पहरी रुद्राक्ष की माल, हाथ में तूंबी, लोह रो कड़ो कर बैठियो ऊंचो राखरो दड़ो, झुल–झुल वेश्या रही जोय, बाबा मुझ पर मत करजे कोप, नेड़ी तू मत आइजे नार, रखे भस्म पण थारी थाय, जो मैं निकलूं देवरा रे बाहर, तो हुं

आई नवरे संभार राजा कहे राणी ने [illegible], [illegible]
में फला न काय, स्त्री ना तो [illegible], [illegible]
फेर न फार ॥ गुरु जोगी होसी महाराज, [illegible]
होसी ज्यांरी जासी लाज । राणी [illegible],
बिना देख्यो कैसो थाय, राजा राणी आया [illegible],
घणा मिलिया छे नर ने नार ; [illegible]
किवाड, मांय जोगीश्वर बेठा नार ॥ [illegible]
राजा थयो, ओ चेल्यो दो वडिने गयो ॥ [illegible]
हँसी । साची थी तो आपने फेंगी ॥ ॥ [illegible]
हुओ उद्योत दीप रह्यो [illegible] ॥ [illegible]
मुनि कियो विस्तार पछे आलोयणा [illegible] । [illegible]
समय अनशन आदरियो, मुनिवर [illegible]
राणी चेलना री आ कही ढाल [illegible]
राय रसाल ।

आनन्द श्रावक की ढालें

॥ पहली ढाल के दोहे ॥

दोहा—प्रभु प्रणमूं परमातमा शासन-पति वर्धमान।
तास ज्येष्ठ श्रावक भला आनन्द आनन्द-धाम ॥१॥
नाम ठाम शुभ है अति, कीना व्रत अंगीकार।
सातवें अंग में वर्णव्या ते सुनजो विस्तार ॥२॥

॥ दूसरी ढाल के दोहे ॥

दोवे आनन्द सुनी देशना बोले यतना विचार।
सत्य कथन, प्रभुता हरी यह संसार असार ॥१॥
धन्य वे राजा श्रावक, लेवे संजम भार।
मुझ शक्ति ऐसी नहीं, आदरसु व्रत बार ॥२॥
प्रभु कहे रुचि जिम करो जेज न करो लगार।
हवे व्रत करणी सांभलो सूत्र तणे अनुसार ॥३॥

॥ तीसरी ढाल के दोहे ॥

बारह व्रत पाले भला चवदह नियम विचार।
तीन मनोरथ चिंतवे धारे शरणा चार ॥१॥

निश्चल समकित दृढधर्मी इक्वीस गुण का धार ।
चवहद वर्ष इम वीतिया करता धर्म उदार ॥२॥
पन्द्रह वर्ष वर्तता एक दिन आधी रात ।
जागरण करे धर्म की सुणजो यह विख्यात ॥३॥
आनन्द संथारा को कथन सुन विस्मित अपार ।
गौतम सुण ने आविया देखण ने अणगार ॥४॥

॥ चौथी ढाल के दोहे ॥

तिन अवसर आनन्दजी विशुद्ध लेश्या शुभ ध्यान ।
ज्ञानावरणीय क्षयोपशमे उपन्यो अवधि ज्ञान ॥१॥
पूर्व लवण समुद्र मे पांच सौ योजन जान ।
एवोही दक्षिण पच्छिमे उत्तर चूल हिमवान ॥२॥
जाने देखे ऊपरे प्रथम स्वर्ग विचार ।
नीचे जानी रत्न प्रभा स्थिति चौरासी हजार ॥३॥

॥ चौढालिया ॥

अन्न री जाति अनेक छे न्यारा न्यारा भेदोजी । एक प्रभुजी मोकलो चावल तणी परमलोजी । व्रत कराओ श्रावक तणा ॥१॥ मूंग तणादिक दालिया गोड वड़ा वड़ा जाणो । ए तो प्रभुजी मुझ ने मोकला बीजारा पच्चखाणो जी ॥व्र ॥२॥ खांड रा खाजा मुझ ने मोकला दूजा घेवर जाणोजी । दोय सुंकडी मुझ ने मोकली

औरा रा त्याग करावोजी ॥व्रत.॥३॥ राय डोडा ने इगतीया भले वथुआ रो सागो जी। तीन तरकारी मुझने मोकली औरां रा त्याग कराओ जी ॥व्र.॥४॥ आसोज काती रो नीपज्यो घीरत मुझने खाणोजी। पुडलिया आया पछे बीजारा पच्चखाणोजी ॥व्र.॥५॥ फलरी जाति अनेक छे न्यारा न्यारा भेदोजी। एक प्रभुजी मोकलो खरबूजो फल खाणोजी ॥व्र॥६॥ ताल प्रलम्ब अनेक छे न्यारा न्यारा भेदोजी। एक प्रभुजी मुझ ने मोकलो खीर आंबो फल खाणोजी ॥व्र.॥७॥ तालाब कुआ ने बावड़ी तिणरो मीठो नीरोजी एक प्रभुजी मोकलो अधर आकासा रो झेल्यो जी ॥व्र.॥८॥ कपड़ा री जात अनेक छे न्यारा न्यारा भेदोजी। एक प्रभुजी मुझने मोकलो कुंबी वस्त्र सफेदोजी ॥व्र॥६॥ गहना री जात अनेक छे न्यारा न्यारा भेदोजी, नामांकित मुंदडी काना रा दोय कुंडलोजी ॥१०॥ ॥व्र०।१०॥ स्नान करण री विधि भली कलशा आठ भरावोजी।। एता प्रभुजी मुझने मोकला बीजा रा पच्चखाणोजी ।।व्र०११॥ स्नान मंजन लूहण तणे एतो अंगोछो व साड़ीजी। ए तो प्रभुजी मुझने मोकला बीजा रा पच्चखाणोजी ।।व्र०।१२ मूंग मसूर ने उडद नी दाल तणी तीन जाणोजी । एतो प्रभुजी मुझने मोकली बीजारा पच्चखाणोजी ।।व्र०।१३ चार गोकुल

मुझने मोकली गाया चालीस हजारोंजी । शिवानन्दा नारी मुझने मोकली वीजी रा पच्चखाणोजी ॥त्र०।१४॥ चार जहाज मुझने मोकली डूंडा भले चारोजी । पांच सौ हल मारे मोकला गाडा एक हजारो जी ।त्र०।१५॥ दांतण जेठमद तणां वीजा दांतण रो नियमोजी । पीटी ए धान गेहुं तणी ऊपर लोधण दोयोजी ॥त्र०।१६॥ अगर चन्दन रा धूपण नित प्रति मुझ ने नियमोंजी । तेल दोय जात रा सहस्त्र पाक लक्ष जाणो जी ॥त्र०।१७॥ लोंग डोडा ने एलची जायफल कंकेडो । मुखवास मुजने मोकला पांच जातरा तंबोलोजी ॥त्र०।१८॥ चार क्रोड धरती मध्ये, चार क्रोड व्यापारे जी । चार क्रोड घर विखेरा, उपरांत त्याग कराओ जी ॥त्र०।१९॥ पद्म कमल ने मालती फूल तणी तीन जातोजी । पहिरण काजे मुझ ने मोकला किंशुकिया विचारोजी ॥त्र०।२०॥ अगर चन्दन ने कुंकुमा तीन विलेपण जाणोजी । इतरा रा आगार छे वीजारो पचखाणोजी ॥२१॥

॥ ढाल दूसरी ॥

आज पछे इण तीरथे रे लाल, सन्यासी वेश सुविचारी रे, ज्यांने हुं वंदू नही रे लाल, नही सारुं ज्यारी सेव सु विचारी रे, ज्यांने वंदू नही रे लाल आनन्द समकित उच्चरे रे लाल ॥१॥ भगवंत रा साधु साध्वी

रे लाल आचार में ढीला थाय सुविचारी रे लाल ज्यांने हुँ वंदू नहीं रे लाल नही रे नमाऊं मारो शीष सुविचारी. ॥२॥ भगवंत रा साधु साधवी रे लाल पडिय जमाली जाय सुविचारी रे लाल दुष्ट पणो ज्यांने आदरियो रे लाल नहीं रे सारु ज्यारी सेव, सुविचारी ॥३॥ पहले हु वतरावूं नहीं रे लाल एक वार दूजी वार सुविचारी. नही रे वेहराऊं मारा हाथ सुं रे लाल अशनादिक चारों आहार ॥४॥ जो हुँ घर में वैठो रहूं रे लाल छे छन्डी रो आगार सुवि० । राजाजी हुक्म फरमावियो रे लाल अठीने नहीं परिवार सुविचारी रे लाल ॥५॥ जो कोई मेह री खेंच होवे रे लाल, अटवी में पड़ जावे काल सुवि० । जोरे वेहराऊं म्हारा हाथ सुं रे लाल मारी साला में चून रो साल ॥सु०।६॥ जो कोई देवता पितर होवे रे लाल, जो कोई मोटको थाय सु । जो कोई दुर्जन आवियो रे लाल,जो कोई नागो अड जाय ॥सुवि.।७॥ भगवंतरा साधु–साध्वी रे लाल चाले सूत्र अनुसार सुवि. । ज्याने वेहराऊं मारा हाथ सुं रे लाल अशनादिक चारों आहार सुविचारी० । ८॥ चार गोकुल मारे मोकलो रे लाल सोनैया बारह क्रोड सु० । शिवानन्दा नारी मोकली रे लाल बीजी नारी रा पचखाण ॥सु०।९॥ चार 'जहाज मारे मोकली रे लाल, दुंडा भले चार सु० । पांच सौ हल मारे मोकला गाडा

एक हजार ॥सुवि०।१०॥ सकिया पाप मोटका रे लाल घेर घेर न घेराय रे लाल । पाप न लागे गाढे जीनां रे लाल पंचग्विय। हैं मेरु समान ॥सुवि०।११॥ भगवंतां सरीखा गुरु मिलिया रे लाल मारे कमी न रायी काय सु० । नरक पडंता ने राखिया रे लाल गयो जमारो जीत सुविचारी रे लाल ॥१२॥ आनन्द समकित आदरे लाल ।

॥ ढाल तीसरी ॥

(स्वामी मारा राजा ने धर्म सुणायजो-ए देशी)

हाथ जोड़ी आनन्द कहे विनय करी ने विनीत हो। स्वामी मारी उठण री शक्ति नहीं आगा चरण करावो ओ ; स्वामी अरज करू ओ थासु विनती ॥१॥ गौतम चरण आगा किया, वांदिया मन रे हुलास हो, स्वामी धन्य रे दिवस आज रो फलिया वांछित काज ओ ॥स्वामी०।२॥ आनन्दजी प्रश्न पूछियो, गौतम दिया न कीध हो। आनन्दजी प्रायश्चित लो इण बात रो राखो सुगति उम्मेद हो। आनन्द उपकारी इसडी कहे ॥स्वामी।३॥ सांचा ने धोखो नहीं झूठा ने लागे दोष हो स्वामी प्रायश्चित दो रे झूठा भणी सांचो ने किम आपोजी ॥स्वामी०।४॥ हाथ जोड़ी आनन्द कहे विनय करी ने विनीत हो स्वामी में दीठो जैसो भाखियो

लाल, ज्ञान दियो घट में घाल हो भ. ॥१२॥ दिन दिन चढ़ता वैराग में रे लाल, सेणा ने सुविनीत हो भ.। वल्लभ लागे स्वामी साधु ने रे लाल पूरी ज्यांरी परतीत हो ॥भ ॥१३॥ पहला ने वली आठवां रे लाल, दोना ने अवधिज्ञान हो भ । आठां ने उपसर्ग उपन्यो रे लाल, श्रद्धा ऊपर तान हो ॥भ ॥१४॥ वीस वर्ष संयम पालियो रे लाल, पडिमा हुई ग्यारहवीं हो भ.। संथारो कियो एक मास रो रे लाल, उपन्या पहला स्वर्ग मझार हो ॥भ.॥१५॥ महाविदेह क्षेत्र में सीझसी रे लाल विस्तार सातवें अंग हो भ.। धोयो पिण पलटियो नहीं रे लाल चोल मजीठ रो रंग हो ॥भ ॥१६॥ संवत् अठारह गुण तीस में रे लाल, कीधो पीपाड चौमास हो, भ.। पूज्य जयमलजी परसाद, पूज्य रायचदजी भण्यो हुलास ही ॥भ ॥१७॥

देवकी की ढालें

दोहा—वैरागी मन बाल ने दीनी तपस्या री नींव ।
बेले बेले पारणो कराव दो जावज्जीव ॥

॥ पहली ढाल ॥

(वे दरवो सु मारो मन वसेजो देशी)

पहले प्रहर में सूत्र भणेजी दूजे में अर्थ-विचार । पूजी तो तीजी पोरुषीजी वेदन रे मिस क्षुधाजी थाय, साधुजी भले ही पधारिया जी ॥१॥टेर॥ आज्ञा लेई भगवान की जी बांधव छहूं कर जोड । गोचरी करवा ने संचरियाजी द्वारका नगरी के मांय ॥साधु॥२॥ ऊँच नीच मध्यम कुल में जी आगे जांचता जी जाय । दोष बयालीस टाल ने, सूझतो लेवे मुनि आहार ॥साधु॥३॥ बेला केरो मुनि रे पारणो जी वेहर न जावे मुनिराज । अनुक्रमे फिरता थकाजी वसुदेवजी रे घर जाय ।सा॥४॥ सोना रे सिंहासन राणी देवकीजी बैठी है महलां रे मांय । गजगन्ता देख्या मुनि आवताजी, हिवडा में हरस न माय ॥सा॥५॥ सात-आठ पग सामां जायने जी लुल

कुल नीचा जी थाय । आज भलो दिन उगियोजी देखी मुनीश्वर की जोड ॥सा.॥६॥ आज कृतारथ मैं थई जी, देखी मुनीश्वर की जोड । आज मारी रे दशा फिरी मुनिवर धरिया मुझ घर पाय ।.सा.॥७॥ मोदक थाल भरी भरीजी देवकी मांहिसु लाय । कृष्ण तणां रे जीमण तणाजी वेहरावे उलट परिणाम । सा.॥८॥ मुनीश्वर वेहरी पाछा गयाजी लागी थोड़ी सी वार । दूजो सिंघाडो भले आवियो जी वसुदेवजी के घर माय । सा.॥९॥ मोदक भले ही वेहराय ने जी देवकी जी गया निज ठाम। तीजो सिंघाडो भल आवियोजी वसुदेवजी के घर माय ॥सा.॥१०॥ पहले मोदक वेहराय ने जी पूछ्र सु एक विचार । वार-वार किम आवेजी साधु रो नहीं रे आचार । साधु जी भले ही पधारिया ॥११॥

॥ ढाल दूसरो ॥

भगवंत ! नगरी द्वारकाजी वारह योजन परिमाण। कृष्ण नरेश्वर राजवी जी ज्यारी तीन खंड में आण । मुनीश्वर एक करुं अरदास ॥टेर।१॥ बहत्तर क्रोड घर बाहरे जी नगरी मे साठ करोड़ । लोक सहू सुखिया वसेजी, राम किशनजी री जोड ॥मु०।२॥ लाखों क्रोडा रा धणी वसेजी नगरी में बहु दातार । सेठ मन्त्री सेनापतिजी ज्यारो अधिको मान ॥मु०।३॥ खावण

पीवण ग्ररचवा ने पुण्य मेती मिली आय। साधु रा दर्शन विना ये तो नहीं घाले मुख में अन्न ॥मु०।४॥ हुं पूछूं तिण कारणे ओ स्वामी नगरी में नहीं मिलियो आहार। म्हारा पुण्य उदय थकी थे तो आया तीजी वार ॥मु०।५॥ पूछण में नफो नहीं ओ स्वामी, विन पूछिया रह्यो न जाय। सूत्र मे सांभल्यो हो स्वामी नहीं आवे वारम्वार॥मु०।६॥वलता मुनिवर इम कहे वाई, नगरी में वहु दातार। थारे घर देहरी गया जी को दूजा मुनिवर जाण। देवकी शंका मूल मत आण ॥७॥ कौन नगर रा वासिया हो स्वामी वसता थे किस ठाम। किणाजी रा दीकरा ओ स्वामी कहो नी तुम्हारो नाम ॥मु० ८॥ नाग गाथा पति रा दीकरा ए वाई, सुलसा मारी माय। भद्दिलपुर रा वासिया ओ वाई घर छोड्या छहुं भाई ॥देवकी०।९॥ वत्तीस रंभा तजी ए वाई, वत्तीस डायचा री जोड़। कुटुम्ब छोडियो रोवतो ए वाई विलविल करती माय ॥देवकी०।१०॥ नेमीश्वर की वाणी सुणी ए वाई जाण्यो अथिर संसार। धन कंचन ऋद्धि छोड़ने ए वाई संजम लीना छहुं भाई देवकी०।११॥

॥ ढाल तीसरी ॥

दोहा—मुनि वचन श्रवणे सुणी, चिन्ते चित्त मंझार।
एहवो घर परिवार तजी, लीधो संजम—भार ॥१॥

हाथ जोडी ने वीनवे सांभलजो मुनिराय ।
कौन साधु स्वार्थी (तुम्हें निकालिया) देवो मुझे बताय।२।

ढाल—बत्तीस तो क्रोड सोना रा बत्तीस रुपा रा जाण ए माय ! बत्तीस तो मुकुट सोना रा बत्तीस रतना रा जाण रे माय ! पुण्य तणा फल मीठा जाणो एवा अधिका जाण ए माय ॥१॥ बत्तीस तो हार टीका वलि बत्तीस नवसर जाण ए माय, रतना रा कांकण सोहे, बायां ने बाजुबंद ए माय ॥पुण्य०।२॥ बत्तीस तो थाल सोना रा बत्तीस रुपा रा जाण ए माय। बत्तीस दुकड़िया सोना रा बत्तीस रुपा रा जाण ए माय ॥पु०।३॥ बत्तीस तो पलंग सोना रा पाया रतन जडाय ए माय ॥पु०।४॥ एक सौ ने बराणु बोल ए माय एवी ऋद्धि छहु कुंवरा री इण सु अधिकी जाण ए माय ॥पु०।५॥

दोहा—वली वली कीधी वीनती, तुम मोटा मुनिराय ।
घर मां टोटो शुं पडियो दीजो मुझ बतलाय ॥१॥
वलता मुनिवर इम कहे तुम सुनिये मेरी बात ।
घर में टोटो जो पडियो देऊं तुम्हें बताय ॥२॥

॥ ढाल चौथी ॥

इण भरत क्षेत्र माय सांवटा किण माई बेटा जाया रे। तीन सिंघाडा होय तीसरियां में हाथां सु आहार

बेहरायो रे । करे रे विमासण राणी देवकी ॥टेर।१॥
जोत कीरति मांय दीसे सोभता, घणा जीवांरा हेतु रे ।
था माई बेटा विना दिन काढसी केमो रे ॥करे०।२॥
जिण घर मां सु छह नीसरियां, लारे रहिया से केमो
रे । अनुमति देता हो मायड़ी ज्यारी जीभ भई छे केमो
रे ॥करे०।३॥ बाल पणे मुझने कह्यो एवंता अणगारो रे।
आठ ज जणसी राणी देवकी, नहीं कोई भरत मझारो
रे ॥करे० ४॥ छप्पन करोड री मारे साहिबी यादव कुल
अवतारो रे । रूप कीरत मांहि दीसे सोभता नलकुंवर
घणियारो रे ॥करे०।५॥ हरप हिया में मावे नहीं मुनिवर
रूप निहानो रे । नयना निहाले राणी देवकी, देवकुंवर
घणियारो रे ॥करे०।६॥

दोहा—इसा पुत्र जनम्या विना किम थासी आनन्द ।
यह मुझने संशय पड्यो भांगे नेम जिनन्द ॥

॥ ढाल पांचवी ॥

चाकर पुरुप बुलाय ने, रानी देवकी बोले एमोजी ।
देवानुप्रिया थे तो रथ वेगो सिणगारोजी । श्री नेम वंदन
ने चालिया ॥१॥टेर॥ श्री चाकर पुरुप हाजर खड़ा, रथ
लाया सिणगारोजी । उपस्थान शाला बाहर रथ उभो
राखियो जी ॥श्री०॥२॥ न्हावण, धोवन, मजन करिया
राणी पहरिया नवला वेशोजी । माणक मोती मुंदडी,

गहना वीचे हारो जी ॥श्री०॥३॥ माथा पै धोला भला भला छोटी सी सींगडिया जाणोजी। वलदां रे झूला शोभती नाक में नाथ रसालोजी ॥श्री०॥४॥ सोना री छाली सींगडिया गले वांधी घुंघरमालो जी। माथा धोला भला भला, थें तो एवा पुष्ट वैल मंगावोजी ॥श्री०॥५॥ चालत चाल उतावला वारे सींग पूछ नहीं खोडोजी। हलका ने वाजे घणा थे तो एवा रथ सिणगारो जी ॥श्री०॥६॥ चालत चाल उतावला मारा काना ने शब्द सुहावेजी। साथे लई सहेलडियां राणी वैठा है रथ के मायोजी ॥श्री०॥७॥ वाहरला री दृष्टि पडे नहीं भले मांयला ने विशेपोजी। चतुर वैठायो सागड़ी भले गृहस्थी रो आचारो जी ॥श्री०॥८॥ करी सजाई सोभती राणी निकल्या मध्य वजारोजी। चतुर वैठायो सागड़ी भले गृहस्थी रो आचारोजी ॥श्री०॥९॥

दोहा—अतिशय देख्यो नेम नो उतर्या रथ के वाहर।
पाला होयने देवकी वंदे वारम्बार ॥१॥
वंदन कीधा देव ने भांत भांत कर जेम।
तिन अवसर इसडी कहे मने संशय है एम ॥२॥
ए छे पुत्र बाई थायरा, सुलसा रा मत जाण।
देवकी सुण हर्षित हुई, सुण साधां की बात ॥६॥

॥ ढाल छठो ॥

उत्पत्ति छे जो जीवा जो देखाड़े जिनराज । कर्मा री गत वांकडी ए वाई, देवकी सांभल चित लाय । देवकी शंका मूल मत आण ॥१॥टेर॥ किसरा नगरां रा वासिया ओ स्वामी वसता थें किस ठाम । किणाजी रा दीकराओ स्वामी कहोनी तुम्हारो नाम । मुनीश्वर एक करुँ अरदास ॥दे०॥२॥ नाग गाथापति रा दीकरा ए वाई वर छोड्या छहु भाई ॥दे०।३॥ वालपणा मुझने कह्यो स्वामी एवंता अणगार । आठज जणसी देवकी ए वाई, नहीं कोई भरत मझार ॥दे०।४॥ हरिण गमेषी देवता ए वाई प्रतिमा री पूजा कराय । भक्ति सु रीझ्या देवता ए वाई इच्छा हो सो वोल ॥दे०।५॥ सुलसा कहे देवता भणी ओ स्वामी, यो मुझ करनो काम । पुत्र जीवाडो मायरा ओ स्वामी, कृपा करो महाराज ॥देव।६॥ देवता तो कहे सुलसा भणी ए वाई यो तुझ नहीं होवे काम । थारे आवे जीवता ए वाई परना वालक लाय ॥दे०।७॥ देवकी ने तू एक समय ए वाई गर्भ धरे समकाल सातवें देवलोक थी ए भाई अनुक्रमे छहुं आय ।।दे०।८॥ सुलसा नो मुवा जणे ए वाई, वे मेले तुझ पास । थारा आवे जीवता ए वाई उणारी आस ॥दे०।९॥ सात रतन चौरिया सौतरा ए वाई ।

चोरिया नेना थाय। विन देख्या रोवती ए बाई थे करुणा आण ॥दे०।१०॥ एक रतन पाछो दियो ए बाई सोलह घड़ी सु आण। तिन कारण मुवा गया ए बाई थारा छहुं बाल॥दे०।११॥सोलह वर्ष सुं किशनजी ए बाई ये ही राख्यो घर सुत। कर्मा सुं सबलो कोई नहीं ए बाई विन भुगत्या नहीं छूट। सांभली विचरिया सुख मिले ए बाई देवकी शंका मूल मत आण। देवकी विचार चित्त लाय ॥दे०।१२॥

दोहा-नगर में थई निकलिया, साथे बहु परिवार।
नेम जिनद समोसरिया, ठहरिया तिन हीज ठाम ।१॥

॥ ढाल सातवीं ॥

देवकीतो आया नंदन वांदवा रे, आया श्री नेमजी रे पास रे। नयनां साधुजी ने देख्या देवकी रे करवा तो लाग्या अरदास रे ॥देवकी०॥१॥ देवकी तो वन्दना करी रे, उभा रह्या छे सामे निहाले रे। कसां तो टूटी कंचु वणीजी छूटी छे दूध नी धार रे ॥दे०॥२॥ तन मन विकसी हियो हुलास रे, फली-फूली छे देवकी री काय रे। बाया में वलय मावे नहीं रे, जोता लोचन तृप्त न थाय रे ॥दे०॥३॥ सशय तो भांग्यो श्री नेमजी रे ए छे छहुं थारा बाल रे। आंख्या में आसूं पड़े रे जाणे मोत्यां रो टूटो हार रे ॥दे०॥४॥ देवकी तो साधां ने वंदना करी

रे, पाछा आया छे महलां रे माय। सोच फिकर करे देवकी रे जोइजो मोह तणी जाल रे ॥दे०॥५॥

दोहा—देवकी मन चिंता वसे, जोजो कर्म संजोग।
मै जाया छहुं बाल, पाल्या किण ही लोग ॥१॥
चिन्ता सागर झूरता, वर धरती सुं स्नेह।
मुख कुम्हलाणो बोले नहीं, धरे न किण सुं स्नेह।२।
तिण समय श्री कृष्णजी माता वंदन जाय।
पग प्रणम्या माता तणां बोले कृष्णमुरार ॥३॥
मांजी मारा राज्य में थें ही दुखिया थाय।
तो पिण इण संसार में सुखियो न दीसे कोय ॥४।
वहुआं थारा हुक्म में लुल लुल लागें पाय।
सगली पाये लागतां थारी पिण्ड्यां उछल जाय॥४॥

॥ ढाल आठवी ॥

कृष्ण कहे मां सांभल हो वंदन तुम्हारो थाय। चिन्ता रखदी चौगुनी हो वंदन तुम्हारो थाय ॥ ए वातां बहुलाल ॥१॥ आवे पुत्र थकी मॉं दुखनी कहावे हुँ समझूं थारो समझायो। वात कहेता घणी वेला वीते जी माताजी जीवोजी ॥

दोहा—देता प्रदक्षिणा वांदता, बोलिया श्री जिनराज।
किण कारण तुम आविया ते सुणजो चित लाय।

नेम कहे सुण देवकी, संशय उपजो तुझ ।
छह मुनीश्वर देखीने पूछवा आई मुझ ॥
'तथ्य' कहे तव देवकी जोडी दोनों हाथ ।
संशय पडियो जो मुझे ते भांगो जगन्नाथ ॥
छहुँ थारा दीकरा शंका मत कर कोय ।
छेहुँ वेहरण आविया देखि पूत मोहाय ।

॥ ढाल नवमी ॥

हुँ तुझ आगल शुं कहूँ गिरधारीलाल, विगत दुखी नी वात रे कन्हैया, दुखिनी नारी छे घणी रे लाल, एक दुखी थारी मांय रे गिरधारीलाल ॥१॥ किया सो ही भोगवे कन्हैया, किया, पाप कठोर गिर० जन्म माता रा किया घणा कन्हैया पाप अघोर । गिर०॥२॥ बालेश्वर विराजे कन्हैया, थारे मायडी रे मन कोड रे गिर० ॥ दर्शन करवा मारो कन्हैयो आवे छठे मास रे गिर.॥३॥ हुं जाया तुझ सारखा कन्हैया, एक न वाले सात रे गिर०। बात कही सहु नेमजी कन्हैया मैं प्रत्यक्ष आई देख रे ॥गिर०।४॥ छहु' तो छाने वसिया, थें जल यमुना रे तीर रे गिर० । नन्द यशोदा घर कन्हैया थारो नाम दिरायो अहीर रे ॥गिर०।५॥ काजल नहीं घाल्यो आंख में कन्हैया, फदिया नहीं दीना हाथ रे गिर० । हालरियो गायो नहीं कन्हैया, नहीं पालणिये पोढाय रे ॥गिर०।६॥

थड़ी नहीं कीधी आंगणा कन्हैया, अंगुलिया पकड़ाय रे गिर। एता थे पण न कीना कन्हैया, मैं जनम नाम कढ़ेराय रे। गिरधारी।७। काना मोती कुंडल कन्हैया नहीं रे सिणगारिया न्हाना बाल रे दीवाली दिन मोटको कन्हैया, मारे हिन्डता न्हाना बाल रे ॥गिर०।८॥ पुत्र खेलाऊं गोद में कान्हैया, ते मारी इच्छा मन रे गिर०। जग मांहि मोटी मोहिनी कन्हैया म्हारे उदय आई छे आही ज रे ॥९॥ (बीजो कोई देख सके न कन्हैया, के जाणे जिनराज रे गिर०।)

दोहा—तिन काले ने तिण समे भद्दिलपुर छे गांव।
नाग सेठ तो तिहां वसे सुलसा घरिणी नाम ॥१॥
धन कंचन तो छे घणो, ऋद्धि तणो नहीं पार।
पण मृत वत्सा ते सही सोचे हृदय मझार ॥२॥
तब ते छोरु कारणे हरणगमेषी देव।
आराधे एकंत मे नित नित करती सेव ॥३॥

॥ ढाल दसवी ॥

कृष्ण कहे माँ सांभलो हो, चिन्ता मत करो काय। जिम बांधव थायसी हो तिम हुं कर शुं विचार माई। जो थारे होसे न्हानो भाई, थे मने दीजो वधाई, माजी जीवोजी ॥१॥ माताजी रे पग लागने हो आया पोषध शाला। हरिणगमेषी देवता हो मने सुमरिया तत्काल, मने

सुमरिया तत्काल मुरारी ; तेलो एक मन मांहि थाप्यो, देव आया पूछे तिणवारी कहोनी वात विचारी हो देवानुप्रियाजी ॥२॥ देवकी रे पुत्र थावसी हो, तिण कारण थकी थाने तेडिया हो, बीजो नहीं मारो प्रेम हमारे पुत्र विना मां दुखनी कहावे । हुं समझूं नारी रे वही सुख संसार हो, देवानुप्रिया जी ।३॥ देवकी रे पुत्र आठवो हो जो होसी तो चारित्र लेसी चुप सही । नहीं वचन मारो झूठ जावे, इस कही ठिकाणे जावे तो कृष्णजी देवतणा गुण गावेजी ॥

दोहा—वाणी सुण वैरागियो, लीनो संजम भार ।
छह पुत्र छे थायरा तू शंका मती आण ॥१॥
तव परिसद् सहु रली, वांदी नेम जिनंद ।
साधु समीपे आविया, सही आणी आनन्द ॥२॥

॥ ढाल ग्यारहवीं ॥

गजसुकमाल देवकी रा नन्दन, कृष्ण तणा भाई । लाड कोडा कर हुलराया आशा पूरो भाई, तीन खंड को राज भोगवो, राजी राखो भाई कलेजा कमी नहीं रे काई । त्याग दियो संसार समुंदर उदय भली आई ॥१॥ करी सगाई मेल्या अंतेवर जिन वांदन जाई । वाणी सुण ने रींझ रहिया ओ प्रभुजी चारित्र चित्त लाई ॥२॥ वचन मान सिंहासन बैठा बोल्या हे कृष्ण

भाई । कोई जरूरत होवे बात की दीजो मुझ फरमाई ॥३॥ तीन लाख मोनैया काढी श्री भंडार के माहि । दो लाख का ओघा पात्रा एक लाख नाई ॥क०।४। यादव कृष्णजी महोत्सव मांडियो साथे थई माई । जाय सोंपिया नेम जिनन्द ने धन धन मां भाई ॥क०॥५॥ इम सिखामण देवे देवकी फिर पाछी आई भर यौवन में श्यामा सुन्दर छिन में छिटकाई ॥क०।६॥ कहे देवकी सुन रे जाया नयना जल बरसाया । मने छोडने और मायडी मत करजो भाई ॥क०॥७॥ उपराडा की सेवा हुए तो दीजो मुझ फरमाई ; कर्म तोड़ने जाऊं मुगत में जेज नहीं काई ॥क ॥८॥ भिक्षु पडिमा कहे जिनेश्वर, तप तेलो ठाई । आज्ञा लेई ने काउसग्ग कीनो श्मशान भूमि के माहि ॥क०॥९॥ सोमल सुसरो देखकर कोपियो, गीली मिट्टी लायो । पाल बांध ने खीरा धरिया, दिल दया नहीं आई ॥क०॥१०॥ खदबद खदबद खीरा तन परे, सिर वेदना थाई । नाका सल नहीं घाल्यो मुनिवर परम आनंद आई ॥क०॥११॥ पुद्गल पड़े, नजर मोक्ष मे, मन धीरज लाई । चेतन देवरी ध्यांन अनेरी ध्यान शुक्ल ध्याई ॥क०॥१२॥ ज्ञान तणे घोडा पर चढिया तन मन हुलसाई । कर केसरिया झूझ रह्या हो कर्म कटक मांहि ॥क०॥१३॥ तड़के उठिया नेम वंदन ने चाल्या कृष्ण भाई । मारग बीच में डोकरो मिलियो अनुकम्पा आई

॥क०॥१४॥ ईंट राशि ने कव ले जासी जरा-जीर्ण थाई। हाथी रे हौदे बैठा कृष्णजी ईंट धरी घर मांहि॥क०॥१५॥ नेम वंदन चाल्या कृष्णजी, नहीं दीठा भाई। कहे जिनेश्वर बंधव थारा मुगत गढ के मांहि॥क०॥१६॥अल्प काल में काम सिद्ध कियो किम बांधव भाई। तुम डोकरा ने सहाय दियो ज्यों कह्यो मुनिराई ॥क०॥१७। केवल लई ने मोक्ष पहोंच्या घर भातो खाई। ऋषि चोथमलजी कहे मुनि गुरु वंदु भाई। करमां री गति वांकडी ए बाई ॥क०। १८॥

जाम्बवती की ढाल

कृष्ण बलभद्र दोनो नीसर्या, चाल्याजी शौरीपुरी जाय । आया शीघ रथ पामणा ॥१॥ जमाई सरीखा म्हाला कोई नहीं थे तों घणी घणीजी राजा करी जो मनुहार । ऊनो पाणी तुरन्त दिरावजो ऊंचा ढोलिया ढलावजो बलभद्रजी संघाडा रा जोग ॥आया.२॥ पाटू सूती गादिया रो बेसणो, रत्न जटित बाजोटिया, सहस्त्र कंचन रो वड़ो थाल परोसे माता धारणी, पठाया जी उग्रसेनजी रे हाथ ॥आया०॥४॥ हरजी हाथ संकोचियो रावली जी म्हाने मणि दिराव ॥आया०।५॥ आ मणि शोभेजी मारी आंगली, आ मणि मा सु दीनी न जाय ॥आया०।६॥ ओली हो राजन मूंदडी, मूंदडी खुचेजी म्हारी अंग रावली जी म्हाने मणि दिराय ॥आया०।७॥ जीम चूठ चलू कर्यो घुडला जी हरजी घाल्या पलान । उग्रसेन पहुंचाव ने संचरिया, पहुँचायने पाछा फिरिया जय आय आडा फिरिया मणि खोलने ले गया । गई गई जी सत्यभामा ने पुकार, वारू लाग्या थारा बाप ने घड़ी घड़ी सत्यभामाजी ने वीनवे, सुनो सुनो जी म्हारा दयाल ॥आया०।६॥

दोहा—भामा है तू भोमडी कलह करन्ती नार ।
उठ प्रभात कलह करे पछे भखे तू आहार ॥१॥
मणि यमराजा ले गयो, पेठो पातालां माय ।
पछे घणो पछतावसी, जम राजा सु जाय ॥२॥

॥ ढाल दूसरो ॥

कसुंबा घणा ही घोटाविया कसुंबा में राजा केशर मिलाय, मल्लिदत्त ऐसा किया ॥१॥ पहरिया जी राजा वख्तर टोप, पाजामा पहेरिया छे जी शोभता, कसिया जी राजा तीर कमान ॥२॥ जांघिया पेहरिया यह शोभता कहिजो जी सत्य-भामाजी ने जाय दिन दस चारां मे आवसां, मन में जी मत कीजो अनुहार ॥३॥ घणी घणी जी राजा घुडलारी घुडसाल, कृष्ण पाताला में बैठिया ॥४॥ यम सूता छे नींद में जाम्बवतीजी ढोले छे वाय, कंवरी जगाय दो थारां बाप ने । थे तो दीसोजी राजा शूरा ने सुल्तान, घरे पधारो कुंवरा आप रे ॥५॥ मारा पिताजी ए तो बम्भर भूत उठी ने बांथिया पड़े । यह लड़सी तो मैं लड़ लेसां, नही तर जी मैं शूरा ने सुलतान कुंवरी जगाई दो थारा बाप ने ॥६॥ जितरे यमराजा जागिया, जागी ने बांथिया पडिया । कुण हारिया कुण जीतिया, जीतिया जी म्हारा कृष्ण मुरार, कृष्ण जीत्या

ने यम हारिया ।।७।। आवलजी दीधी गोडा रे हेट, जितरे यमराजा बोलिया, सुनो सुनो जी म्हारा दीन दयाल, कृष्ण जीत्या ने यम हारिया ।।८।। सुनो सुनो जी म्हारा दीनदयाल, जोही मांगो सो ही हाजिर करूं अन्न धन लक्ष्मी म्हारे छे घणी, अनगिनती जी म्हारे भरिया भण्डार कंवरी परणाई दो मोटा राज ने ।।९।। यम सुनी ने खुशी हुआ, यम सुनी ने राजी हुआ, म्हे तो करसां जी जाम्बवती रो व्याव, स्वर्ण थंभ रोपावसां ।।१०।। पाटूजी सूती तणिये खिंचाय चारो दिशा राला वाला चूंदड़ी । जब तिल होम कराय ।।११।। नारंगी वेस पेरावसां भणियाजी गुणिया पण्डित बुलाय हथलेवो जुडाओ मोटा स्वामी ने ।।१२।। परण गुजरने उतरिया, यमराजा जी थे तो दायजो दिराय । हस्ती दीधा हिंसता दीधा जी राजा घुडलानो घमसान, पायल दीनी छे बाजनी, सोलह दीनी है चेटियां ।।१३।। दायजो लेई ने खुशी हुआ, दायजो लेई ने राजी हुआ, रावली जी म्हाने मणि दिराय ।।१४।। एकण रो कई मांगियो, एक सौ राजा लेवोनी दस बीस । हम घर मणियां रो टोटो नहीं ।।१५।। थाल भरी ने मणि लाविया, दूजी मणि तो जगमगे आ मणिजी राजा काच समान उठाय ने उरी लीधी बांधी जी राजा पागड़ी के पेच दूजी भंडारां में डाल दो ।।१६।। कहीजो जी सत्यभामा जी ने जाय,

पधावनरी तैयारी करो, अबारू पधावनरी वेला नहीं, जूना जी जडिया महल बताय, जूनाजी सूना बाग बताया जठे जाम्बवती ने उतारी ॥१७॥

दोहा–रातो दीवलो थरहरे, रानी जोवे वाट।
मोय अन्तराय आडी फिरी वारह वर्ष की आज ॥१॥

॥ ढाल तीसरी ॥

चेटियाँ ने पीहर मोकली थें घरे जाओ चेटियां बाप रे। ज्यांरी तो मोरियां में गुण नही त्यारां किसा रे हवालो रे। हरजी जाम्बवती विसरिया, श्रीकृष्णजी जाम्बवती विछुडिया ॥१॥ वाई रा बावोजी उभा वारणे, बाई रा पूछे समाचारोजी। किसोक बाई रे वेसोजी, काच कमल रो बाई रे चूडलो, बाई रे आभिया वरणो वेसोजी ॥श्रीकृष्णजी॥ नाक मे सलिया शोभती, बाई रे कुंवारी रो वेसोजी, सुण बावोजी चमकिया शुं कीधो कृष्ण मुरारोजी ॥श्री०॥२॥ वाईरा बाबोजी धावड मोकले, मारी राजकुंवर घरे आओजी। सोलह गांवनी बाई नी सूंकडी, म्हारा कुंअरांसु अधिकी राखूंजी। बेटी कह वतलाऊंजी थे घर आओ बेटा बाप रे ॥श्री०॥४॥ जाय बावाजी ने इम कही जो, बाबोजी थे तो मोटा उमरावोजी, रूठोड़ी बेटी तो घरे भली बाबाजी पीहरिये नहीं आऊंजी, घर में आव आदर नहीं म्हारी चावत करसी लोगोजी

।।श्री।६।। बाई रा बाबोजी धावड मोकलिया, म्हारी राजकुंअर वर आओजी । कहो तो बेटा ऊधम करूं कहो तो द्वारका ने आंबी नाखूंजी ।।श्री।७।। ऊधम ऊधम काई करो, बाबाजी आगला बोल विचारोजी । बाबाजी आंचल दीधी गोडां रे हेठो जी ।।श्री०।८।।

।। ढाल चौथी ।।

इन्द्र इन्द्राणी हो सुखभर पोढिया, मोवन ढोले वाय । ढोलियो ढोलन्ता हो झांके बाई जालिया । दोय उजलावत जाय, एक गौरा ने दूजा बाई सांवला नन्दोयां रे उणियार ।।१।। माथो धुनी ने इन्द्र राजा बोलिया धिक् धिक् ये मोघन नार । इन्द्र सरीखी थारे साहिबी तोई तृष्णा नहीं जाय ।।२।। धन धन या यम राजा री दीकरी शीलवन्ती सुकुमार । जो ही नर परणिया हो सो ही नर विसरिया नहीं पूछी सार संभाल । श्री इन्द्र वखाण्यो हो अंतेवर राजा कृष्ण रो ।।३।। इतरो गुमेज हो इन्द्र राजा काई करो थे परणो नी वारंवार । कहो तो जाम्बवती हो लाऊं थारा सेज में थारी पटराणी कर थाप ।।४।। थारा तो पूरण ये मोघन जुग में होय रह्या तू म्हारा करण मत जाय । धूप पड़े ने धरती तपे आ मोघन जाम्बवती रे महलां जाय ।।५।। जाम्बवती देखी हो मोघन आवती, पल्लो सांवट ने आगी जाय ।

थें तो आया बाई जी थापूं मिलवाने थे नहीं दीधो आदर मान ॥६॥ थें तो आया हो जामण जाया वीर ज्यों, थे नहीं दीधो आदर सन्मान । सासु सगला देवर जेठाणियां लुल लुल लागूं पाय, गरुड ध्वजेश्वर हो राजा श्रीकृष्ण री मैं मिलसूं बांह पसार ॥७॥ परायां पुत्रां री हो नारी सुं मे नहीं मिलूँ, मिलूं तो दूषण थाय । बात सुनी ने वो जाम्बवती नारी, मोचन विलखी थाय ॥८॥ थें तो चालो हो बाई जी म्हारा इन्द्र रे थांने पटराणी कर थाप । कूंची तो सोपूं बाई जी भंडारनी थारो दूनो मान बधाय ॥९॥ एक अपूती हो दूजी बाई बांझड़ी थे तीजी दुहागन नार । सेर धान रो बाई सहारो कोई नहीं, थाने न्याय तजी भरतार ॥१०॥ थारो तो इन्द्र ए बाई कहीजे मोटका, चाकर कृष्णवर थाय । मोटा घरांरी बाई मैं तो गोरड़ी चाकर घर किम जाय ॥११॥

॥ ढाल पांचवी ॥

करूं श्री मन्दिरजी ने वन्दना ए मैं लुल लुल लागूं पाय रे । परभव रो भाई-बंधवो रे चलियो कठे जाय ॥१॥ पर भव रो भाई-बंधवो रे कठे मिलसी आयरे । श्री मुझ संशय काट दो रे आप फरमाओ कृपानाथ रे । तो मुझे बंधव कठे मिले रे ॥२॥ नगरी द्वारिका दीपती

जी कृष्ण नामे भूपाल रे। रूक्मिणी कूंख में ऊपना रे प्रद्युम्नकुमार सुजान रे ॥३॥ हीरा रो हार हीरा जड़ियो रे दीधो कृष्ण जी रे हाथ रे। पटराणी थारे रूक्मिणी रे दीजो जिनने पहराय रे ॥४॥ कृष्णजी मनमांहि चिंतवे दोय बंधव एकन घर किम थायरे। आगे इ पाव थंभिया नहीं रे मैं देऊं सत्यभामा ने पहराय रे॥५॥आया विद्याधर देवता रे सोया कुंवर जगाय रे। परभव रो भाई बांधवो रे परकोटा किम जाय रे ॥६॥ कुंवर महलां सुं हेटे उतरिया रे आया माताजी रे पास रे। आय ने मुजरो कियो रे लुल लुल लाग्या पाय रे थारे चाहिये नन्दन बालको रे म्हार चाहिये छोटो भाई रे ॥७॥ जाया रे जाया हूं भारी रली रे म्हार कुण करे आल पंपाल, तू ही ज नान्हो बालको रे तू ही म्हारा जीव रो आधार । सहस्त्र अंतेवर राजा कृष्ण रो रे ज्यां माहि बाला कुण थाय रे। जाम्बवती म्हारा मन मे बसी रे वा मारा जीव तणो आधार। जाया रे जाया हूं थारी रली रे ॥८॥ धूप पड़े धरती तपे रे कवर माई जी के महला जाय। माई जी खड्ग उठावियो रे दास्यां तो लीधी दश चार रे ॥१०॥ आय माई जी ने मुजरो कियो रे लुल लुल लाग्या पांय रे। थांरे चाहिये माता नान्हो बालको, म्हारे चाहिये छोटो भाय रे ॥११॥ जाया रे जाया हूं भारी रली रे म्हारे कुण करे आल पंपाल रे।

तू ज म्हानो बच्चो बालको तू म्हारा जीव रो आधार रे ॥१२॥ ठाकुर पधारिया माईजी बाग में रे थे चालोनी तन्ता तन्त रे । थारा पिता ने नहीं ओलखूं रे किसे उणिहारे थारा बाप रे ॥१३॥ सुगंध दुगंध माईजी मती करो थे बैठो विमान माय रे । हरि जी पधारिया माई जी बाग में रे ॥१४॥ सत्यभामा रो रूप बनावियो र बैठा विमाना रे मांय रे । आय उतरिया हरिया बाग में रे बैठा हरिजी रे पास रे ॥१५॥ मिल मिल ने बांता करे रे हार पहरायो तिणवार । हार पहिन पाछा चल्या रे आया जिन दिशा जाय रे । हरिजी विराजिया माई जी बाग में ॥१६॥ थें हथलेवो बाई जोडियो में पण जोडियो हाथ ए गर्व न कीजे ए कामिनी ॥१७॥

दोहा—हाथ माय डांगरी, खांधे काली कांबली ।
कांई जाने ओ तो गाया रो गवालियो ॥
देखो ए सहेलियां म्हाने कृष्णजी हंसे ।१॥
सिरे ई भंडार मांसु लाओ एक हार ।
हार लेई ने सत्यभामा ने पहराओ ॥देखो.॥२॥

॥ढाल छठी॥

इण नगरी में कुण कामिनीजी, कई रुखमण री

घाल रे जीवडा आ कांई अचरज वात ॥१॥ रुखमण नें मेलूं पीहरिये जी कुंवर ने दशोठो दिराय, आया विद्याधर देवताजी खतोडा कवर जगाय ॥जीवडा॥२॥ कुंवर महलांसु हेठा उतरियाजी आया माताजी रे पास। हाथ मांहि लीधो दीपणोजी खांदे काली कांवल ॥ जोशी आ कांई अचरज वात ।३॥ कुण म्हारी नगरी मे कामिणी जी, कई रुखमण रो वाल हो जोशी। रुखमण ने मेलूं पीहरेजी कुंवर ने दशोठो दिराय ए जोशी ॥४॥ मत मेलो रुखमण ने पीयरेजी मत दो कुंवर ने दोष। पाताला में परणियाजी जाम्बवती नार। महाराजा आ नहीं अचरज वात ॥५॥ हरिजी हर्ष ने उठियाजी मन में हर्षज थाय। जोशी वात सांची कहीजी मैं परण्यो जाम्बवती नार ॥६॥ हार लिख्यो जाम्बवती तणो जी, ओ सत्यभामा रे किम जाय। हरिजी हरख ने उठिया जी देवो जोशी ने सिरपाव ॥७॥ कडियां लुलन्ती धोतियाजी बांधन पचरंग पाग जोशी जानी सांची वात। गले कंठी सोहनीजी सोहन मुरकिया कान। कडिया कटारो वाकडोजी सुभटरी तलवार जोशी आ नहीं अचरज वात ॥८॥

॥ ढाल सातवीं ॥

कृष्ण जी पूछे राणी रुक्मणी, थारी ओ म्हाने वहिन

घताय । हूँ बलिहारी हो यादवा म्हारी बहन ने स्वामी अब घरे लाओ हो स्वामी डावो पहुँचो झाल के हूँ बलिहारी ॥१॥ जाम्बवती पूछे राणी रुक्मणी थारा ओ बाई किसा भरतार के । कडिया रुलन्तो धोतियो, माथे ओ बाई पंचरंग पाग के ॥हूँ०॥२॥ माथा रो मुकुट हीरा जडियो, गले ओ बाई नवसर हार के कानाजी कुण्डल झगमगे मोतिया ओ बाई तपे लिलाट के ॥हूँ०॥४॥ प्रियजी बोली राजा प्रेम सुं, सज्या ओ गौरी सोलह सिनगार के आरसिया मुख देखियो नही शोभे हो गौरी सोलह सिनगार के ॥हूँ॥५॥ बारह मन तेल दीवो बले, अधमन रूई री एकज बाट के । हरिजी हथेलियां काजल पाडियो, सारिया ओ जम्बवती रा नैन के ॥हूँ॥६॥ आरसिया मुख देखियो अब शोभे गौरी सोलह सिनगार के । डावे तो राणी रूक्मिणी जीमण जाम्बवती नार के । पहलो तो प्यालो राणी रुक्मणी दूजो ओ जाम्बवती के हाथ के ॥हूं॥७॥ प्याला घणा ही आरोगिया, सुख घणा ही भोगिया ओ जाम्बवती नार के चांद सूरज पाये बांधिया, छह महीना की कीधी एकज रात के बलभद्र आय हेलो पाडियो थां विना नहीं शाभे बड़ो दरबार के ॥हूँ॥८॥ बूढा ने धान नहीं बालां ने थान नहीं गायां गोरंभो मांडियो, हाटां ओ भाई पड़ी हड़ताल के ॥हूँ॥९॥ चांद

सूरज पाया खोलिया, दुनिया मांय उगियो रे उद्योत के। नेम जिनंद समोसरिया सगलो परिवार वन्दन जाय के ॥१०॥ वाणी सुनी वैरागिया लीधो यह संजम भार के। कर्म खपाय मुगति गया, कुल मे रह गया कृष्ण मुरार के आठो ही रानियां मुगति गई अन्तगड़ सूत्र में अधिकार के ॥हूं॥११॥

खेदरबीजी की ढाल

जैन धर्म दीपे घनो धरो धर्म में रंग।
ते मुझ शूरा जान जो ढाल बने मन रंग ।।१।।
रंग मांहि रस ऊपजे, कविता करो विचार ।
सुनिया सब सुख ऊपजे, आवे सभा के दाय । २।।

।। ढाल पहली ।।

रुक्मणी हो रंग महल में पोढिया छे सुख भर सेज हो लाल । दूध अनन्ता ऊफन्यो ज्यों नदियॉ में खिलक्यो नीर हो लाल।। सांची ए सखी सहेलियां दासीजी जाय जगाविया । किस विध पोढ्या नचिंत हो लाल ।। अबल सबल रसोई भरी देखो थारा घरको घाट हो लाल ।सांची०।२।। झमके से जागिया राणी रुक्मणी, आया रसोडा के माय हो लाल । आओ ए सखी सहेलियां देखो म्हारा घर को हो लाल। म्हें काई देखूं म्हारी बेनड़ी घर घर ओही ज घाट हो लाल ।सांची०।३।। मारो सवारो सखी कोई नहीं, आजे कंवारो बाल हो लाल। एक परणाऊं म्हारा वंशरी झेले म्हारा घर को भार हो लाल । पांच सौ बहुआ

म्हारे आंगणे, नहीं म्हारा घर की चिन्ता हो लाल । खावे पीवे रंग में रमे के म्हाली भरतार हो लाल ॥सांची॥४॥ बहुआं तो वदे नहीं नहीं माने मुझ की कहन हो लाल । अब ए परणाऊं म्हारी नानड़ियों जदी म्हारे मुंडे नाक हो लाल ॥सांची०।५॥ रुक्मैया की दीकरी चौसठ कला की जान हो लाल, पान नीं बहुआं मेली करी नहीं थांरा नगर में प्रमाण हो लाल ॥सांची० ६॥

दोहा—मालिया के ऊपरे बैठा महल मझार ।
रुक्मण मन में चिंतवे किसो करूं विचार ॥१॥
मान मेलूं बहुआ तणो, जे वर जालिम होय ।
फागटिया धन विवसमी दिया विरण्या दोय ॥२॥

॥ ढाल दूसरी ॥

रुक्मण राणी मन चिंतवे । राणी मन चिन्तवे, आरत अंग नहीं माय, जोई चिंतूं सोई हुएजी, मारा भाग्य तणा परमाण, वेदरवी सुं मारो मन वसियो ॥१॥ दूत सचारे राणी तेड़ियोजी, लिख दिया जी प्रमाण, वीर रुक्मांग्रज ने यों कहीजो जी राखजो म्हारो जी मान ॥वेदरवी०॥ द्वारमती से दूत चालियो जी, कुन्दनापुर में कियो प्रवेश । आगे पधारो तुम दूत जी राजाजी दियो सन्मान ॥वेदरवी०॥३॥ कौन थकी तुम आवियाजी

कुण रा छो जी रज दूत। द्वारमती से हम आवियाजी राजा कृष्ण तणा रज दूत ॥वेदरवी०॥४॥ कागज तो भेज्यो राणी रुक्मणी जी, वांच ने करो नीं विवेक। चिट्ठी चिंतामणि राजा भेलने वांची छे चिट्ठी देख ॥वेदरवी०।५॥ वांची ने राजा रीस भरियाजी वांचे छे छेला जबाब ॥ अग्नि सरीखा राजा प्रज्वल्या जी फाड नाखिया जी प्रमाण। बहिन नहीं छे म्हारी वेरणजी म्हारा वंश तणो जी खोखाल ॥वेदरवी०।७॥ आगे तो बाई ने हरि हरिया जी म्हाने तो आवे छे याद । बाई परणावत बातां कुण करी जी म्हाने आवे याद। दाज्या रे ऊपर फूलडाजी ऊपर मसले छे लूण ॥वेदरवी०।८॥ रुक्मैया उत्तम कुल रा उपना जी हरि तणी जात अहीर। के तो कुमारी म्हारा राज में जी यासु भला रे चण्डाल ॥वेदरवी०।६॥ सगाई करु तो काया परहरू जी, वाने तो नहीं देऊं म्हारी धीव। धक्का तो देकर काढ्यो दूत ने जी बिलखतो रेवेलो तिणवार ॥वेदरवी०।१०॥ कालो तो मुंडो पग लीला करोजी, टीको तो करो नी ललाट। शहर बजारां दूत आवियो जी शहरा मां दियो पहुँचाय ॥वेदरवी॥११॥ कुण्डिनपुर से तो दूत चालियो जी, द्वारमती कियो प्रवेश। आगे पधारो तुम दूत जी, रुक्मिणी दियो सन्मान ॥वेदरवी०॥१२॥ कनक सरीखी भावज है घणीजी किसी करी थांकी मनुहार। किसी

घाली म्हारं चांदडी जी वीराजी दियो प्रमाग ॥वेदरवी०॥१३॥ मोटा घरांरी माता चांदडी जी म्हांसु तो उठाई न जाय। गाडा मे आवे थांकी चांदडी जी ऊँटां मां आवे प्रमाण ॥वेदरवी०॥१४॥ वधाई करो नी आयो जीवतो जी, थाई थां की भावज री मनुहार। भोजन देवो नी म्हारा मातजी भूखा मरतां रा जावे प्राण ॥वेदरवी०॥१५॥ रुक्मण राणी मन चिंतवेजी आरत अंग न माय। ठंडो तो शीतल घाल्यो वायरोजी चेत किया तिन वार ॥वेदरवी०॥१६॥

दोहा–रूकमणि पंडित तेडियो, वेदरवी के काज।
ओ पण्डित को कर होवसी परण्यो राजकुमार॥
वेदरवी बुद्धि आगली चौसठ कला की जान।
भाग भलो सो परणसी वर होसी प्रधान॥

॥ ढाल तीसरी ॥

मां जी पूरब दिशा उग्गो भान जी, वे तो आया प्रद्युम्न कुमारजी। वे तो कर जोड़ी ने ऊभा रह्याजी ॥१॥ मां जी आज विलखानी तुम काय जी, म्हाने लागी सभा मां वार जी। म्हारी माता का वचन हृदय धरुंजी म्हारी जननी का वचन हृदय धरुंजी ॥२॥ ये तो आया शाम्ब कुमारजी, यह तो बहोत्तर कला रा निधानजी। वे तो कर जोड़ी ने ऊभा रह्याजी ॥३॥ मांजी

आज बिलखानी तुम काय जी, थाने कृष्ण सरीखा भरतार जी माता कोनीजी चिंता कुण करी ॥४॥ मां जी कांई थांसु रूठा नारायणजी, कांइ थांकी वहुआ लोपी कारजी। माता सौत सहेलियां थां से कुण लड़ी ॥५॥ बच्चा नहीं म्हांसे रूठा नारायणजी, नहीं म्हारी वहुआ लोपी कारजी। बच्चा सौत सहेलियां म्हांसे भली ॥६॥ मैं तो हाथां ही कियो उद्वेगजी, नहीं फल्यो मन को संदेहजी। म्हारा वीरा का वचन हिये चुभे ॥७॥ मां जी आफत परी ए निवारजी, थे तो हर्ष धरोनी हियां मांय जी। म्हें तो छल कर लावां कुंवरी वेदरवी, माता मांग कर लावां कुंवरी वेदरवी ॥८॥ मां जी जद थांका बालक जान जो, म्हें तो गालां रूक्मैया को मानजी। माता कहो तो कुण्डिनपुर शहर खड़ो करूं, माता कहो तो सुंधी ऊंधी करूं ॥९॥ मांजी याचकिया बन जाय जी, म्हें तो भरी सभा में गायजी। माता छल कर लावां कुंअरी वेदरवी माता मांग कर लावां कुंवरी वेदरवी ॥१०॥

दोहा–देवो सो लेना पड़े, थे छो बालकुमार।
थें तो ऊधम मांड सो, म्हारा भाई ने आल न आय॥१॥
बन्धु दोनों सारखा एक तणो उणियार।
द्वारामती से चालिया, हाथां ली भवि आण॥२॥

॥ ढाल चौथी ॥

कुन्दनापुर के गोरवे, बागां किया जी बनाव। कंठे जी सोभे सरस्वती, गावे रुप रसाल। आयारे छल-बाजिया ॥१॥ आया दरबार खडा रह्या, भरी सभा के जी मांय। राय सिंहासन विराजिया खोले राजकुमार ॥आया रे०॥२॥ रायकुंवरी इम वीनवे सुन सुन मोरी जी मांय। देव बोले विरदावली कहता नहीं आवे पार ॥आया रे०॥३॥ रुप घणोजी रलियामणो, दीसे देव सुचन्द। तेड़ो जी आयो मांहिलो, राज गया राजलोक ॥आया रे०॥४॥ सभा सारी बिखर गई, दातार दीसे नहीं कोय। नुगरा ठाकुर ने सेवतां हाथ पडियो नही कोय ॥आया रे०॥५॥ रायकुंवरी यो वीनवे, बोलो बोल विचार। कौन थकी तुम आविया कांई देखन काज॥ आया रे०॥६॥ सुर लोक से आविया, इह लोक देखन काज। द्वारामती का वासिया जोओ जादवां की जोड़ ॥७॥

दोहा नैना नैन मिलाविया, अब मोय आयो संतोष।
वातां सो विगतां करी, अब मत पड़ो वियोग ॥१॥

॥ ढालपांचवो ॥

डेरे तो चालो आपणे, तहां करो विश्राम हो लाल।

बैठो नी आछे ढोलिये, थाकां उभारा दुखे छे पावं हो लाल। भाग भला जी वर पाविया ॥१॥ राय कुंवरी यो वीनवे, थे परा मत जाजो आज हो लाल। लो नी लाखीणी मूंदडी, करो नी जादवां तणो वखाण हो लाल ॥भाग०।२॥ भूवाजी दूत पठाविया फाड डाल्या प्रमाण हो लाल। बावाजी म्हारा हठ चढिया नहीं परणाई मोय हो लाल ॥भाग०।३॥ खुशी तुम्हारा बाप की, वठे उणाईत नहीं कोय हो लाल। पांच सौ बहुआं थांरे आंगणे जाने देवतणा सुख जान हो लाल ॥भाग० ४॥ शाम्व कहे सुनो वेदरवी, राखूं वड़ेरी राज हो लाल। कूंच्यां तो सौंपूं भडार की राजा कृष्ण तणा भंडार हो लाल ॥भाग०।५॥ किसाक थांका कुंवरजी, किण रूप किण उणियार हो लाल। म वर वरसूं जादवां राजा कृष्ण तणा अंग जात हो लाल ॥भाग०।६॥ इन्द्र सरीखी उपमा, इण रूप इण उणिहार हो लाल। कृष्णजी कुल को दीवलो प्रद्युम्नकुमार सुजान हो लाल ॥भाग०।७। बात सांची कर मानजो जाय कहिजो समाचार हो लाल। मैं वर वरसुं जादवां नहीं तो तजूं म्हारा प्राण हो लाल ॥८॥ हाथी जी छूट्या पाटवी मची भगदड हो लाल। सत्रंजी औंधी करी हाटां मां पड गई हडनाल हो लाल ॥भाग०।६॥ राजाजी

चौकी संचरिया माथे घाले टाल हो लाल। आय दरबार खड़ा रह्या छडीदार बुलाय हो लाल ॥भाग०।१०॥ पहलो जी बीडो संचरयो कोई है सभा में शूरवीर हो लाल। जो गजदंत वश करे ज्याने देऊं आधो राज हो लाल ॥भाग०।११॥ दूजो जी बीडो संचरयो कोई सभा में शूरवीर हो लाल। जो गज दन्त वश करे ज्यांने दे परणाऊं राजकुमारी हो लाल ॥भाग० ॥१२॥ तीजो जी बीडो संचरयो झेल्यो प्रद्युम्न कुमार हो लाल। बुद्धिप्रमाणे गज वश कियो आय ने बांध्यो ठाण हो लाल ॥भाग०॥१३॥ मॉगो मॉगो रे तुम डूमडा मैं तुम तूठ्यो आज हो लाल; अन्न धन लक्ष्मी सम्पदा देऊं म्हारो आधो राज हो लाल ॥भाग०॥१४॥ अन्न धन लक्ष्मी म्हारे छे घणी म्हारे बापतणो प्रसाद हो लाल। एक उणायत तो म्हारे छे घणी म्हारे रोटियां पोवण ने नही नार हो लाल ॥भाग०॥१५॥ खर्च घनेरो आपसां करो तुमारो व्याव हो लाल। एकजी वरतां दो वरो जोवो जोड़ विचार हो लाल। भाग०।१६॥ ए लोगो की दीकरियॉ मैं नही परणां मोटा राव हो लाल। आगी अपूठी कांई करो देवो थांकी राजकुमारी हो लाल ॥भाग०॥१७॥ फिट फिट रे मूरख डूमडा, ऐसी विचारी केम हो लाल। जे थारा मन में इसी होती कहतो मुझ ने पहल हो लाल

वचन उत्रण थाय हो लाल। सातवें तेडे आविया आया घणे रे गाढ हो लाल ॥भाग०॥३७॥ मांगो मांगो रे डूमडा, मैं तुम तूठ्यो आज हो लाल। अन्न धन लक्ष्मी सम्पदा देऊँ म्हारी राजकुमारी हो लाल ॥भाग०॥३८॥ रांधे पोवे पीसे नहीं, नहीं म्हारे गावे गीत हो लाल। म्हारी खिदमत कुण करे ये छे अति सुकुमाल हो लाल ॥भाग०॥३९॥

दोहा—कुंवर दीन्ही डूमने हुई अचंभे वात।
कोई रोवे कोई हंसे कोई को मन उदास ॥१॥

॥ ढाल छठो ॥

राजा रुक्माग्रज जी आरत अंगोजी, राजा हाथ घसे छे जी दाह जल उठेजी। आपनी वेदरवीने दीन्ही याचकां, आपनी सुकुमाला ने दीधी याचकां ॥१॥ मैं तो कियो रे अछेरोजी, पंचा मं से टलियोजी सोच न सोच्यो पाछलो ॥२॥ अरलोगां नो दिवलोजी पर लोगां ने दीन्हो, कुंवरी बिना सूना मंदिर मालिया जी ॥३॥ अति बाजा बाजेजी झालर के झनकेजी। आज शहर में उत्सव कुण करेजी ॥४॥ राजा खबर करावेजी, सगलो शहर हिरावेजी। चाकर तो मेलियाजी नगरी के बारणेजी ॥५॥ वेदरवी बोलीजी, घूंघट ने खोलीजी, आपो प्रकाशो प्रीतम आपको जी ॥६॥ जाजम बिछवाईजी, बैठा दोनों ही भाईजी ॥

मूंडा तो आगे याचक ओलखियाजी ॥७॥ कसुमल पागांजी, केसरिया जामोजी । कंवर विराजेजी हरिया बाग मे जी ॥८॥म्हाने किया रे चंडोलोजी.ज्यारी परणिया छां वालोजी,जाय रुक्माग्रज आगे यों कहीजो जी । मुजरो हमारो हितकर मानजो जी ॥९॥ चाकर पाछा फिरियाजी, जाय पायज पडियाजी,आपनी वेदरवी ने परणी यादवांजी, आपनी सकुमाला ने परणी यांदवाजी ॥१०॥ राजा ढसमसियाजी, महला में सु उतरियाजी राजा रुक्माग्रज सामां पधारियाजी ॥११॥ दूर आवत दीठाजी म्हाने लागे छे मीठाजी । प्रद्युम्नकुमारजी सामा पधारियाजी ॥१२॥ राजा कंठ लगायाजी, वापरी शीतलाईजी । वाला भाणेज जवाई चिर जीवजो जी, ॥१३॥ राजा रुक्माग्रजजी,आयो अंग आनंदोजी कनकश्रीजी मांडव सूं कियाजी॥१४॥तुम पाछा पधारोजी,थाने फेरुं परणाऊ जी । डेरा दिला दूं हरिया बाग में जी। १५॥सोना का तोरणजी, रूपा का तोरणजी चांद सूरज का ही मडप छवियाजी ॥१६। वरने उरा ही बुलाओजी,हथलेवो जुडाओजी,वरने पहलो फेरोजी, वरने दूजो फेरोजी, वरने चोथो फेरोजी, साला वृद्धिचंदजी गुड़ ढावियाजी ॥१७॥ रत्ना को कटोरोजी, नगीना वालाजी, देख कटोरोजी कुंवर खुशी हुआजी ॥१८॥ सगलो शहर बुलाओजी, हथलेवो छुडा- ओजी, क्रोड कंचन का राजा ढगला करियाजी ॥१९॥

कुंवर मन मांहिं हरखियाजी, महलां में परवरियाजी। हंस हंस राणियाँ दे छे ओलंभाजी ॥२०॥ वृद्धिचंदजी का मालियाजी ज्यां मे दोय दोय जालियांजी। अधबीचे खेलेजी कामिनी सुभटाजी ॥२१॥ म्हां की समय पर जी म्हें तो जाहिर देख्याजी थांकी समयपर राखियां थेंई देखलोजी ॥२२॥ रत्नां रो कटोरोजी ज्यांमें मंहदी घोलोजी। सोहन थाल हीरा भरियोजी ॥२३॥ दूर आवता दीठाजी, म्हाने लागे छे मीठाजी, छेल छबीली राणियां कुण आवतीजी ॥२४॥ वृद्धिचंदजी की राणियांजी, दोनो पटराणियांजी। एमां तो ओछी अधिकी कोई नहीं जी ॥२५॥ इकट्ठी बुलाजो जी साथे वतलाजो जी। एने तो दोनों बराबर जानजो जी ॥२६॥ तुम आगा पधारो जी, म्हाने मॅहदी लगाओ जी। मॅहदी मिस राणिया हॅसे हंसावे जी ॥२७॥ म्हांका ननद बाईजी, वे तो रूप रूपालाजी। थे साला ठगबाजी मांड शुं कियो जी ॥२८॥ थांका ननदल बाईजी, म्हें तो घणा ही निवाज्या जी। गोडे क्यों नहीं बैठ्या थांकी ननद के जी ॥२९॥ राण्यां मन मांहि हरख्याजी नन्दोई नैना निरख्याजी। बलिहारी जाऊं ओ सासूजी थांकी कूंख ने जी ॥३०॥ तुम भला ही पधारिया जी, म्हांके मन भायाजी। आज तो गजजी धरती दल चढिया जी ॥३१॥ रत्नां रा कांकणजी,

हीरा का कांकणजी । मोत्यां की लडिया दीन्ही चंचावली जी ॥२२॥ मलकंता हाथी जी, घुडला घूमन्ताजी । सांजती सजवाल्या का बाजे घूंघराजी ॥२३॥ बेरडला भांडजी संपूर्ण भरियाजी । ऊपर कलश रत्ना जडियाजी । ऊपर कलश मोत्यां जडियाजी ॥२४॥ राजा मन मां हरखयाजी, बागां मे परवरिया जी, आंसू तो ढारे राजा प्रेम का जी ॥२५॥

दोहा-वर वरसावे मांडवा, सोनैया की धार ।
याचक ले ले ऊरग देवे अन्त घनेरो दान ॥१॥
सीखज दीनी अति घनी, ननदल ने भाभी सीख ।
केइक हिरदे राखजो, करजो मन मती रीस ॥२॥

॥ ढाल सातवीं ॥

बाईजी सासूजी को काढज्यो घूंघटो, सुसराजी की राखजो लाज । वेदरवी चाल्या श्रो सजन सासरे ॥१॥ बाईजी देवराणी जेठाण्यां हिल मिल चाल जो, देवर जेठा से हरकत त्याग वेदरवी० ॥२॥ बाईजी लोडा देवरजी ने जानजो वीर ज्यूं, ननदल या ने वहिन सरीखी जान ॥वेदरवी०॥३॥ बाई जी सासूजी ने दीजोजी साडी सावटू, सुसराजी ने सहु सिरपाव ॥वे०॥४॥ बाईजी देवर जेठान्यां ने दीजो चूंदड्यां, ननदल को राखजो लाड़ । कोया जीजी काजल घालजो, हिंगलू की

टीको दीजो लिलाट ॥वे०॥५॥ बाईजी सौत सहेल्यां हिलमिल चालजो, जीमण तो जीमजो एकण साथ ॥वे०॥६॥ बाईजी आया गया ने दीजो कापडोजी नगरी में लीलडा नारेल ॥वे०॥७॥ गोत्र कुटम्ब में दीजो कांचली, आपणा मोटा कुल की यही मरजाद ॥वे०॥८॥ बाई जी कोई तो कहेला मांने कूतरा, कोई देवेला म्हाने गाल। रीस अहंकार करजो मती ज्यां ने हंस हंस लीजो बतलाय ॥वे०॥९॥

॥ ढाल आठवी ॥

वधावो हरजी आपियोजी, हर राजा डोढयां के मांयजी। प्रद्युम्नकुमार खोला लियांजी दिया टीका वलि हारजी ॥१॥ पगां लगावत राणी रुक्मिणीजी, लिया छे कंठ लगायजी। कूंचियाँ तो सौंपी भंडार की जो ॥२॥ ऐसे जहाँ रसोवडा जी भोजन बहुआं के हाथ जी। रूक्मिणी हुआ छे नचितड़ाजी ॥३॥ सांझ पड़ी दिन आथम्योजी कामण पियाजी के साथ जी, लेवे छे सुख भर नींद जी ॥४॥ पिया थां आया किम सरेजी थां के छे बहु परिवारजी। जाओ सगला ने संतोष देवोजी ॥५॥ हाथ जोड़ी ने अरजी करुँजी मानो पियाजी म्हारी वात जी। म्हांका महला में पगलिया क्यों करियाजी पिया थें परण्या नवरंगी नार जी ॥६॥ वे

वड़ा थे नानडाजी वेदरवी बुद्धिवंती नारजी, वे ने वडा कर जानजो जी ॥७॥ हाथ जोड़ी ने अरजी करुंजी मानो सहेलियां मारी वातजी। चालो वेदरवीजी के पाय पड़ां जी ॥८॥ राग गलीचा ढालियाजी दूर पसारिया छे पांव जी। वेंदरवी विनय सांचवियोजी ॥९॥ हुक्म यही वाई कत को जी, म्हे लागरयां थांके पांव जी। थाने वड़ा कर जानसांजी ॥१०॥ थे वड़ा म्हें तो नानड़ा जी म्हें थांकी चरणां की दासजी। दासीजी कही वतलावजोजी ॥११॥ खोली जमदाणी काढिया लूगडा जी, घाघरा कांचली सूंघा वेशजी। ऊपर मेली वहुरंग चूंदडिया जी ॥१२॥ हाथ जोड़ी ने अर्जी करुंजी मानो सहेलियां म्हारी वातजी। चालो सत्य-भामाजी के पांव पडांजी ॥१३। सत्य भामाजी सिंहासन विराजियाजी आवत देख्यो सहेलियां रो साथ जी। जाओ ए दास्यां निगाह करोजी ॥१४॥ रूक्मिणी नंदन परणियाजी रुक्माग्रज की राजकुमारीजी वेदरवी बुद्धि आगलाजी ॥१५॥ पगां लगावत राणी सत्यभामाजी निरखत निरखत पहरियो वेशजी। वहु तो आई मोटां वंश की ॥१६॥ हाथ जोड़ी ने अरजी करुंजी मानो सासू जी म्हारी वात जी। म्हाने तो खोला मेली आपके जी, म्हाने आप अवेरजो जी ॥ म्हाने तो सगा कर जान जो जी ॥१७॥ हाथ जोड़ी ने अरजी करुंजी मानो

सासूजी म्हारी वात जी । खीचडो वठे ही आरोगजो जी ॥१८॥ देहली नहीं देखी वाई रुक्मिणी की जी खीचड़ो किसो ए स्वादजी । जाओ थे सासूजी पूछ जो जी ॥१९॥ हाथ जोड़ी ने अरजी करुंजी मानी सासूजी म्हारी वात । सत्यभामाजी ने नोतजो जी ।२०॥ सत्यभामाजी बहु आकरा जी वाको तप तेज सह्यो नहीं जाय जी वा ने तो सिंह को ओपमा जी (म्हा ने तो नहार की ओपमाजी) ॥२१॥ ए सेजा ए रसोवडा जी भोजन बहू थां के हाथ जी । मैं तो बहुत राजी हुआ जी, मैं तो बहुत खुशी हुआ जो । २२॥ तेसठ बासठ सारिया सारणाजी चौसठ मेल्यां वगारजी । पोली तो पोई नौगजी जी ॥२३॥ पाटो तो मेलियो नवखंडजी सामी तो गादी बिछायजी । प्याला तो मेल्या भली भांति का जी ॥२४॥ सत्यभामाजी ने रुक्मिणीजी जाम्बवती शाम्ब जी की मांय जी । आठ पटराण्यां श्री कृष्णजी की जीमण तो जीमे छे एकण थाल जी । बहू तो आई मोटा वंश की जी,रुक्मिणी थांका भाग जी । बहू तो आई मोटा कुल वंश की जी॥२५॥बेटा पोता सहू आपका जी सत्यभामाजी थांकां भाग जी । बहू तो आई मोटा वंश की जी ॥२६॥ श्री नेम जिनन्द पधारिया जी आठो वंदन जाय जी । वाणी सुणी ने वैरागियाजी दीन्ही समकित की गाढी नींवजी । श्री नेम जिनन्द समोसरियाजी ।२७॥

श्री दशवैकालिक सूत्र की ढालें

॥ ढाल पहली ॥

धर्म मंगल महिमानिलो धर्म समो नहीं कोय। धर्म थकी नमं देवता, धर्मे शिवसुख होय ॥धर्म०॥१॥ जीव दया नित्य पालिये, संयम सतरे प्रकार। बारह भेदे तप तपे धर्म तणो ए सार ॥धर्म०॥२॥ ज्यों तरुवरना फूल थी भ्रमरो रस ले जाय। तिम संतोषे साधु आत्मा फूल ने पीडा न थाय ॥धर्म०॥३॥ इण विध विचरे गौचरी, लेवे सूजतो आहार। ऊंच नीच मध्यम कुले, धन २ ते अणगार ॥धर्म०॥४॥ मुनिवर मधुकर सम कह्या, नहीं तृष्णा नहीं लोभ। लाधो भाडो देवे देहने, अणलाधे संतोष ॥धर्म०॥५॥ घणा घरां री गौचरी, थोडो २ लेवे आहार। पांचों इन्द्रिय वस करे, सफल करे अवतार ॥धर्म०॥६॥ महाव्रत पाले निरमला, टाले सगलाई दोष। देवलोक निश्चै खरा, सूरत लागी ज्यांरी मोक्ष ॥धर्म०॥७॥ ईर्या जोगने चालणो, भाषा बोल विचार। बाइस परीसह जीतणा, संजम खांडारी धार, ॥धर्म०॥८॥ धन सोरादेवी मातजी, ध्यायो निरमल ध्यान। गज होदे

बैठा थकां, पहुँचा मोक्ष निधान ॥धर्म०॥६॥ आदेसरजी रा दीकरा, भरतादिक सो पूत । इणभव मुक्ति सिधाविया कर करणी करतूत ॥धर्म०॥१०॥ आदेस्वरजीरी दीकरियां ब्राह्मी ने सुंदरी दोय । तपकर काया सोखवी, मुक्ति गई सुध होय ॥धर्म०॥११॥ बाहुबलजीरो पोतरो, श्री श्रेयांस कुमार । इक्षु रस बहिराविियो, भावे सूजतो आहार ॥धर्म०॥१२॥ खाजा लाडू ने सुंखडी, पांच विगय परिहार । वीर जिनंद बखाणियो, धन धन्नो अणगार ॥धर्म०॥१३॥ अध्ययन पहले द्रुम पुप्फिया, सखरा अर्थ विचार । पुन्य कलश शिष्य जेतसी, धर्मे जय जयकार ॥धर्म०॥१४॥ इति॥

॥ ढाल दूसरो ॥

(कपूर होवे अति उजलोरे ॥ए देशी॥)दीक्षा दोहिली आदरीजी, काम भोग फल छोड । संकल्पथी दुख पग-पगेजी वैरागे मन मोड ॥१॥ मुनिसर धन २ ते अणगार भोग तजी जोग आदरेजी तेहनी हुं बलिहार॥मुनी० टेर॥ मनवाले भूल चूकतो जी, न करे ढील लिगार । जाणे नको जग केहनोजी, कुण हुं ए कुण नार ॥मु०॥२। करे आतापना आकरी जी,कोमल मतकर देह । राग द्वेष तज पाडुआजी, जिम सुख पावे अछेह ॥मु०॥३॥ अग्नि कुंड जलते पडेजी, अंगधन कुल सांप । वमियो विस न

चंछे वलीजी तिम कुल अपणो चाप ॥मु०॥४। धिग २ तुझ जीतव मणीजी, वंछे वमियो आहार। जीतवथी मरणो भलोजी, नहिं तुझ लाज लिगार ॥मु०॥५॥ नारी सारी पारकीजी, देखी भ्रम में भूल। वाय झकोल्यो तरु पडेजी, अथिर हुमी तिम डूल ॥मु०॥६॥ जिम हाथी अंकुश वसेजी, थिरठाम आवे तेम। राजमती सती चूजव्योजी, ठाम आयो रह नेम ॥मु०॥७॥ अध्ययन सामण्य पुव्विवयाजी, दूजे एह विचार। पुन कलश शिष्य जेतसीजी, प्रणमे सूत्र सुखकार ॥मु०॥८।

॥ ढाल तीसरी ॥

(चेलाजीरे आइ मन मांय॥ए देशी॥)सुधा साधु निर्ग्रंथ साधे मुक्तिनो पथ,आतम संवरयो रे संवर आदरयो ए॥१॥ दूषण टाले सदीव,तेहने एहवी सीख। वीर जिनवर कहेए, मुनिवर सरदहे ए ॥२॥ उदेसिक अदभूत, क्रत गड लीधुं मूल नित पिंड जाणियो ए, सामो आणीयोए ॥३॥ न करे राई-भात, न जीमे गृहिने पात। राय पिंडनां करेए, सेज्यांतर परहरे ए ॥४॥ न राखे सन्निहिराय, दानशाला नहीं जाय। वाय न विंजणोए, रंगन रिंजणोए ॥५॥ चोवा चंनण चंपेल तन न लगावे तेल। नहीं जोवे आरसीए ते गुरु तारसीए ॥६॥ न खेले पासा सार, मुख न कहे मार मार। छत्र सिरना धरेए, गृहि सग

परहरेए ॥७॥ आदरे तीन रतन, तेहना करे जतन । तिन बोल वरजणाए, अग्न जल अंगनाए । ८॥ पीढा खाट पलंग, तजे तिगिच्छा अंग । जूतिन पायतलेए, जीवदया पलेए ॥९॥ मूलादि कंद मूल, परहरे सचित फल फूल । तजे तिम सेलडीए, लूण धूपेणावलीए ॥१०॥ वमन विरेचन कर्म, करीने गुमावे धर्म । दांत दातण घसिए नहिं न लगाडे मसीए ॥११॥ नहीं पेहरे हिरचीर, नही करे सोभ शरीर पीठी न मांजणोए, आंख न आंजणोए॥१२॥ सूत्र में बावन बोल, वरजे साधु अमोल । तप कीरिया करीए, पोहचे शिव पुरीए ॥१३॥ अध्ययन ए खुडीयार नामे तीजो सार । अर्थ अनेक छे ए, जेतसी मन वसेए ॥१४॥

॥ ढाल चौथी ॥

श्री महावीर भाखे एम सुण २ सुधर्म तेम स्वामी धर्मा उपदेशियोजी चोथो अध्ययन छै जीवणीजी हो मुनिवर चौथो अध्ययन छे जीवणीजी ॥१॥ पृथ्वी पाणी तेउ वाय, वनसपति तस जाणियेजी ॥जिहो०॥२॥ ए छै जीवनिकाय हिंसा टालिने दया पालियेजी ॥जिहो.॥३॥ महाव्रत पांच सदीवा, रात्रि भोजन टालियेजी ॥जिहो०॥४॥ त्रिविधे २ जाव जीव, गरहि निंदी पडि-कमीजी ॥जिहो०॥५॥ सीख जे पूछे दीख, किम बोलूं

चालूं रहूंजी । जिहो०॥६॥ समभावे गुरु एम जयणा बोले चालजेजी ॥जिहो०॥७॥ श्रीजिन सागन सार, प्रथम ज्ञान पछे दयाजी ॥जिहो०॥८॥ जीवाजीव विचार, जांणे अनुक्रम ज्ञानथीजी ॥जिहो०॥९॥ केवल दर्शन नाण, उपजे कर्म खपायनेजी ॥जिहो०॥१०॥ छेहडे लहे सिद्ध-ठाण, अजर अमर सुख सास्वताजी ॥जिहो०॥११॥ एह छे जीवनिकाय, सुणतां तन मन फूलसेजी ॥जिहो०॥१२॥ सरधे सुद्ध परिणाम, पुण्य कलश शिष्य जेतसीजी ॥जिहो०॥१३॥

॥ ढाल पांचवो ॥

पांचमो पिंडेसणा अज्झयण, उद्देसी न लेवे साधुरे । विधि लेई भात पाणी, करो तिरो ससार रे ॥१॥ दीक्षा पालो दोष टालो, धरो ध्यान समाधिरे । सूत्र साचा अर्थ आछा, भणे गुणे ते साध रे ॥दिक्षा० टेर॥२॥ सचरे मुनी गोचरी कुं, ग्राम नगर मझार रे । जोय चाले सुद्ध पाले, हंसे न बोले लिगाररे ॥दि०॥३॥ छकाय मरदी साधु काजे किया भोजन जेह रे । ते अने रोज को बरजे, दोषिलो आदि देइरे ॥दि०॥४॥ असण पाण खादिम सादिम, लेवे सूजतो जेहरे । असूजतो मुनि दोष जणी, कहे न कल्पे एहरे ॥दि०॥५॥ विधे लेवे विध आलोवे, विधे करे आहाररे । लूखो सूखो अरस विरस, हाले नही

लिगार रे ॥दि०॥६॥ पिंड निषेध्या कुल निषेध्या, तजो भजो निर्दोषरे । मुहादाई मुहाजीवी वेहुं जासी मोक्षरे ॥दि०॥७॥ काल जावे काल आवे, वछे नहीं लिगार रे । कालो काल समाचरे ते, वांदु साधु त्रिकालरे ॥दि०॥८॥ वस्त्र पात्र सयण आसण छे ज्ञान दे जेहरे जत्ति सती ने रोष न करे, निंदा वांदा नेहरे ॥दि०॥९॥ तपचोर वय चौरादि, हुई किलविषी देवरे । दुरगत दुर्लभ बोध जाणी, धर्म मारग सेव रे ॥दि०॥१०॥ सीख शिक्षा ग्रहण शिक्षा, ते लहे सुर लोय रे । जेतसी कहे सूत्र मांहे, बोल बहु छै जोयरे ॥दि०॥११॥

॥ ढाल छठो ॥

वैरागी निरागी हो सूत्रा साधुजी, नाण दंसण संपन्न वनवाडी में हो आय समोसरया, सुमति गुप्ति प्रति पन्न ॥वैरागी०॥१॥ मिल २ राय राजा ना मूहता ब्राह्मण क्षत्रिय लोग । साधु ने पूछे हो किम छै थांहरो, आचार गोचर जोग ॥वैरागी०॥२॥ मुनिवर भाखे मारग मोक्ष नो, कठिन आचार विशेष । हुवो न होसी ए धर्म कहे ने, मुक्ति तणो दातार ॥वैरागी०॥३॥ छै व्रत पाले हो राखे छै जीव ने, नही नाहण शृंगार । पल्यंक निषिद्या गृह भाजन तज्या, अकल्प ठाण अठार ॥वैरागी०॥४॥ तेल गुलादि सनिग्ध जे करे, ते ग्रहे नहीं

अणगार । नित तप भाखे इक भोजन करे, वरजे विषय विकार ॥वैरागी०॥५॥ वस्त्रादि राखे संयम पालवा, न धरे ममता पेम । विभूषाई बंधे कर्म चीकणा, अकल्प कल्प केम ॥वैरागी०॥६। जीव दयादि पाले पग पगे न करे रात विहार । एक काय हणतां तस थावर हण्या, लहे दुरगत अवतार ॥वैरागी०॥७॥ तप जप करणी दु:ख हरणी करे निरमल मन अहंकार । संवेगी साभागी चंद ज्यूं सोभता, पहुंचे मुक्ति मझार ॥वैरागी०॥८॥ छठो मीठो लागे मोभणी, भलो धमार्थ काम । न मे सुख पामे हो जेतसी, आतम उज्जवल परिणाम ॥वैरागी०॥९॥

॥ ढाल सातवीं ॥

साधु बूझो रे भाषा समिति विचार भाषा चार भेदे कही । साधु बूझो रे सत्य असत्य ने मिश्र असत्यामृषा चौथी कही ॥सा०॥१॥ साधु बूझो रे भाषा निरवद्य बोल पहली ने चौथी वली । साधु बूझो रे भाषा न भाखे दोय दूजी ने तीजी टली ।सा०॥२॥ साधु बूझो रे, निश्चय कठिन कठोर शंकित सावद्य संभवे । साधु बूझो रे जेहथी लागे पाप, तेहवी वाणी न संलवे ॥सा०॥३॥ साधु बूझो रे चोर ने न कहे चोर, न कहे काणो काणा भणी । साधु बूझो रे पर पीड़ा हुई जेह तेहवी वाण न बोलवी ॥सा०॥४॥ साधु बूझो रे, असाधु ने न कहे साधु, साधु

ने साधु बुलाय जे । साधु बूझो रे सुर नर तिर्यंच हार कहि कहि दोष न लगायजे ॥सा०॥५॥ साधु बूझो रे सुवक्क शुद्धि अज्झयण बोल घणा छे सातवे । साधु बूझो रे जेह थी लागे पाप न पडीश तू इण वात में । सा०॥६॥ साधु बूझो रे दस विध बोली साच अरिहंत आज्ञा छे इसी । साधु बूझो रे पुण्य कलश कहे सीस सूत्र रागे जेतसी । सा०॥७॥

॥ ढाल आठवी ॥

(प्राणी थारो आउखो टूटा ने साधो कोय नहीं रे ॥देशी)

श्री जिनवर गणधर मुनिवर ने कहे के, हिंसा टाली ने दया पाल रे । जो जो जाणे जीव छःकायना रे पग पग जयणा कर कर चाल रे ॥श्री०॥१॥ टाले तो सूक्ष्म आठ विराधना रे टाले मद मत्सर ने प्रमाद रे । तप जप खपकर काया सोखवे रे जीते तू इन्द्रिय-स्वाद रे ॥श्री०॥२॥ जरा जान करी देह जोजरी रे न वधे रोग पीडा घट मांहि रे । इन्द्रिय हीणी खीणी ना पडी रे ता लग कर कर धर्म संभाल रे ॥श्री०॥३॥ क्रोधे तो वधे विष वेलडी रे, माने तो विणसे विनय आचार रे । माया मित्राई वाले स्वर्ग में रे, लोभे तो विणसे सर्व संसार रे ॥श्री०॥४॥ जातक निमित्त स्वप्न फल जे कहे

रे यंत्र मंत्र झाडा जूडा देय रे कामण टूमण औषध केलवे रे ने किम तिरसो किम तारशे रे ॥श्री०॥५॥ भीत न जोवे नारी-चितरी रे वाले जिम लोचन रवि तेज रे हीणी खीणी वले वरसां सो तणी रे ब्रह्मचारी न धरे तिणसुं हेजरे ।श्री०॥६॥ कुकडी का बछडा डरे बिलाव थी रे, डरे ब्रह्मचारी नारी सुं तेम रे। शोभा सिणगार ने षट्रस जीमणा रे, ताल पुट जहर कहर करे एम रे ॥श्री०॥७॥ हाथ ने पांव वले छेद्या हुए रे, कान ने नासिका वलि जेहरे। ते पिण डोसी सौ वरसां तणी रे ब्रह्मचारी न धरे तिणसुं नेह रे ॥श्री०॥८॥ वसहि सय-णासण पाय-पूंछणो रे पडिलेही लीजे वारम्बार रे। धन ते मुनिवर चन्द्र सूर्य समा रे आप तिरसी औरां ने तार रे ॥श्री०॥९॥ आयार पणही नाम अध्ययन ना रे सखरा तो अर्थ विचार रे। सिद्धांत साखे भाखे जेतसी रे सूत्र थी हो जो मुझ निस्तार रे॥श्री०॥१०॥

॥ ढाल नवमी ॥

ओलगडी करी जे हो गीतारथ गुरुतणी, क्रोध मान मद छोड़ आसातना टाली नमिये पूजिये, वंदिय बे कर जोड़ ॥ओ०॥१॥ सूत्र भणावे सखरा वाचचारे पूछे पूछे अर्थ विचार। चन्द्र सूर्य ज्यों गुरु ने सेवियें, विनय कीजै वारम्बार ॥ओ०॥२॥ नवमा विणय समाहि

उज्झयण ना रे नव नवा अर्थ विचार । उद्देशे २ चौथे थेवरां वर्णव्या समाधि स्थानक चार ॥ओ०।३॥ पहली २ विनय समाधि नामे भली रे बीजी सूत्र समाधि । तीजी तप चौथी आचारनी रे ए चारों आराध॥ओ०।४॥समाधि आराधे ते शिवपद लहे रे पामे अमर पद तेव । कर जोड़ी ने वांदे जेतसी रे गुणवंत श्री गुरुदेव ॥ओ०।५॥

॥ ढाल दसवो ॥

(मुनि ऋषिदास ने धन्नो वली वखाणिये रे-देसी)

अरिहंत वचने दीक्षा आदरी रे, नार वमे सुजाण दसवां भिक्खु नाम अध्ययन ना रे वम्यो न वंछे जाण ॥अरि०।१॥ पृथ्वीकाय न खणे न खणावे रे पीवे न पिवावे नीर, जले न जलावे तेउकायने रे, वीजे न वींजावे शरीर ॥अरि०।२॥ छेदे न छेदावे हरित काय ने रे, वरजे बीज सचित्त । पचे न पचावे भोजन रसवती रे तस थावर वध चित्त ॥अरि०।३॥ राग द्वेष मद मत्सर परिहरे रे न करे वणिज व्यापार । तजे तमाशो हंसी मश्करी रे, वंछे नहीं लिगार ॥अरि०।४॥ पांच व्रत पाले पांच इन्द्रिय दमे रे, ग्राम कंटक सहे घोर, श्मशाने पडिमा पडिवजे रे सही प्रतिबंध शरीर ॥अरि०।५॥ मर्म न भाखे धर्म भाखे भलो रे वांचे सूत्र सिद्धांत । आतम ध्याने आतम उद्धरे रे पामे परम पद अन्त

॥अरि०।६॥ शय्यंभव स्वामी ए रच्यूं रे दशवैकालिक सूत्र। सखरो शुद्ध आचार प्ररूपियो साधुनो रे तार्यो मणक पूत ॥अरि०।७॥ संवत् सतरे सतडोतरे जी बीकानेर मझार। पुण्य कलश शिष्य भणे जेतसी रे गीत रच्यो टकसार ॥ अरिहंत वचने दीक्षा आदरी रे ॥

गजसुकुमार की लावणी

हो नदन यशधारी हुआ छे देवकी मांय ने ॥टेर॥ स्वर्णमयी है द्वारिका स काई इन्द्रपुरी अनुहार। गढ मठ मन्दिर मालिया स काई सुन्दर है बाजार । बाव कूप और बाग मनोहर कहां लग करुं विस्तार ॥हो०।१॥ माधव राज करे तहां स कई न्याय नीति प्रतिपाल। लोक सभी सुखिया बसे स कई वरते मंगलाचार। श्री जिन आण दीपावता स कई चाले कुल नी चाल। हो०।२॥ माताजी मन हुआ मनोरथ लघु हुलरावन बाल। गरुडध्वज आया तिण वेला कह्या सर्व अहवाल। पौषध शाला तेलो कीनो स काई, सुर प्रगट्यो तत्काल ॥हो०॥३॥ देव कहे सुन बात हमारी इच्छा पूरण थासी, भाई तुम्हारा ऐसा होसी देखगां सब सुख पासी। यौवन वय में प्राप्त हुआ पिछे साधुजी हो जासी ॥हो०। ४॥ एम कहीने गगन भई ने अमर गया निज ठाम। तीन दिवस ना अन्न पाणी ना पारिया तस पचक्खाण। मात

समीपे आय ने स काई अर्ज करे अभिराम ॥५॥ हो माताजी मोरा फिकर निवारो थारां जीवनी॥टेर॥ फिकर निवारो धीरज धारो बंधव होसी उदार। तीन भवन मन-मोहना स कई यादव-कुल सिणगार। सज्जन जन संतोष ने स कई हमने प्राण आधार॥हो माताजी०॥६। मास सवा नौ हुआ जनमिया महासुकुमार कुमार। घर घर गावे गौरड्या स कई नाटक ना झन्कार। याचक जन ने दान देवतां बोले जय जयकार ॥७॥ सब परिवार बुलायने स कई मेवा मिष्ठ जिमाया। नाम की स्थापना करणे काज काई उनको जल्दी बुलाया। गजतलुआ जिम जाण ने स काई गज-सुकुमार कहवाया ॥८॥ नानाविध तो बाल क्रीडाएँ करे कुतूहल ख्याल। ठमक ठमक नाचत है आंगण माता अंगुलि झाल। इम करता तिम आठ वर्ष ना हुआ जी लाल रसाल ।६॥ नेम जिनेश्वर समोसर्या स काई करता उग्र विहार। सहस्र अष्ट दश संग में स काई उत्तम है अणगार। खबर पड़ी जब चाल्या तत्त्वण वन्दन को नरनार ॥१०॥ हस्ती ऊपर बैठने स काई बंधव लीनो साथ। दर्शन करवा नीसर्या स काई नजर पड्या आवास। सोमल तनुजा देखने स कई भेजे अंतेउर तास ॥११॥ सचित्त द्रव्य दूरा किया स काई भेट्या श्री जगदीश। तीन प्रदक्षिणा देयने स काई चरण नमायो शीश। बार बार तो गुण किया स

काई ते छो मोटा वीर ॥१२॥ धन आप जिनेश्वर परम कृपालु किरपानाथ छो ॥टेर। भगवंत दे उपदेशना स काई अस्थिर है संसार। तन, धन यौवन कारमो स काई जातां न लागे वार इन्द्र धनुष और मेघ बिन्दु ज्यों बिजली तणो चमकार ॥१३॥ वाणी सुणी ने कुंवर [redacted] हुं लेशुं संयम भार। जिम सुख होवे तिम करो स काई नही देर नो पार। मात समीपे आयने स काई अर्ज करे तिणवार ॥१४॥ हो माताजी मोरा आज्ञा देओ तो संयम आदरुं ॥टेर॥ अनुमति दीजो मेहर करीजो लेशुं संयम भार। जन्म जरा ने मरण जीवन किया अनन्ती वार। श्री गुरुदेव चेताविया स काई कोई ढील करो न लिगार ॥हो माता०॥१५॥ वचन ताप सुं पिघलिया स काई माखन ज्यो शरीर। बादल सरखा बरस रह्या स काई भींजा सगलाई चीर। नयन सरोवर बह रह्या स काई सफेद धारा नीर। सुण पुत्र हमारा संजम लेना तो अति दुष्वार छे ॥टेर॥१६॥ बावीस परिषह जीतने स काई सरस-नीरस लेनो आहार। ते पिण मुश्किल से मिले स काई भटक्यां केई द्वार। स्नान मंजन करनो नही स काई यह छे दुष्कर कारजी ॥सुन०॥१७॥ सप्त नरक ना दुख सह्या स काई, कहूँ कठा लग बात। अशुचितणां भोजन किया स काई गर्भवास के माय। रुधिर शुक्र सागर में झूल्यो याहि

बनी छे काय जी ॥हो माताजी मोरा०॥ १८॥ पुण्य योग से पामियो स काई मनुष्य संबंधी भोग। यह तो सुख तुम भोग लो स काई पीछे लीजो जोग। करणी करी ने मेटज्यो स काई कर्म केरा रोग ॥सुन पुत्र०॥१६॥ इण सुख ऊपर काल फिरत है सदा हमारे लार। पकड़ हाथ ले जावसी स काई कौन छुडावन हार। इण से सबला जो होवे स काई करणो उणसु प्यार ॥हो माता०॥२०॥ एक दिवस नो राज करलो स काई मानो यही कहेन। अणबोलिया कुंवर रह्या स काई पाम्या सगला चैन। राजतखत पर बैठने स काई कहेन ऐसा वैण। सुणो हुक्म हमारा दीक्षा री तैयारी करो वेग सुं ॥टेर॥२१॥ तीन लाख सौनैया गिनने श्री भंडार से लावो। दोय लाख कुत्र्यापण देकर ओघा पात्र मंगावो। एक लाख नाई को देकर उसको वेग बुलावो ॥२२। वसुदेव हलधर कृष्ण आदि दे सभी कियो प्रमाण। शिविका सजकर सहस्त्र पुरुष सब लेडिया राजान। चतुरंगी सेना सजी स काई घूम रह्या मधुर निशान। ओ वैरागी बनडा दीक्षा लेवण ने हुआ तैयार ॥२३॥ महोत्सव की की रचना हुई स काई कहूं कठां लग वात। छप्पन क्रोड यादव मिल्या स काई पहुंचा बाग मझार। बावीसवां जिन देखी हरख्या निरख रह्या दीदार ॥२४॥ गहना वस्त्र उतारने स काई लोच्या सिर ना केश। श्री मुख

व्रत उच्चरी स काई पहिन्यो साधु वेश। राज्य संपदा त्याग ने स काई छोड्या राग ने द्वेष ॥२५॥ नया शिष्य यों अरज करत है, सांभलजो महाराज। किला कायम तुरत ज होवे ऐसी राह बताओ। द्वादश पडिमा जो हुए स काई हुक्म दियो फरमाय। तू सुन जीवडला बांध्या कर्म तूं ही भोगवे ॥टेर॥२६॥ सांझ समय मसाण भूमि में भिक्षुनी पडिमा धारी। वृक्ष के नीचे ध्यान धरी स काई दृष्टि अंगुष्ठे पसारी॥ सोमल सुसरा देखने स काई ऐसी दृष्टि विचारी ॥२७॥ मारी कन्या इसने ही परणी कैसा मचाया खेल। अब मैं इसको ऐसो बतलाऊं परभव की सेल। मस्तक पाल माटी की बांधी खीरा दिया मेल ।२८॥ प्रबल वेदना सही ऋषीश्वर समता रस जिम पीनो। केवल ज्ञान और केवल दर्शन छिन में प्रकट कीनो। अष्ट कर्मों का क्षय करी स काई सिद्ध नगर जिन लीनो ॥२९॥ दिन उगा गोबिन्द पधारिया दर्शन करवा काज। नवा शिष्य दीसे नहीं स्वामी कहां गये महाराज। मोक्ष महल में जाय विराज्या मिलिया इनको साज रे ॥३०॥ कौन साज देने वाला नाम बताओ मोय। नाथ कहे थाने सामो मिलसी मरण पामसी जोय। शीघ्र चाल पाछा वल्या स काई शोकातुर अति होय ॥३१॥ देख सवारी भूप की स काई सोमल धूजी देह। प्राण पाहुना हो रह्या

स काई दियो पलक में छेह। लाता कूटी शहर रुलाया लिया खाल सुं वेर ।।३२।। पूरव भव में सोकज सुते माथे रोट बधाया। लाख निन्याणु भव भव केरा यहां हीज वैर जताया। सुत सोमल और सोक जीव गजसुकुमाल कहाया ।।३३।। वसुदेव सरीखा पिताज पाया देवकी जैसी मात। हलधर नारायण सरीखा बड़ा कहलाया भ्रात। सचित पाप उदय में आया कौन हुआ तेरे साथ।।३४।। बिन करमां भुगत्या बिना स काई छुटकारा किम होय। सोह अंध जिम जाण ने स काई वृथा जनम किम खोय। हंसी हंसी करम जीव बांधियां सुखभर निद्रा सूतो रे ।।३५।। इम जाणी ने उत्तम प्राणी करो धर्म से प्रेम। सुरतरु मन वांछित फले स काई वरतें कुशल क्षेम। पूज्य महाराज अमोलकऋषि जी दियो धर्म का देश।।हो नन्दन यशधारी। ३६।।

अनाथी मुनि की सज्झाय

अरिहन्त सिद्ध नमस्कार करीने ।। आचारज उपाध्याया ।। अरथ धरमगत पराक्रम साचा ।। सीखावण से चित्त लाया के ।। राजेन्द्र श्रेणिक वन संचरियाजी ।।टेर।।१।। श्री अरिहन्तजीने समरतांजी ।। वाणी सुद्ध मन आणो । अनाथीजीरी सज्झाओ गुणता ।। आखर आणजो डासके ।।राजे।।२।। रतना का भाजन श्रेणिक राजा मगध देशना भोपालो ।। बाहर क्रीड़ा करवाने चाल्या ।। मंडीकूख वन रसालोके ।।राजे।।३।। श्रेणिक चाउदल भेरा जो कीधा ।। भई बंध भतीजा ।। अंतेवर सहु परवरीया ।। और घणा नर दूजा के ।।राजे।।४।। हय गय रथ पायदल पूरा साथ सखी सजवाडो ।। मोर मुगट सिर छत्र विराजे ।। वाजीत्र बाजे रसालोके ।।राजे।।५।। नाना प्रकार का वृक्षलता ।। बहु पंखी सुख पावे ।। पान फूलकर गहरी ओ छाया ।। वण नंदन केवावोके ।। राजे ।।६।। वृक्ष हेठे एक मुनिवर बैठा ।। राजाजी नजरया देख्या ।। सुखमाल जारी काया ओ दीसे ।। मुनिवर लागो छो मीठा के ।।राजे।।७।। काया का दुरबल जीरण वस्तर

राजाजी वात उपाई ॥ लुबा भार जारे अंगज लागे ॥ कणी भोराने भुरमाया के ।।राजे।।८।। तेयतणो रुप देखी ने राजा ॥ उत्तम संजमसामो ॥ अतुल रुप देखी विस्मय हो पाम्या ॥ राय करे छे गुण ग्रामोके ।।राजे।।६।। अहो अचरज रुप तुमारो ॥ वरण अचरज भारी ॥ आरज अचरज केरी ओ सोम्यता।।भोग सामे क्यों नी भांके।रा ।१०। तीन प्रदक्षणा देईने राजा ॥ नीचो सीस नमायो ॥ नहीं नेड़ा नहीं अलगा ओ बेठा ॥ कर जोड़ी ने वनलाय के ।।राजे।।११।। तुरणपणा माय चारित्र लीधो ॥ भोगतणा तुजकाजे ॥ एनो अरथ सामी मुजने हो भाखो ॥ केम पड्या छो जजालोके ।।राजे।।१२।। रुप जैसो सुन्दर मुख-थारो ॥ लखण बत्तीस अंग पूरा ॥ वदन जैसो थारे चंद विराजे ॥ सहस्र किरण जिम सूरा के ।।राजे।।१३।। रुप जैसो थे भूप वखाण्यो ॥ जाता नी लागे वारो।। दिन चार रमणीके । संगाते जिमतिम होई जासी छारो ।।राजे।।१४।। काया माया कारमी राजा ॥ जैसी बादल की छायां ॥ दस मस्तक लंकापति होता ॥ तो पण छिनमें खपाणा के ।।राजे।।१५।। अनाथी हुं श्रेणिक राजा ॥ नाथ नहीं सिर मारे ॥ अणुकम्पा सुख साता ओ पाम्या ॥ नहीं छे एक लगारोके ।।राजे।।१६।।इम सुणी ने हंसिया ओ राजा । मगध देशना भोपालो ॥ भगवन्ता थे मुनिवर दीखो थारे ॥ नाथ नहीं किम थासीके ।।राजे।।१७।। नाथ

तुमारो थासु श्रो भगवन्त ॥ मुनिवर भोगउ भोगो ॥ मित्र नातिला सहु परवरीया ॥ मनुष्य जन्म दोहिलो पाया के ॥राजे॥१८॥ पोते ही आप अनाथी श्रो राजा ॥ विकट कही सहु वातो ॥ आपेरा आप अनाथ थया छो ॥ किम थासी मारो नाथ के ।राजे॥१९॥ इम सुणी ने राजा श्रो श्रेणिक मन मांय पाम्या भ्रांतो ॥ वचन अपूरव ये सांभलिया । मुनिवर बोले छे तातो के ॥राजे॥२०॥ मारी रिद्धि ये नहीं जाणे । तव कहूँ सहु वातो । सगली रिद्धि मुनिवरजी के आगे, अब कहूँ सो विख्यातो के ।राजे॥२१॥ तेतीस सहस्र रथ हाथी जो घोड़ा, क्रोड़ तेतीस जोधा । पुर पाटन गांव नगर घणेरा अन्तेवर बहु थासी के ॥राजे। २२॥ हयवर गयवर और दारा हु हीरा रत्न भन्डारो । देशतणा राजा कर थापूं भक्ति करुंला बहु थारी के ॥राजे॥२३॥ अतरी रिद्धि पायो श्रो मुनिवर भोग समीप सव आया । पृथ्वी केरो नाथ कहाऊं झूठ कह्यो नी रीसिराया के ॥राजे॥२४॥ आपरो अनाथपणो तो हेतु जुगत समझाओ । जो थे अनाथे पणे थयातो, तो मुझ सहु समझाओ के ॥राजे॥२५॥ मुनिवर भाखे सुणो हो राजा, एकाग्र चित्त आणी । जो मैं अनाथपणा थया तो, तो तुझ सहूँ समझाऊं के ॥राजे॥२६॥ कोशाम्बी नामा नगरी पुराणी, पुराणी पुरभेदाणी । जहाँ वसे पिता हमारा धन खरचे बहु

जाणी के ॥राजे॥२७॥प्रथमे वय मुझ नेत्रकेरी अतुल वेदना आई। क्रोध चढ़ियो वैरी अति पाड्या, अति वेदना मुझने आई के ॥राजे॥२८॥ तीखा शस्त्र उत्कृष्टया सरीखी स वेदना आई। कोप चढ्यो वैरी अति पीड्यो एवी वेदना मुझ थाई के ॥राजे॥२९॥ करम अन्तराय सु लेई ने राजा, मस्तक रोग पीडाये। घोर दरद दारुणी वेदना जाणी इन्द्रवज्र छदकाया ॥राजे॥३०॥

तब पहुंचा मुझ पास आचारज विद्यामंत्र को जाणो। अणिया भणिया शास्त्रकुशल दवा मूलमंत्र कई जाणो के ॥राजे॥३१॥ वेदने मुझने ओखद दीवो चोपोइयां हितकारी। तो पण वेदना नहीं रे मुकाणी एवो अनाथ-पणो मारो के ॥राजे॥३२। पिता मारा धन सगरो ई देणो कियो मुझ काजे। तो पण वेदना नहीं मुकाणी एवो अनाथपणो मारो के ॥राजे॥३३॥ माता मारी श्रेणिक राजा रोती बड़ी दुखदाई। दवा उपाय कीधा घणेरा तो पण वेदना नहीं रे मुकाणो के ॥राजे॥३४॥ भाई बहन मारा श्रेणिक राजा एक उदरना जाया। मासु बड़ा छोटा जो होता तो पण वेदना नहीं रे मुकाणी के ॥राजे॥३५॥ सोवन चुड़ी नरमाओ रूड़ो शरीर सुन्दर सुखकारी। अप्सरा सरखी ने तन मन हरणी एवी मुज वर नारी के ॥राजे॥३६॥ पान संगारा न बीड़ा जो नारं

मांय कपूर की वासो प्रेम धरी ने मुझ पदमनी आपे तो पण मेली निराधारो के ॥राजे॥३७॥ असणं पाणं खाइमं साइमं गंध विलेपन जाणी। मुझ जाणन्ता अजाणन्ता वाला न भोगे नवी पाया के ॥राजे ३८॥ इन्द्र तणी इन्द्राणी ओ राजा एवी मुझ घर नारी। कितना गुण मुख दाखू ओ राजा सील गुणारी या खानो के राजे॥३९॥ मोटा जो कुलकी ने मोटा जो गुण की खोटी नहीं मन मांये। सीलतणी गजगमनी ओ वाला वाले थोड़ी नवल मीठी के ॥राजे॥४०॥ क्षण मात्र मुझ पासे थी राजा जाती नहीं रे लगारो। आंसू भरिया ने नेत्र पूराणा मुझ गा ंर सींचनी के ॥राजे॥४१॥

तब बोले या मुझ पासती राजा दुख पाया छो वारंवारो। एकाएकी वेदना जो भोगवूं यो ससार असारो के ॥राजे॥४२॥ एक वार वेदना अलगी होई जावे वेदना बहु विस्तारी। अणी भव खमतो ने इन्द्रियाँ जो दमता आरंभ तजी ने थऊ अणगारो के ॥राजे ४३॥ इम चिंतवणा करता ओ राजा निद्रा विसेक जो आई। रात वदी तहुँ दिन ज ऊगो मुझ वेदना खपाणी के॥राजे॥४४॥ ते वारे काल प्रभाते पूछी ने राजा माता पितादिक माई। खतो दंतो निर आरंभी प्रव्रज्या लहूँ सुखदायी के ॥राजे॥४५॥ अब हुं नाथ थयो छुं ओ राजा नहीं पडूं

दुर्गति कानी । रत्ता करसुं आतमा केरी त्रस थावर सहू प्राणी के ॥राजे। ४६॥

आतमा नदी वेतरणी ओ राजा, आतमा सामली रूखो । आतमा काम धेणु जो आतमा नंदन वन जेम केवावे के ॥राजे॥४७॥ आतमा करता करता ओ राजा सुख दुख दोनो ही पाया । वैरी मित्र या हीज आतमा भली भूंडी वरतावे के ।राजे॥४८॥ अनाथ पणारी वाता ओ राजा फेर सुणोनी चित्त लाई । मुनिवरजी को मारग लेई ने कायर होई मति जावो के ॥रा०॥४६॥ पाँच महाव्रत लेई ने ओ राजा, सम परिणाम नही सेवे। प्रमाद खावा वश पडिया करम बधन निश्चे घणा के ॥।रा०॥५०॥ ईर्या समिति भाषा नहीं जाणे आहार वस्त्र की मर्यादा, मात्रा थडिल की विध नहीं जाणे मार्ग जिनेश्वर को लाजे के। रा०॥५१॥ उद्देशिक मूल नित्य पिंड लेवे निमित्त दोखण भाखे। अगनी आरंभ करी विमासो कडवा फल तस जाणी के ॥रा०॥५२॥ वहुत वार जीव संजम लीधो, साधुजी नाम धरायो। खुद किरिया विन गरज न सरसी यों ही जनम गंवायो के ॥रा०॥५३॥

संजम लेई ने मुंड मुंडायो, साधुजी नाम धरायो। घणा काल लग लोच करायो पारगति नहीं पाया के

॥रा०॥५४॥ पोली मुट्ठी केरो ओ साथी ऊपर सांग देखायो। कांच तणो टुकड़ो झाली ने माणकज्यू ललचायो के। रा०॥५५॥ वकुसफल मिथ्या ओ मती सरव पंखी पेर चारो। श्री जिन दाख्यो ने श्री जिन भाख्यो श्री जिन पंथ निहार जो के ॥रा०॥५६। उद्देशी मूल नित्य पिंड लेवे निमित्त दोस न भाखे। अगनी आरंभ करी विमासे कड़त्रा फल तस जाणी के ॥रा०॥५७। कुशील्यो लिंगधारी ओ राजा रख दूजा ने संताप। ए गुण परगुण विद नहीं जाणो गातर लेई चड़काव के ।रा०॥५८॥ तालपुट एकण भव मारे, कुगुरु भव भव मारे। धरम विरोधी जीवड़ो दुख पावे अणखिल पोर वेतालो के ॥रा०। ५६। लच्चण छप्पन केरा फल कंही जे ज्रोतिष निमित्त भाखे। जंत्रमंत्र करी पेट पुरावे अंत समय मरणो नहीं जोयो के ॥रा०॥६०॥

वेरी तो एकज भव भारे कुगुरू भव भव मारे। धरम विरोधी जीवड़ो दुख पावे दया विनाकर चिलपातो के ॥रा०।६१॥ सयम लेईने वरते ओ मन मे निष्फल वरते जोगी। स्वर्ग तणा सुख खोया जो फले अणी भव जोग न भोगो के। रा०।६२॥ सतगुरु संगत कीजे ओ राजा कुगुरु तो संसार वधावे सुगुरु भव थकी तारे के॥रा०।६३॥ प्रश्न मैं तुझे पूछूं ओ मुनिवर ज्ञान विघन मैं कीधो। भोग आमंत्रण मैं तुझे कीधो खमजो मारो अपराध के

॥रा०/६४॥ कोशाम्बी थी राजगृही ओ आया, लाभ अनन्तो पाया । मगध देश ना राय समझाया सायक समकित पाया के ॥रा०।६५॥ श्रेणिक राजा समकित लीधी गोत्र तीर्थंकर बांध्यो । जीव अजीव को भेद लो लाख्यो, पुण्य पाप जाणी समझाया के ॥रा० ६६॥ तीन प्रदक्षिणा देई ने राजा राजगृही मे आया स्फटिक सिंहासन वैठी ने राजा, मन मांय कर रे विचारो के ॥रा०।६७॥ चाकर पुरुष बुलाई ने राजा एवो हुक्म चलायो । राजगृही मांहि पडह फेराया, जीव मरण नहीं पाया के ॥रा०।६८॥ संवत् अठारे ने वरस सतन्तर, सावण सुदी साखी । खेमकरण सज्झाय परूपे पजूपण दिन पक्खी के ॥रा०।६९॥



अर्जुन माली की ढाल

दोहा—सौदागर घर थी नीसर्‌या, नहीं वसति रो ठाम ।
वीच ये दलाल मिलिया नही किस विध होसी भाव ॥१॥
घर वैठां ही वांदसा, शुभ कारण सिद्ध थाय ।
केसा वीर जिनंद ने के ने वंदन जाय ।२॥

॥ ढाल पहलो ॥

जठे अर्जुनमाली आयो रे । नारी ने साथे लायो । जठे अर्जुनमाली आसी रे बंधुमती ने साथे लासी । ज्यांरी रूपमती छे नारी रे, या तो नहीं करे शील नी सारो । जठे रावण बोल्यो वाणी रे ॥ थने करूं पाटवी राणी । सीताजी वचन न मान्यो रे ॥ तूं तो भोलो दीसे छे राजा । मैं तो वंछूं नही लिगारो रे, मारो शील पालूं सिरेकारो ॥ ज्यांरा परिणाम पड्या छे लूखा रे ज्यांने मिलिया है दाद न धोखा । ज्यांरा परिणाम होता चोखा रे, देव टाले घणा रा धोखा ॥ जठे अर्जुनमाली चीयो रे, पत्थर सेवी ने काईं कियो ॥ जठे अर्जुनमाली रह्यो देखी रे, मैं तो दुख पाया विशेखी रे ॥ इण देवल मे नहीं कोई वाकी रे । म्हारी केन गंवाई म्हाकी ॥ इण

देवल में एही ज कामो रे म्हने कुण करे सलामो ॥
जब देव ने रीस ज आई रे म्हारी कान न राखी काई ॥
उठा सु मुद्गर लियो हाथो रे मारया सातां ही एकण
साथो ॥

॥ ढाल स

राजगृही नगरी अति सुन्दर माथा रे मुकुट समान अंतगड सूत्र मांहि भाख्या श्री भगवंत श्री महावीर रे भाई पुण्य तणा फल मीठा जाणो ॥१॥ तिण रे मांहि नालंदी पाडो, तिणरो घणो अधिकार रे भाई । चवदह तो चौमासा किया भगवंत श्री महावीर रे भाई ॥पुण्य०।२॥ एक क्रोड ने छासठ लाखो गांव वसे ज्यारे लार रे भाई। श्रेणिक राजा राज करे छे सुखिया वसे सहुलोक रे भाई ।।पु०।२॥ ज्यारे मुख आगल सोहे मन्त्री अभयकुमार रे भाई। एक क्रोड ने घणा क्रोडी ध्वज ज्यांरी ऋद्धिरो मान रे भाई ॥पु०।४॥ सेठ सुदर्शन वसति रे मांहि शालिभद्रजी रे समान रे भाई । सेठ सुदर्शन श्रमणोपासक धर्म करणी में रीझियो रे भाई ॥ इसडी विरिया मांहि चाल्या वंदन श्री महावीर रे ॥पु०।५॥ अर्जुन माली बाहिर उभो मुद्गर लीनो हाथ रे भाई। छह पुरुष ने एकज नारी नितरा मारे सात रे ॥पु०।६॥ पूरव भव जीव ग्वालो हुतो दान दियो निज

खीर रे तिणसुं तो अधिको पुण्य ज वधियो घाली गोभद्र घर सीर रे आई ॥पु०।७॥

॥ ढाल तीसरी ॥

हाथ जोड़ी ने इम कहे जी सांभल मोरी ज माय। आज्ञा देओ मुझ भणीजी हुँ वंदू भगवंत जाय॥ हो जननी अनुमति देवो आदेस ॥१॥ वलती माता इम कहे जी सांभल म्हारा पूत। ज्ञानी तो देखी रह्या थारा घट घट केरा भाव रे॥ जाया हूँ घर बैठ्याही ज वांद ॥२॥ वलता कुंवर इम कहे जी सांभल मोरी माय। घर बैठा वंदन करुं म्हारी जुगति नहीं छे बात हो जननी ॥३॥ वलती माता इम कह्योजी दिन रा मागे ज सात। घर वाहिर निकलवा भणी तू रखे न काढे वात रे जाया तू० ॥४॥ गांव नगर विचरता म्होरा मन का मनोरथ थाय। वली विशेखे जाणजो म्हारा समकितरा दातार हो जननी ॥५॥ शहर नगरां विचरंता म्हारो मन रह्यो हुलसाय। वलो विशेषे जाणजो म्हारा गुरु आया साक्षात हो जननी० ॥६॥ ए मन्दिर ए मालिया जी या सुकमाल ज सेज। इतरा ने छिटकाय ने तू कांई राखे मरणा री टेक रे जाया० ॥७॥ ए मंदिर ए मालिया जी मिलिया अनंती वार। दरसण दोहिला वीरना म्हारो मन रह्यो हुलसाय हो जननी० ॥८॥ निजुनिजनी माता

इम कह्योजी पुत्र न मानी वात । भर भर नयना माता झूरेजी जिम सुख हो तिम करो रे जाया वंदो वीर जिनंद ॥६॥

दोहा–वीच वजार थी निसरिया, माथे हुआ अनेक।
वीर वांदन ने चालिया खडिया एकाएक ॥१॥

॥ ढाल चौथी ॥

कोई नरनारी मन्दिर मालियाजी झांके जालियां में मुंडो घाल जी। सेठ सुदर्शन श्रावक चालिया जी वीर वांदण ने शूर वीरजी झुर झुर कायर रो हिवडो थरहरे जी ॥१॥ कोई नरनारी मंदिर मालियाजी कोई दरवाजे उभी जोयजी । कोई नरनारी मुख से इम कहेजी, चौंगा-रया जीव जायजी ॥ झुर० ॥२॥ कोई नरनारी मुख सुं इम कहेजी, यश रा तो भूखा दीसे सेठजी । खबरां तो पड़सी बाहिर नीसरया जी। होसी अर्जुनमाली सुं भेटजी ॥झुर०॥३॥ कोई नरनारी मुख सु इम कहेजी देवो इण सेठ भणी शाबाशजी । इसड़ी किरिया मे वंदन चालियाजो कीसडो उमाओ चढियो सूरजी ॥४॥ (जो जो समकित रो रस परगमेजी) नगरी तो वीचे होय होय नीसरिया जी, वन मांहि आया शूर वीरजी । अर्जुन माली नजरां देखने जी आडो तो फिरियो सामो आयजी ॥जो०॥५॥

॥ ढाल पांचवो ॥

कपडा सुं जगह पूंज ने हो ऊभा एकज ठाम । जो इण उपसर्ग सुं ऊबरूं तो देख रह्या किरतार जिनेश्वर हवे थांरो रे आधार ॥१॥ आगे व्रत जो आदरियाजी थांरे मुंडेज सार हवे व्रत रे ऊपरे वो दोय करण तीन वार ॥जिने०॥२॥ जो इण उपसर्ग सुं ऊबरूं तो लेसूं अन्न ने पाण । नही तो मुझ ने आज सुं हो जावज्जीव पच्चखाण ॥जिने०॥३॥ अर्जुनमाली उतावलो हो ऊभो नेडो ज आय । सेठ सुदर्शन ऊपर वो ऊंचो हाथ न थाय ॥जिने०॥४॥ देवता तो चलता हुआजी उभो नेडोज आय । मुद्गर न्हाकी दियो हो पडियो धरणी जाय हो ॥जिने०॥५॥

॥ ढाल छठो ॥

हाथ जोड़ी अर्जुन कहे मैं करुं सेठजी सुं हेतोजी । सेठजी इसड़ी विरिया मांही नीसरिया थे जावो छो किण ठोडो जी ॥ सेठजी अरज करुं थासुं विनतीजी ॥१॥ वलता सेठजी इम कहे, मैं वंदू भगवंत जाय हो अर्जुन धर्म आचारज म्हारा । पूरो जाणे ज्ञान हो ॥२॥ वलता अर्जुनमाली इम कहे हुं आऊं तुम्हारे साथ हो । वलता सेठजी इम कह्या जिम थांरे सुख होय हो ॥३॥ अर्जुन भव-तिथि पाकी हो भवतणी ॥ अर्जुन सेठ बेहु जणां

वांद्या भगवंत आय हो। अर्जुन दर्शन दीठा वीर जिणंद ना वांद्या बे कर जोड हो ॥अर्जुन०॥४। भगवंत देवे उपदेशना सगला रे हित आय हो। अर्जुन माली इम कहे में लेसूं संजम भार हो ॥अ०॥५॥ चलता भगवंत इम कहे जिम थारे सुख होय हो, अर्जुन विश्वास नहीं कोई काल रो। घड़ी ए घड़ी घट जाय हो ॥अ०॥६ अर्जुन मालो दीक्षा लीनी दीधी समकितरी नींव हो। स्वामी बेले जी बेले पारणा कराय देवो जावज्जीव हो ॥अ०।७॥ अर्जुन आयो बेला रो पारणो राजगृही रे मांय हो। श्री वीर समीपे आय ने श्री मुख आज्ञा दी फुरमाय हो ॥अ।८॥ राजगृही मांहि नीसर्या उठिया अवसर जोई हो। भात मिले तो पानी नहीं मिले, पाणी मिले तो नही मिले आहार हो, तो पण दृढ़ छे विशेषो हो।९। कोई फेंके भाटा ने कांकरा, कोई देवे मुख से गाल हो अर्जुन मोटी जी क्षमा आदरी रीस न करे लिगार हो ॥अ०।१०॥

॥ ढाल सातवीं ॥

मुनि अर्जुन संजम लियो, प्रभु पासे अभिग्रह कीधो हो मुनिवर हद क्षमा दिलधारी ॥१॥ जावज्जीव छठ छठ पारणा करवा संसार समुद्र ज तरवा हो ॥मुनि०।२॥ देह री ममता टाली, [illegible] करमां [illegible] जाली

हो ।।मुनि०।३। राजगृही में गोचरी सिधाया जहां कीनो छे पेली वार धायो हो ।।मुनि०।४।। छट पारणे गोचरी जावे, लोग देखी मुनि ने रीस ज लावे हो ।।मु०।५।। घर मांहि मुनिवर ने तेडे, ज्यारां पातरा में धूलज रेडे हो ।।मु०।६।। कोई एक तो मारे चपेटा, कोई नाखे मुनिवर ने हेठा हो ।।मु०।७।। कोई बाल जवान ने बूढा, मुनि ने वगण सुणावे छे कूडा हो ।।मु०।८।। कोई कहे मारिया मुझ पिता, कोई कहे पाप लागे इणरो मुख जोता हो ।।मु०।९।। कोई कहे मारी मुझ माता, कोई कहे याने डामज देवो कर ताता हो ।।१०।। कोई कहे मारिया मुझ भाई याने दीजे यमपुर पहुंचाई हो ।।११।। कोई कहे मारी मुझ भगिनी, याने देखंता उठे हिये अगनी हो ।।१२।। कोई कहे मारी मुझ नारी, याने दीजै मुख पर छारी हो ।।१३।। कोई कहे मारी मुझ बेटी, याने काढ़ो पकड़ कर घेटी हो ।।१४।। कोई कहे बेटा-बहुआ मारी, याने दीजो तीन तीन वार धिक्कारी हो ।।१५।। कोई कहे मारियो मुझ काको, याने जल्दी दूरा हांको हो ।।१६।। कोई कहे मारी मुझ सासू, याने देखंता आवे नयणां आंसू हो ।।१७।। कोई कहे मारियो सुसरो ने सालो, यारो मुख करीजे कालो हो ।।१८।। कोई करे वचन-प्रहारा, कोई घाव देवे तलवारा हो ।।१९।। कोईक तो कचरो डाले, कोईक तो पाणी हिलोले हो

॥२०॥ कोईक पत्थर फेंके रीसे, मुनि ने देखी ने दांतज पीसे हो ॥२१॥ इण करम कीधा घणा खोटा, याने कोई न देसी रोटा हो ॥२२॥ इण कारण संयम लीधो, इण वेष मुनि नो कीधो हो ।२३॥ इत्यादिक सुणी जन-वाणी, मुनि रीस नहीं दिल आणी हो ॥मु०।२४॥ सुणी ने मन में एम विचारे, मैं कीधा कर्म चंडाले हो ॥म०।२५॥ मैं मारिया मनुष्य जीव सेती, दुःख थोड़ो छे मुझने तेह थी हो ॥मु०।२६॥ हण्या मनुष्य इग्यारे सौ ने इकताली, म्हारी आतमा हुई घणी काली हो मु०।२७॥ आर्त रोद्र ध्यान निवारे मुनि धर्म शुक्ल चित्त धारे हो ॥मु०।२८॥ अन्न मिले तो नहीं मिले पाणी, पानी मिले तो नहीं मिले अन्न हो ॥मु०।२९॥ छह मास चारित्र पाली, दिया सगला पाप ने टाली हो ॥मु०।३०॥ तप करता शरीर सुखाणो, अंतगडजी में अधिकार जाणो हो ॥मु०३१॥ अर्धमास संलेखना आई, अंत समय केवल शिव पाई हो ॥मु०।३२॥ चमा सहित तप करणी, संसार समुद्र ज तरणी हो ॥मु०।३३॥ उगणीस सौ गुणतीस को सालो यह तो जोड्यो है सतढाल्यो हो ॥मु०।३४॥ तिलोकरिखजी गुरु सेवीजे यह तो नरभव सफल करीजे हो ॥मु०।३५॥ विपरीत जोड़ कोई दाखी, मिच्छामि दुक्कडं छे सब साखी हो मुनिवर हद चमा दिलधारी ॥३६॥

चार प्रत्येक बुद्ध की ढालें

चंपा नगरी अति भली हुं वारी दधिभान राय भूपाल रे हुँ वारीलाल। पद्मावती रे कूंखे उपन्या हुं वारी कर्म किया रे चंडाल रे हुं वारी लाल। करकंडुजी ने म्हारी वंदणा हु वारी ॥१॥ पहला प्रत्येक बुद्ध रे हुँ वारी लाल। करकंडु नामे राय रे हुं वारी० गीरवाणा गुण गावतां हुँ वारी समकित थावे शुद्ध रे हु ॥२॥ लादी वांसरी लाकड़ी हुं वारी थया कंचनपुरी रा राय रे हु० बाप सुं संग्राम मांडियो हु वारी साध्वीजी दिया समझाय रे हु वारी लाल ॥३॥ वृषभ रूप देखी करी हु वारी प्रतिबोध पाम्या नरेश रे हु वारी लाल। उत्तम संजम आदरिया हु वारी देवता दियो वेश रे हु वारी लाल ॥४॥ शुद्ध संयम पालता हु वारी. करता उग्र विहार रे हु वारी लाल। दोष बयालीस टालता हुं वारी लेवंता सूझतो आहार रे हु वारी० ॥५॥ तप जप कीना आकरा हु वारी लाल दीना कर्म खपाय रे हु वारी लाल। समय सुन्दर कहे साधुजी हु वारी लाल नितनित प्रणमूं पाय रे हु वारी लाल ॥६॥

॥ ढाल दूसरी ॥

नगरी कंचन पुरी रा धणीजी, जय राजा गुणवंत । न्याय नीति सु प्रजा पालताजी ॥ गुणमाला पटराणी । दुमइ राज दूजा प्रत्येक बुद्ध, गीर्वाणा गुण गावताजी समकित थावे शुद्ध ॥२॥ धरती खणंता नीसर्याजी एक मुकुट अभिराम । दूजो मुख प्रतिबोधियोजी दुमइ थयो ज्यांरो नाम ॥ दुमइ० । ३ ॥ इन्द्र ध्वजा सिणगारतांजी देखंता तृप्त न थाय । खेल्लक लोक खेले तिहांजी, महोछव मांड्यो राय ॥ दुमइ० । ४ ॥ मुकुट लेवा भणी मांडियोजी चन्द्र पद्मोतर संग्राम । तण एक राज्य खोसी लियोजी किम सुधरे ज्यांरा काम ॥ दुमई० । ५ ॥ इन्द्र ध्वजा निज पेखंताजी पिघली है मिथिला मझार । अहा शोभा कारमी ए सहु अथिर संसार ॥ दुमइ ॥ ६ ॥ समय सुंदर कहे साधुजी हो नितनित प्रणमूं पाय ॥ दुमई० । ७ ॥

॥ ढाल तीसरी ॥

नगरी कंचन पुरी रा रायम जी हो मणिरथ राज करे तिहां ॥ १ ॥ कीनो है सबलो अन्याय, जी हो जुगबाहु बंधव मारिया, मयण रेहा गई नाश जी हो तो पिण शीलज राख्यो सावतो ॥ पद्मोत्तर अरथ भूपाल

जी हो जायो है पुत्र उजाड़ मे, पड़ी रे विद्याधर रे हाथ । जी हो घुडलव तो लगया आपज हेरने त्यां थकी दीठो बाल । जी हो पुत्र तो पाल मोटो कियो शत्रु नम्या सब आय । जी हो नाम नमी राजा थापियो दियो मिथिला पुरी रो राज जी हो सहस्र अंतेवर शूरमो उपनो हे दाह ज्वर रोग । जी हो करमसु शूरो कोई नहीं इन्द्र परीक्षा लेय । जी हो ध्यान तो ध्यायो वनखंड मे ज्यां नमी ए नमो अणगार । जी हो समय सुंदर कहे साधुजी नित-नित प्रणमुं पाय ॥

॥ ढाल चौथी ॥

नगर कंपिल पुर रा राजवी मोरी सैंया ए सिंहरथ राय नरिंदो ए । एक दिन घुडला आपहरया मोरी सैंया ए गया अटवी दंडाकारो ए ॥ १ ॥ पर्वत ऊपर पेखता मोरी० सतभूमिया आवासो ए ॥ कनकमाला विद्याधरी मोरी० परण्या है प्रेम हुल्लासो ए ॥ २ ॥ मारग में आंबो फल्यो मोरी० सुगंध फल फूल पानो ए । एक मंजरी राजा ग्रही मोरी० जो मन्त्री परधानो ए ॥ ३ ॥ वलता राजा इम कह्यो मोरी० वृक्ष दिसे बिन छाया ए । अहा शोभा क्षारसी मोरी० ए सहु अथिर संसारो ए ॥ ४ ॥ वैरागी मन वालने मोरी० लीनो है संजम भारो ए । समय सुंदर कहे साधुजी मोरी० ए चौथा प्रत्येक बोधो ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचवी ॥

ए तो समकाल चारों चव्या, समकाल वो थया कुलना सिणगार । सहेल्या ए वांदूं रुडा साधुजी, ज्यांने वांद्या हो जावे भवभव रा पाप ॥ सहेल्या० । १ ॥ ए तो समकाल संयम लियो समकाल वो करता उग्र विहार ॥ सहे० । २ ॥ ए तो चारो दिशासुं चारो आविया समकाल वो यक्ष देवरा रे मांय ॥ सहे० । ३ ॥ ए तो यक्ष चमक रह्या देखने कीने आपूं वो म्हारी पुठ की बाण ॥ सहे० । ४ ॥ ए तो करकंडुजी वो तरणो राखियो काना मां सु वो खाज खिणवारे काज ॥ सहे० । ५ ॥ ए तो नग्गइ केवे माया तजी तरणो राख्यो हो तज्यो सगलो ही राज ॥ सहे० । ६ ॥ ए तो दुमई कहे निंदा मती करो, निंदा करता ओ लागे मोटको पाप ॥ सहे० । ७ ॥ ए तो नमीजी कहे निंदा नहीं हित करतां हो पामे परम आनन्द ॥ सहे० । ८ ॥ ए तो समकाल तप जप क्रिया, समकाल वो दीना कर्म खपाय ॥ सहे० । ९ ॥ ए तो समकाल केवल लियो समकाल पहुंचा मोक्ष मझार ॥ सहे० । १० ॥ ए तो उत्तराध्ययन अठारह में सूत्र कथा माय हो चारो प्रत्येक बुद्ध ॥ सहे० । ११ ॥ सवत् अठारह तैतीस में गुण गाया हो पाटनपुर शहर सहेल्यां ए वांदूं रुडा साधुजी ज्यांने वांद्या हो जावे भवभव रा पाप ॥ सहेल्या ए वांदूं रुडा साधुजी ॥ इति

भृग पुरोहित की ढाल

गुणसागर अणगार, करता, उग्र, विहार मोटा मुनिराज संयम निर्मलो पालता ए ॥१॥ आयो गरमी को काल, वाजे लूआ ने, जाल, मोटा मुनिराज, दुपहरा आयो तावडो ए ॥२॥ पड़ रही नावड़ा की भोट, सूख रह्या जीभ ने होठ, मोठा-मुनिराज पगल्या पाव उठे नहीं ए ॥३॥ वेदना थई भरपूर, मस्तक आयो शूल मोटा मुनिराज मूरछा खाई धरणी ढल्या ए । ४॥ गाय चरंता ग्वाल, मुनिवर दीठा तिणवार मोटा मुनिराज तत्क्षण नेडा आविया ए ॥५॥ छांट्यो शीतल नीर, शीतल थयो शरीर, मोटा० चेत लही ने ऋषि बोलिया ए ॥६॥ यो किम कीधो काम, गुवालिया कहे तिणठाम मोटा० छाछ पाणी वेहराविया ए ॥७॥ उलट भाव चितलाय प्रतिलाभिया ऋषिराय मोटा० चारों ही जीव संग चोपसु ए ॥८॥ मुनिवर लीधो आहार, परत कीधो संसार, मोटा० मन मांहि हर्ष पामिया घणा ए ॥६॥ पीट थी आया दोय वलि थोड़ो किम होय मोटा०

मत्सर भाव दिल आणियो ए ॥१०॥ आपां खावो नितमेव, आज ऋषि री करसां सेव, मोटा मु० ऋषि पासे छहुं जणा ए ॥११॥ ऋषि दियो उपदेश, वैराग्य भाव विशेष मोटा मु० तन धन यौवन कारमो ए ॥१२॥ जाण्यो अथिर संसार, लीधो ए संजम भार मोटा मु० समकित से सुधर्या घणा ए ॥१३॥ तपस्या विविध प्रकार पाले निरतिचार मोटा० अंत समय अनशन कीधो ए ॥१४॥ नलिनी गुल्म विमान, पाम्या ए देव विमान मोटा० ऋद्धि वृद्धि पाम्या घणी ए ॥१५॥ रतनचंदजी बोल्या एम, पाले शुद्ध नेम मोटा० आतम गुण उजवालिया ए ॥१६।

दोहा—देवलोक थकी देवता जाण्यो च्यवन विचार ।
पहला आया प्रतिबोधवा भृगु पुरोहित जस्सा भार ॥
ते नगरी अति दीपती देवलोक सम जान ।
भृगु पुरोहित जस्सा भारिया, जारे घणी पुत्र की चाह ॥

॥ ढाल दूसरी ॥

रंग रूपधारीओ अंबरधारीओ मुनिवर मुनिवर अंबरधारीओ तीन पछेवड़ी ॥ १ ॥ पातर रंगियाओ लोटवा चंगियाओ मुनिवर मुनिवर ऊंचो नी जोवेओ मुख झीणा बोलताजी ॥ २ ॥ मस्तक लोच्याओ बाहियां ओघा ओ मुनिवर ईर्या जोई ने ओ पग पूंजी धरेजी

॥ ३ ॥ राय आंगण आयाओ मारे मन भायाओ मुनिवर मुनिवर पावन कीधो ओ धन धन तुम भणीजी ॥ ४ ॥ पातर पूर्याओ वे कस चूर्याओ मुनिवर २ दान सुपातर मन हुलस्यो घणांजी ॥ ५ ॥ खटरस जोड्याओ वेल रस सच्या हो मुनिवर २ सात पीढ़ी लग धन छे घर मांहिजी ॥ ६ ॥ माणक जडिया हो राजाजी दीधाओ मुनिवर २ रतन जड़त रा मारे घर आंगणाजी ॥ ७ ॥ पुत्र नहीं कोई खोरियाओ, नहीं कोई झोरियाओ मुनिवर मुनिवर सात पीढी लग धन छे ओयरा मांहिजी ॥ ८ ॥ पूछे पाड पडोसिण ओ, ब्राह्म जोषीओ मुनिवर २ अवधि ज्ञानी ओ थे मुझने कहो जी ॥ ९ ॥ पुत्र होसी ए बाई थारे, उत्तम प्राणी ए बाई थारे दीक्षा जो लेसी लघुवय में जी ॥ १० ॥ एंसो मती भाखोंओ निश्चय जाण्यो ओ मुनिवर २ इतरो कही ने देवलोका गयाजी ॥ ११ ॥

दोहा—वलता ऋषि इम कह गया ने जन्म्या दोनों बाल ।
भृग पुरोहित घर वधामणा जारो धन दहाडो आज ।१।
जन्म महोछत्र मांडियो ने लाहो लीधो हाथ ।
पंच धायकर पालिया ने सुख माने सुकुमार ॥२॥
निश दिन रमिया खेलिया ने लक्ष्मी लीधी लार ।
मात पिता इम चिन्तवे आपे भील पुरी में चाल ॥३॥
मात पिता मन चिन्तवे आपे भील पुरी मांहि चाल ।
जैन धरम करसा नही आपे रहसां मिथ्यात्वी रे माय ।४।

॥ ढाल तीसरी ॥

वालूडा संग न जाजो रे मारे घर वेगा आजो रे, कह्यो मारो मानी लीजो रे, जाया मारा मोय सुख दीजो रे ॥१॥टेर॥ रंग रंगीला पातरा, वारा हाथ में पंच रग्यो लोट । मुंडे बांधे मुहपत्ती वारा मन माय मोटी खोड ॥ वालूडा० ॥२॥ पांय अरवाणे संचरया रे मस्तक लुंच्या केश । ओघो तो राखे खांख मे भई मुनिवर मैला वेश । बालूडा०॥४॥ नाना तो वालक भोरवे रे गहना लेवे उतार । तीखा कतरणी पाछणा रे ऋषि राखे झोरी रे माय ॥वा ॥५॥ माथे नाखे भूरकी र तेड्या तेड्या जाय । जो थे तेड्या जावसो रे भाई निश्चय गेल्या थाय । वा०॥५॥ धर्म कथा करे धूम से रे विधि से करे रे वखाण । चन्द्र तणी वे रे मोहिया भई चुम्बक लोह पाषाण ॥वा०॥६॥ प्रीत लगावे प्रेम से रे मत कर जो विश्वास साधु रुप ज देखने भई वेगा आजो भाग ॥वा०॥७॥ इम सिखाई ने मोकल्या रे खेलो चंदन चौक । बाग बाडी चौगान मे जठे खेले बहुला लोक ॥वा०॥८॥ घर घर करता गोचरी रे लेता निर्दोष आहार । मारग भूल्या साधुजी भई आया ए अटवी रे मांय रे । वंधव-कुंश आया रे भई आपे घर किम चालां रे ॥टेर॥९॥ थर हर लागा धूजवा रे कंपन लागो शरीर-।

तात कह्या जे आविया भई अब किम करसां एम रे ।।बंधव।।१०।। कायर नर नासी गया रे शूरा रह्या निज ठाम । तात कह्या जे आविया भई अब किम करसां एम रे ।।बंधव० ११।। दौड चढ्या वृत्त उपरे रे हिये न मावे सांस । केडे तो आया आपणो भई कैसे जीवन की आसो रे ।।बधव० १२।। जगह तो जोवे साधुजी रे आया तरुवर हेठ । ईर्यावही पडिकमणो भई मिच्छामि दुकडो देय ।।ब०।।१३।। झोरी तो मेले पूंजने रे मेले निर्दोषण आहार । सरस नीरस नी गोचरी भई देखे दोनों कुमार रे ।।ब०।।१४।। रूप वरण एवो नहीं रे स्वाद नहीं तिण माय । पारस जूं पची रह्या भई ज्ञान घणो इण पासो रे ।।ब०।।१५।। कीड़ी ने दुभे नहीं रे बालक मारे केम । मोह थकी रुलाविया लघु बोले एवा वेणो रे ।।ब०।।१६।। जातिस्मरण उपनो रे आया तरुवर हेठ । मात पिता ने पूछ ने स्वामी लेसां संजम भारो रे । साधुजी भला ही पधारिया हो के सद्गुरु भला ही पधारिया हो ।।१७।। जिम सुख होवे तिम करो रे भगवंत दियो फरमाय । थोड़ा मे नफो घणो भाई उत्तम देसी दानो रे । साधुजी भला ही पधारिया रे के ज्ञानी गुरु भला ही पधारिया रे ।

॥ ढाल चौथी ॥

महलां में बैठी ओ रानी कमलावती, मारग में,

उड़ रही झीनी रेत। देखे तमासो इक्षुकार नगर नो कौतुक उपनों मन मांय। सांभल ए दासी आज नगर में हलचल घणी ॥१॥ के तो प्रधान ए दासी दंड लियो, के कोई राजाजी लूट्यो ग्राम। के कणी को गाड्यो धन जी नीसर्यो गाडा री हेला ठामो ठाम सांभल० ॥२॥ नहीं तो प्रधान ओ बाई जी दंड लीनो, नही कोई राजाजी लूट्यो ग्राम। भृगु पुरोहित ऋद्धि तज नीसर्यो राजा रे धन लावण को चाव। सांभल हो बाईसा हुकम करो तो गाड़ा यहां ही ढोरा ॥३॥ अतरो सुणी ने राणी माथो धुणियो राजा रे कमी नहीं कांय। भृग पुरोहित ऋद्धि तज नीसर्या राजा रे धन लावण की हाय। सांभल ए दासी इ बातां राजाजी ने जुगतो नहीं ॥४॥ महलां से उतरी ओ राणी कमलावती आया है ठेठ हजूर। वचन सुणाया हो राजाजी ने आकरा जाणे पूरण चढियो सूर। सांभल महाराजा ब्राह्मण छांडि ऋद्धि मत आदरो। ५॥ उपज घणी ओ राजाजी आपका राज में आपका मोटा भाग। वमिया आहार की इच्छा कुण करे के कुत्ता ने काग। सांभल महाराजा० ॥६॥ काग कुत्ता सरीखा थें राजवी नही फरसवा जोग। भृगु पुरोहित ऋद्धि तज नीसर्या थे जाणों असी मारे भोग। सांभल महाराजा० ॥७॥ दान दियो धन किम लीजिये सांभलो महाराज। दान दियो पहला हाथ से अब लेता

नही आवे लाज ॥सांभल०॥८॥ सगला जगत को धन भेरो करियो घाल्यो थारां राज के मांय। तो पण तृष्णा ओ राजाजी पापणी, कदी य नहीं तृप्त थाय ॥सांभल.।६। सांभल ने इक्षुकार राजा बोलिया थें बोलो नी वचन विचार। के तो राणीजी थाने झोलो वाजियो के थांए पीधी मतवार। सांभल महाराणी राजा ने कडवा वचन न बोलिये ॥१०॥ नहीं तो राजाजी म्हाने झोलो वाजियो नही म्हांए पीधी मतवार। भृगु पुरोहित ऋद्धि तज नीसर्यो मैं वरजण आई भूपाल ।।सांभल महाराजा०॥११॥ सांभल ने इक्षुकार राजा बोलिया थें ऐसा वैरागण होय। आज तलक कोई दीसे नहीं थें बैठा म्हारा राज के माय सांभल महाराणी राजा ने कडवा वचन न बोलिये ॥१२॥ रतन जड़त को राजाजी पींजरो, सुओ जाणे सो ही फंद। हुं पण आपका राज में कदी य न पाऊं आनंद। सांभल म्हाराजा आज्ञा देओ तो संजम आदरूं ॥१३॥ स्नेह रूपियो तांतो तोड़ने आरंभ धन से रहूं दूर। हुं पण राज छोड़ी नीसरु थें पण चेतो भूपाल ॥सांभल महाराजा० ॥१४॥ दव तो लागो राजाजी वन मांही हरिण सुसलिया वरे माय। ऊंचा माला का पत्ती देखने मन मांहि हर्षित थाय ॥सांभल महाराजा० ॥१५॥ अणी दृष्टान्त राय मूरख थया, आप मुरझ रह्या मन मांय। पेला को दुख देखी चेत्या नहीं राग द्वेप की लग रही

जग में लाय ॥सांभल महाराजा०॥१६॥ भोगव्या काम-छांडि ने द्रव्ये भावे हल्का होय। वायु सरीखा पंखी नी पेरे विचरसां आपणी दाय ॥सांभल महा. आज्ञा.॥१७॥ मांस री बूंटी ओ पत्नी की चोंच मे नर वंसा पंखी पड़े आय। अहि समान भोग छंडी ने चारित्र लेसां चित लाय ॥सांभल॥१८॥ गृद्ध पंखी जिम जाणिये काम वधारे संसार। गरुड़ से सांप डरतो रहे त्यो पाप से शंकाय ॥सांभल० आज्ञा०।१६॥ हस्ती जिम सांकल तोड़ ने अपणे मन वन में सुखी थाय। इणी पेरे बधन तोड़ने चारित्र लेसां महाराय ॥सांभल महाराजा०॥२०॥ केई चाल्या ने केई चालसी केई चालण हार। रात दिवस वहे वाटड़ी चेतो क्यों नी महाराज। सांभल महाराजा राणी समभावे ओ राय ने ॥२१॥ कुडम्ब काजे कर्म वांध ने पडियो नरक मझार। एकलडो दुःख भोगवे कुण छुडावे महाराज॥सांभल.॥२२॥ परदेशी तो परदेश में किण से करे रे सनेह। आया कागद ने उठ चल्या, नहीं गिने आंधी ने मेह ॥साभल० ॥२३॥ व्हाला तो दुखिया थया, मिलिया बहुला लोक। देखता ही उठ चल्या, नही कोई राखण हार ।सांभल० ॥२४॥ व्हाला विना एक घड़ी सरतो नहीं रे लगार। जाने मुआ ने बहु वर्ष हुआ पाछा नहीं समाचार ॥सांभल० ॥२५॥ काची काया को कैसो गारवो, जतन करता ही जाय। उणियारो भूली गया

नहीं मिलिया पाछा आय ।।सांभल० ।।२६।। काई सूतो रे तू मानवी, सूतो मोह भर नींद । कालडो थारे वारणे ज्यों तोरण पर वींद ।।सांभल० ।।२७।। बड़ा बड़ा तो चल गया तू भी चलणहार । काई बूझे रे तू मानवी काई करे रे टँगार ।।सांभल०।।२८।। सांभलने इक्षुकार राजा चेतिया, छोड़िया है मोह जंजाल । कायर ने तजता दोहिलो वीर नर सारिया काज । सांभल महा-राजा छे हुँ जणा संयम आदरियो ।।२६।। छे ही अनु-क्रमे प्रतिबोधिया सांचो धर्म तप सार । टलिया जन्म मरण थकी दुखरो अंत कराय ।।सांभल०।।३०।। मोह निवारण जिन शासन मध्ये पूरब शुभ कर्म थाय । छे ही जणा थोड़ा काल में मुक्ति गया दुःख थी मुकाय ।।सांभल०।।३१।। राजा सहित राणी कमलावती भृगु पुरोहित जस्सा नार । ब्राह्मण का दोनों बालका शिव सुख पामसी घनसार ।।सांभल०।।३२।। इति ।।